# Very Rare and Powerful Mantras

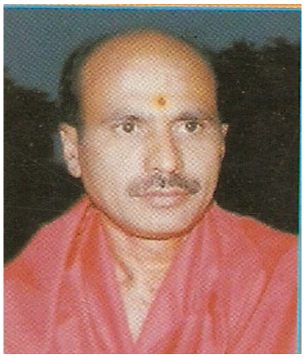

Shri Yogeshwaranand Ji
+919917325788, +919675778193
shaktisadhna@yahoo.com
www.anusthanokarehasya.com
www.baglamukhi.info

# दीक्षा पद्धति एवं गुरू-चयन

दीक्षा से तात्पर्य है- गुरू के द्वारा शिष्य को किसी देवी अथवा देवता का मंत्र प्रदान किया जाना। एक गुरू जब दीक्षा प्रदान करता है तब वह अपने शिष्य को प्रदान करता है- ज्ञान सिद्धि एंव शक्ति का दान। वह अपने शिष्य के अज्ञान, पाप और दारिद्रय का नाश कर देता है। दीक्षा तो एक तेजपुंज है, जिससे साधक के अन्दर निहित अज्ञान एवं अविद्या का नाश होता है, शिष्य के शरीर की असुद्धियां समाप्त हो जाती हैं।

बिना दीक्षा के शिष्य को मंत्र-जप करते हुए चाहे कितना ही समय क्यों न बीत जाये, उसकी सिद्धि का मार्ग प्रशस्त नहीं होता।

किसी भी साधक को योग्य गुरू के सानिध्य में साधना करनी चाहिए। गुरू का आत्मदान और शिष्य का आत्म समर्पण ही सिद्धि की प्रथम सीढी है। प्रत्येक मंत्र प्रत्येक व्यक्ति के लिए फलदायी नहीं होता है। यह तो गुरू ही जान सकता है कि किस शिष्य को कौन सा मंत्र दिया जाये ताकि वह अपने जीवन काल में सिद्धि प्राप्त कर सके।

अदीक्षित व्यक्ति के भक्तिपूर्वक सहस्र उपचारों द्वारा अर्चना करने पर भी देवगण उसकी पूजा ग्रहण नहीं करते, जिस कारण अदीक्षित व्यक्ति के समस्त कार्य व्यर्थ हो जाते हैं। यही कारण है कि अदीक्षित व्यक्ति पशु के समान माना जाता है। जो व्यक्ति पुस्तकों अथवा शास्त्रों में लिखे अनुसार मंत्र का जप करता है, उसे फल मिलना बहुत दूर की बात है।इसीलिए किसी भी महाविद्या को गुरू से यत्न पूर्वक ग्रहण करते हुए उसकी साधना करें।

कुलाचार सम्पन्न व्यक्ति को कुल गुरू कहा जाता है। कुछ लोग यह मानते है कि जो गुरू हमारी पीढ़ियों से चला आता है, वही कुलगुरू होता है। वास्तव में ऐसा नहीं हैं। कुलाचार से सम्पन्न व्यक्ति ही कुल गुरू होता है। उससे दीक्षा लेकर ही मंत्र जप करना चाहिए।

केवल गुरू ही उपयुक्त हो, इससे ही केवल काम नहीं चलता बल्कि शिष्य को भी उपयुक्त होना चाहिए। मंत्र की गति और कम्पन के साथ गुरू की आध्यात्मिक शक्ति शिष्य में संचारित होती है। जो गुरू है उसमें यह शक्ति-संचार की क्षमता होनी चाहिए। इसके साथ-साथ शिष्य में भी यह शक्ति-संचरण की क्षमता होनी चाहिए। यदि बीज उत्तम हो और भूमि उचित न हो तो सुन्दर वृक्ष की आशा नहीं की जा सकती है।

मात्र दर्शन-विज्ञान-चर्चा अथवा ग्रन्थों का पाठ करने से यह शक्ति संचार नहीं हो सकता। शिष्य के प्रति सम्वेदनावश गुरू की आध्यात्मिक शक्ति कम्पन विशिष्ट होकर शिष्य में संचारित होती है।

जो व्यक्ति अपने गुरू को केवल मनुष्य मानता है, अपने मंत्र को केवल शब्द मानता है और अपने इष्ट देवता को केवल पत्थर की शिला मानता है, ऐसा व्यक्ति केवल नरक का पात्र होता है। एक सद-शिष्य को अपने गुरू को पिता, माता, स्वामी, देवता मानकर उनकी पूजा करनी चाहिए, क्योंकि यदि भगवान रूठ जाते हैं तो गुरू शिष्य की सहायता कर सकता है, लेकिन यदि गुरू रूठ जाते हैं तो भगवान भी

सहायता नहीं कर सकते। इसलिए आवश्यक है कि मन, वचन, शरीर और कर्म से अपने गुरू की सेवा करें।

आपके पिता ने आपको यह शरीर प्रदान किया है, यह बात सही है लेकिन यदि ज्ञान ही नहीं है तो यह शरीर किसी काम का नहीं है। क्योंकि ज्ञान के अभाव में मनुष्य पशु सदृश होता है, फिर पशु तो पशु ही होता है, उसका क्या जीना और क्या मरना?

सदैव स्मरण रखें कि अपने मंत्र का त्याग करने वाले को असामयिक मृत्यु प्राप्त होती है, अपने गुरू का त्याग करने वाले को दरिद्रता की प्राप्ति होती है, जबकि गुरू और मंत्र त्यागी को रौरव नरक की प्राप्ति होती है। गुरूदेव के निकट होते हुए भी जो किसी अन्य देवता की पूजा करता है, वह घोरतर नरकगामी होता है। उसके द्वारा की गयी समस्त पूजा निष्फल होती है।

आधुनिक युग में ऐसे अनेकानेक लोग हैं जो बुद्धि की मलीनता के कारण अथवा शिक्षा के दोष से, या फिर सांसारिक दोष के कारण गुरू की महत्ता को स्वीकार नहीं करते हैं। उनका यह भी मानना है कि दीक्षा हिन्दुओं का एक संस्कार मात्र है। ऐसे लोगों को यह भी समझना चाहिए कि ऐसे ही संस्कारों को मानकर हिन्दु सम्प्रदायों में जितने लोगों ने श्रेष्ठत्व प्राप्त किया है, क्या किसी अन्य सम्प्रदाय में इतनी अधिक मात्रा में उत्कृष्ट व्यक्तित्व के लोग हुए हैं?

दीक्षा एक तेजपुंज है, जिससे साधक के मन में निहित अज्ञान एवं अविद्या का नाश होता है, उसके शरीर की अशुद्धियां समाप्त हो जाती हैं। इसमें गुरू के द्वारा ज्ञान संचार एवं आत्मदान की प्रक्रिया होती है।

सामान्य रूप से दीक्षा के तीन भेद होते हैं १. शाक्ती २. शाम्भवी एवं ३. मान्त्री।

शाक्ती दीक्षा में कुण्डलिनी जाग्रत कर उसे ब्रह्मनाड़ी में से होकर सहस्रार में स्थित परम शिव में मिला लेने की प्रक्रिया की जाती है।

श्री गुरूदेव अपनी प्रसन्नता के क्षणों में दृष्टिपात अथवा स्पर्श से शिष्य को स्वयं जैसा ही बना देने की प्रक्रिया को शाम्भवी दीक्षा कहा जाता है।

मंत्रोपदेश के द्वारा गुरूदेव द्वारा शिष्य को जो ज्ञान दिया जाता है, उसे मांत्री दीक्षा कहा जाता है।

इन तीनों के अतिरिक्त दीक्षा के अनेक भेद शास्त्रों में निहित हैं परन्तु उनका उल्लेख करना आवश्यक प्रतीत नहीं होता है।

उपरोक्त परिपेक्ष्य में एक मात्र इतना कहना ही पर्याप्त है कि साधक को योग्य गुरू के सानिध्य में ही साधना करनी चाहिए। गुरू का आत्मदान और शिष्य का आत्मसमर्पण- इन दो धाराओं के मिलन से ही सिद्धि की प्राप्ति होती है। बिना गुरू के जीवन व्यर्थ है। जो साधक गुरू के दिये वचनों का पालन करता है, गुरू सेवा में लीन रहता है, वह निश्चय ही जीवन में सफलता प्राप्त करता है।

## पाठ विधान

प्रतिपदा अर्थात् नवरात्र के प्रथम दिवस से चण्डी-पाठ अर्थात् दुर्गा सप्तशती का पाठ आरम्भ किया जाता है। कुछ साधक प्रतिदिन सम्पूर्ण दुर्गा सप्तशती का पाठ करते हैं, लेकिन कुछ साधक समयाभाव के कारण अथवा अन्य किन्हीं कारणों से सम्पूर्ण दुर्गा सप्तशती का पाठ नहीं कर पाते हैं और वे नवरात्र के समापन तक दुर्गा सप्तशती पूर्ण करते है। ऐसे व्यक्ति, जो सम्पूर्ण नवरात्र में केवल दुर्गा सप्तशती का मात्र एक ही पाठ करते हों, उन्हें चाहिए कि वे निम्नानुसार अपने पाठ करें-

प्रतिपदा - अध्याय एक का पाठ करें।
द्वितीया - अध्याय दो व तीन का पाठ करें।
तृतीया - अध्याय चार का पाठ करें। इस दिन सौभाग्य सुन्दरी व्रत रखें।
चतुर्थी - अध्याय पांच, छः, सात व आठ का पाठ करें।
पंचमी - अध्याय नौ व दस का पाठ करके लक्ष्मी-पूजन करें।

छठ - अध्याय ग्यारह का पाठ करें।
सप्तमी - अध्याय बारह व तेरह का पाठ करें। इस दिन महानिशा पूजन भी करें।
अष्टमी - इस दिन महा अष्टमी का व्रत रखें।
नवमी - महा नवमी व्रत, हवन । इस दिन श्री राम नवमी का व्रत भी रखाा जाता है। जो साधक भगवती तारा के उपासक हैं, उनके लिए तो यह दिवस विशिष्ट स्थान रखता है, क्योंकि उस दिन माता तारा की जयन्ती मनायी जाती है।

( अपनी कुल-परम्परा अथवा अपने संकल्प के अनुसार साधक को अष्टमी अथवा नवमी को अपने द्वारा किये गये पाठों का दशांस हवन करके, कन्या-पूजन करना चाहिए) । पारण दशमी में प्रातःकाल करें।

भगवती दुर्गा का ध्यान हम चतुर्भुजी, अष्टभुजी एवं दशभुजी के रूप में करते हैं। नौ दिन में भगवती के अलग-अलग स्वरूपों का ध्यान एवं जप किया जाता है। यदि साधक के पास समयाभाव हो तो वह नीचे लिखे ध्यान एवं प्रणाम मंत्रों का जप कर सकता है। जो सप्तशती का पाठ करते हैं, वे भी इन ध्यान एवं प्रणाम मंत्रों का जप कर सकते हैं।

सर्वप्रथम मैं यंहा चतुर्भुजी दुर्गा का ध्यान स्पष्ट कर रहा हूँः-

सिंहस्था शशी-शेखरा मरकत-प्रख्यैश्चतुर्भिर्भुजैः।
शंख चक्र-धनुः - शरांश्च दधती नेत्रैस्त्रिभिः शोभिता।।
आमुक्तांगद-हार-कंकण-रणत्-कांची-क्वणन्-नूपुरा।
दुर्गा दुर्गति-हारिणी भवतु नो रत्नोल्लसत्-कुण्डला।।
।। श्री चतुर्भुजा-दुर्गायै नमः।।

श्री अष्टभुजी दुर्गा

विद्युद्-दाम-सम-प्रभां मृग-पति-स्कन्ध-स्थितां भीषणाम्।
कन्याभिः करवाल-खेट-विलसद्-हस्ताभिरासेविताम्।।
हस्तैश्चक्र-गदाऽसि-खेट-विशिखांश्चापं गुणं तर्जनीम्।
विभ्राणामनलात्मिकां शशि-धरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे।।
।। श्री अष्टभुजी दुर्गायै नमः।।

श्री दश भुजी दुर्गा

कात्यायन्याः प्रवक्ष्यामि, मूर्तिं दश-भुजां तथा।
त्रयाणामपि देवानामनुकारण-कारिणीम्।।
जटा-जूट-समायुक्तामर्धेन्दु-कृत-शेखराम्।
लोचन-त्रय-संयुक्तां, पद्मेन्दु-सदृशाननाम्।।
अतसी-पुष्प-वर्णाभां सुप्रतिष्ठां प्रलोचनाम्।
नवयौवन सम्पन्नां, सर्वाभरण -भूषिताम्।।
सुचारू-दशनां तद्-वत् पीनोन्नत-पयोधराम्।
त्रिभंग-स्थान-सस्थानां, महिषासुर-मर्दिनीम्।।
त्रिशूलं दक्षिणे दद्यात्, खड्गं चक्रं क्रमादधः।
तीक्ष्ण-वाणं तथा शक्तिं, वामतोऽपि निबोधत।।
खेटकं पूर्ण-चापं च, पाशमंकुशमूर्ध्वतः।
घण्टां वा परशुं वाऽपि, वामतः सन्निवेशयेत्।।
अधस्तान्महिषं तद्-वद्, वि-शिरस्कं प्रदर्शयेत्।
शिरच्छेतोद्भवं तद्-वद्, दानवं खड्ग-पाणिनम्।।
हृदि शूलेन निर्भिन्नं, निर्यदन्त्र-विभूषितम्।
रक्त-रक्ती-कृतांगश्च, रक्त विस्फारितेक्षणम्।।
वेष्टितं नाग-पाशेन, भृकुटि-भीषणाननम्।
स-पाश-वाम-हस्तेन, धृत-केशं च दुर्गया।।

।। श्री दशभुजी दुर्गायै नमः।।

इसके उपरान्त नवदुर्गाओं के ध्यान तथा प्रणाम मंत्र का उल्लेख किया जा रहा हैः-

वन्दे वांछित -लाभाय, चन्द्रार्ध-कृत-शेखरां।
वृषारूढां शूल-धरां, शैल-पुत्रीं यशस्विनीम्।।
।। श्री शैलपुत्री दुर्गायै नमः।।

दधाना कर-पद्माभ्यामक्ष-माला-कमण्डलू।
देवी प्रसीदतु मयि, ब्रह्म-चारिण्यनुत्तमा।।
।। श्री ब्रह्म-चारिणी-दुर्गायै नमः।।

पिण्डज-प्रवरारूढा, चण्ड-कोपास्त्रकैर्युता ।
प्रसादं तनुते मह्य, चन्द्र-घण्टेति विश्रुता।।
।। श्री चन्द्रघण्टा दुर्गायै नमः।।

सुरा-सम्पूर्ण-कलशं, रूधिराप्लुतमेव च।
दधाना हस्त-पद्माभ्यां, कूष्माण्डा शुभदाऽस्तु मे ।।
।। श्री कूष्माण्डा दुर्गायै नमः।।

सिंहासन-गता नित्यं, पद्मांचित-कर-द्वया।
शुभदाऽस्तु सदा देवी, स्कन्द-माता-यशस्विनी ।।
।। श्री स्कन्द-माता-दुर्गायै नमः।।

चन्द्र-हासोज्ज्वल-करा, शार्दूल-वर-वाहना ।
कात्यायनी शुभं दयाद्, देवी दानव-घातिनी ।।
।। श्री कात्यायनी-दुर्गायै नमः।।

एक-वेणी जपाकर्ण-पूरा नग्ना खरास्थिता।

लम्बोष्ठी कर्णिका-कर्णी, तैलाभ्यक्त-शरीरिणी ।।
वाम-पादोल्लसल्लोह-लता-कण्टक-भूषणा।
वर्धन्-मूर्धं-ध्वजा कृष्णा, काल-रात्रिर्भ**यंकरी** ।।
**।। श्री कालरात्रि-दुर्गायै नमः।।**

श्वेते वृषे समारूढा, श्वेताम्बर-धरा-शुचिः ।
महागौरी शुभं दद्यान्, महा-देव-प्रमोददा ।।
।। श्री महागौरी-दुर्गायै नमः।।

सिद्ध - गंधर्व - यक्षाद्यैरसुरैरमरैरपि ।
सेव्य-माना सदा भूयात्, सिद्धिदा सिद्धि-दायिनी।।
।। श्री सिद्धिदा-दुर्गायै नमः।।

## महाकाल भैरव मंत्र

इस मंत्र का प्रयोग अपने बैरियों के नाश के लिए किया जाता है। नाश कई प्रकार से किया जाता है, जिसके विधान भी अलग-अलग हैं।सामान्य विधान इस प्रकार है-

विनियोगः-

ॐ अस्य श्री महाकाल भैरव मंत्रस्य विराट छंदः, श्री महाकाल देवता हूं बीजं ह्रीं शक्तिः, स्वाहा कीलकं श्री महाकाल भैरव प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।।

ह्रीं से षडंग न्यास करें ।

ध्यान

कोटि-कालानला-भासं चतुर्भुजं त्रिलोचनम्।
श्मशानाष्टक-मध्यस्थं मुंडाष्टक विभूषितम्।।

पंच-प्रेत-स्थितं देवं त्रिशूलं डमरूं तथा ।
खड्ग च खर्परं चैव वाम दक्षिण योगतः ।।
विभ्रतं सुन्दरं देहं श्मशान-भस्म भूषितम्।
नानाशवै क्रीडमानं कालिका-हृदय-स्थितम्।।
लालयन्तं रतासंक्तं घोर-चुम्बन तत्परम्।
गृध-गोमायु संयुक्तं फेरवी-गण-संयुतम्।।
जटापटल शोभाढ्यं सर्व शून्यालय-स्थितम्।
सर्व शून्यं मुण्ड-भूषं प्रसन्न-वदनं शिवम्।।

मंत्र

ॐ नमो भगवते महाकाल भैरवाय कालाग्नि-तेजसे अमुकं **(शत्रु का नाम)** मे शत्रुं मारय-मारय पोथय-पोथय हुं फट् स्वाहा।।

**प्रतिदिन एक हजार की संख्या में जप करने से २६ दिन में शत्रु का निग्रह होता है।**

------------

ॐ समाप्त ॐ

## श्री विपरीत प्रत्यंगिरा (सामान्य विधान)

यदि शत्रु निरंतर आप पर अभिचारिक कर्म कर रहा हो, निरंतर किसी न किसी रूप में आपको आर्थिक, मानसिक, सामाजिक, शारिरिक क्षति पहुंचा रहा हो और आपके भविष्य को चौपट कर रहा हो, तब भद्रकाली के इस स्वरूप, अर्थात विपरीत प्रत्यंगिरा का आश्रय लेना सर्वोत्तम उपाय है। जिस दिन से साधक इस महाविधा का प्रयोग आरम्भ करता है, उसी दिन से ही भगवती भद्र काली उसकी सुरक्षा करने लगती हैं और शत्रु द्वारा किये गये अभिचाारिक कर्म दोगुने वेग

से उसी पर लौटकर अपना प्रहार करते हैं। इसके अतिरिक्त राजकीय बाधा, अरिष्ट ग्रह बाधा निवारण में तथा अपना खोया हुआ पद, आस्तित्व ओर गरिमा प्राप्ति में भी यह विद्या सर्वोत्तम मानी जाती है। साधक की आयु, यश तथा तेज की वृद्धि करने में भी यह विद्या बहुत उत्तम मानी जाती है।

## ध्यान

खड्गं कपालं डमरू त्रिशूलं,
सम्बिभ्रती चन्द्रकला वतंसा।
पिंगोर्ध्व-केशो-असित- भीम-दंष्ट्रा,
भूयाद् विभूत्यै मम भद्रकाली।।

अर्थः- **खडग, कपाल, डमरू तथा त्रिशूल धारण करने वाली देवी भद्र काली, जिनके मस्तक में चंद्रकला सुशोभित है, जिनके केश पीले तथा उपर को उठे हुए हैं और जिनके दांत बहुत ही भयंकर तथा असित रंग के हैं, वे मेरा कल्याण करें।**

## मंत्र-विधान

विनियोगः- **अपने दायें हाथ में जल लेकर निम्नलिखित विनियोग पढ़ें :-**

ॐ अस्य श्री विपरीत-प्रत्यंगिरा मंत्रस्य भैरव-ऋषिः, अनुष्टुप छन्दः, श्री विपरीत प्रत्यंगिरा देवता, ममाभिष्ट सिद्धयर्थे जपे पाठे च विनियोगः।

**विनियोग पढ़कर हाथ में लिया हुआ जल भूमि पर छोड़ दें। इसके बाद न्यास करें,यथा-**

**करन्यासः-**

**ऐं अंगुष्ठाभ्यां नमः। बोलकर अपने दोनें अगूंठों का स्पर्श करें।**
**ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। बोलकर दोनों अंगूठों की बगलवाली उंगली का स्पर्श करें।**
**ॐ श्री मध्यमाभ्यां नमः।.......बीच की उंगली को छुएं।**
ॐ प्रत्यंगिरे अनामिकाभ्यां नमः।... **रिंग फिंगर को छुएं।**
ॐ मां रक्ष-रक्ष कनिष्ठिकाभ्यां नमः।..... **सबसे छोटी उंगली को छुएं।**

ॐ मम शत्रून भंजय-भंजय करतल-कर-पृष्ठाभ्यां नमः। **से पहले दोनों हाथों की हथेलियों को आपस में मिलाएं फिर उनके पिछले भागों का स्पर्श करें।**

**इसी प्रकार हृदय आदि न्यास करें-**

**ॐ ऐं हृदयाय नमः। बोलकर हृदय का स्पर्श करें।**
**ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा।....सिर का स्पर्श करें।**
**ॐ श्री शिखायै वषट्। ...शिखा .........।**
**ॐ प्रत्यंगिरे कवचाय हुं।...दोनों हाथों के क्रास वाईज कंधों का स्पर्श करें।**
**ॐ मां रक्ष-रक्ष नेत्र-त्रयाय वौषट्।....नेत्रों का स्पर्श करें।**
**ॐ मम शत्रून भंजय-भंजय अस्त्राय फट्।...दाहिने हाथ की तर्जनी और मध्यमा उंगली से बायें हाथ की हथेली पर तीन बार ताली बजायें।**

**दिग्बंधः- (अपनी देह की रक्षा हेतु दिशाओं का बंधन करना होता है। इसके लिए निम्नलिखित मंत्र पढ़ते हुए दशों दिशाओं में चुटकी बजांए।)**
**मंत्रः- ॐ भूर्भुव स्वः ।**
**इसके उपरान्त भगवती प्रत्यंगिरा के मूल मंत्र का जप करें।**

मूल मंत्रः- "ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रत्यंगिरे मां रक्ष-रक्ष मम शत्रून् भंजय-भंजय फे हुं फट् स्वाहा।"

**एक बार पुनः भगवती का ध्यान करके मंत्र जप करना चाहिए। यदि किसी विशिष्ट प्रयोजन से इस मंत्र का जप करना चाहते हैं तो आप मुझसे सम्पर्क कर सकते हैं।**

**प्रत्यंगिरा माला-मंत्र**

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ कुं कुं कुं मां सां खां चां लां क्षां ॐ ह्रीं ह्रीं ॐ ॐ ह्रीं वां धां मां सां रक्षां कुरू। ॐ ह्रीं ह्रीं ॐ सः हुं ॐ क्षौं वां लां धां मां सां रक्षां कुरू। ॐ ॐ हुं प्लुं रक्षां कुरू।

ॐ नमो विपरीत प्रत्यांगिरायै विद्या-राज्ञि त्रैलोक्य-वशंकरि सर्व-पीड़ा-अपहारिणि सर्वापन-नाशिनि सर्व-मांगल्य-मांगल्ये शिवे सर्वार्थ-साधिनि मोदिनि सर्व-शास्त्राणां भेदिनि क्षोभिणि तथा परमंत्र-तंत्र-यंत्र-विष-चूर्ण-सर्व

प्रयोगादीनन्येषां निर्वर्तयित्वा यत्कृतं तन्मे-अस्तु कलिपातिनि सर्वहिंसा मा कारयति, अनुमोदयति मनसा वाचा कर्मणा ये देवा-असुर-राक्षस-आस्ति-र्यगन्योनि-सर्व-हिंसका विरूपेकं कुर्वन्ति मम मंत्र-तंत्र-यंत्र-विष-चूर्ण-सर्व-प्रयोगा-दीनात्म-हस्तेन यः करोति करिष्यति कारयिष्यति तान् सर्वान्येषां निवर्तयित्वा पातय कारय मस्तके स्वाहा।'

\-\-\-\-\-\-\-\-\-\-\-\-\-\-\-\-\-\-

नव महाविद्याओं के मंत्र (शत्रु पक्ष के संहार हेतु)

- ॐ सन्तापिनि स्फ्रें स्फ्रें मम सपरिवारकस्य शत्रून रौद्रय-२ हुं फट् स्वाहा।
- ॐ संहारिणि स्फ्रें स्फ्रें मम सपरिवारकस्य शत्रून संहारय-२ हुं फट् स्वाहा।
- ॐ रौद्रि स्फ्रें स्फ्रें मम सपरिवारकस्य शत्रून रौद्रय-२ हुं फट् स्वाहा।
- ॐ भ्रामिणि स्फ्रें-२ मम सपरिवारकस्य शत्रून भ्रामय-२ हुं फट् स्वाहा।
- ॐ जृम्भिणि स्फ्रें-२ मम सपरिवारकस्य शत्रून् जृम्भय-२ हुं फट् स्वाहा।
- ॐ द्राविणि स्फ्रें-२ मम सपरिवारकस्य शत्रून द्रावय-२ हुं फट् स्वाहा।
- ॐ क्षोभिणि स्फ्रें-२ मम सपरिवारकस्य शत्रून क्षोभय-२ हुं फट् स्वाहा।

- ॐ मोहिनि स्फ्रें-२ मम सपरिवारकस्य शत्रून मोहय-२ हुं फट् स्वाहा।
- ॐ स्तम्भिनि स्फ्रें-२ मम सपरिवारकस्य शत्रून स्तम्भय-२ हुं फट् स्वाहा।

..............................................................

Meditation of Maa vipreet Pratyangira:-

Khadgam kapalam damarum trishulam,
sambibhrati chandrakalavatansa.
pingodharva kesho ashit- bheem danshtra,
bhuyad vibhutyai mam bhadrakali.

Meaning:- The goddess Bhadrakali, who has sword, Kapala, damaru and Trishula in her hands, whose forehead is adorned with half moon, whose hair are yellow and in standing position, and whose teeth are yellow colored and seem very dreadful, that goddess may do my welfare.

## Method of vipreet Pratyangira mantra.

At first do Viniyoga taking water in right palm :- Om asya shri vipareet pratyangira mantrasya Bhairav Rishi, anushtup chhandah, shri vipreet pratyangira devta, mamabhisht sidhyarthe jape patthe cha viniyogah.

leave the water on land and later on do Karanyasa:

Aim Angushtthaabhyam namah. (Touch the thumbs)

Om hreem tarjanibhyam namah. (toch the index fingers)

Om Shreem Madhyamabhyam namah.(touch both middle fingers).

Om Pratyangire anamikabhyam namah.(toch bot ring fingers).

Om mam raksha raksh kanishtthikabhyam namah (touch both little fingers with each other).
Om mam shatrun bhanjay bhanjay kartal-kar-prashtthabhyam namah.( At first touch your palm with each other and later on touch their back part.)

After doing kar-nyasa one should do Hraday-nyasa:-
Om aim hradayay namah. (touch you hear with the help of thumb and ring finger, which is called tatva mudra).
Om Hreem shirse svaha (Head)
Om Shreem shikhaye vashata. (shikha)
Om pratyagire kavchaye hum. (touch your sholders in crossing way)
Om mam raksha raksha netra-trayaye- vaushat (touch your three eyes. Third eye is understood on the mid of forehead)
Om mam shatrun bhanjay bhanjay astraye phat. ( rub you middle finger on thumb (Chutki) three times around your head and then clap on left palm three times with the help of index and middle fingers)

Later on reading the mantra—" Om Bhoor bhuva svah" make chutaki in every direction.

Doing all these ceremonies recite the below mantra----
"Om Aim Hreem Shreem Pratyangiray mam raksha raksh mam shatroon bhanjay bhanjay phay hum phat svaha."

## Mala Mantra

Om Om Om Om Om kum kum kum mam kam kham cham lam ksham om hreem hreem o mom hreem vam dham mam sam raksham kuru. Om hreem hreem om shah hum om

kshaum vam lam dham mam sam raksham kuru. Om om hum plum raksham kuru.

Om namo vipreet- pratyangirayai vidhya-ragyi trailokya vashankari tushti-pushti-kari sarva-pida-apharini sarva-pannashini sarva-mangal-mangalyay shivay sarvarth-sadhini modini sarva-shashtranam bhedini kshobhini tatha par-mantra-tantra-yantra-vish-churn-sarva-pryogadinanyesham nirvartayitva yatkratam tanme-astu kali-patini sarva-hinsa ma karyati, anumodayati mansa vaccha karmana ye deva-asur-rakshasa-stiryag-yoni-sarva-hinsaka virupekam kurvanti mam mantra-tantra-yantra-vish-churna-sarva-prayoga-dinatm-hasten yah karoti-karishyati-kaarishyati taan sarvanyeshan nivart-yitva paatay kaaray mastake svaha.

## SARVA TANTRA NIVARINI

Shri maha Kali vipreet pratyangira stotram.

At first do viniyoga:-

Om Om Om asya shri pratyangira mantrasya shri Angira Rishih, Anushtup cchandah, shri Pratyangira devata, hoom beejam, hreem shaktih, kreem keelakam, mamabhishta siddhaye patthe viniyogah.

## ANG-NYASA

**Shri Angira Rishaye namah shirsi.**
**Anushtup cchandse namah mukhe.**
**Shri Pratyangira devataaye namah hradi.**
**Hoom beejaaye namah guhye.**
**Hreem shaktaye namah paadayoh.**
**Kreem keelkaaye namah sarvange.**

**Mamabhisht siddhaye paatthe cha jape viniyogaaye namah anjalaun.**

## Meditation

Bhujaish-chaturbhir-dhrat teekshan baan,
dhanurvara-bhishcha shavanghri yugma.
Raktaambara rakta tanas-trinetra,
pratyangireyam pranatam punatu.

## Stotram

**Om namah sahastra suryekshanaaye shri kantthanadi rupaye purushaye puru hutaye aim maha sukhaye vyapine maheshvaraaye jagat srishti karine eeshanaye sarva vyapine maha ghorati ghoraye om om om prabhaavam darshaya darshaya.**

**Om Om Om hil hil, Om Om Om vidhyut-jivhe bandh bandh, math math, pramath pramath vidhvansaya vidhvansaya, gras gras piv piv, nashay nashay, trasay trasay vidaray vidaray mam shatrun khahi-khahi, maray maray, mam saparivaram raksh raksh, kari kumbh-stani sarvopadravebhyah.**

**Om maha meghaugh rashi samvartak vidhyudant kapardini divvy kankambho-ruhavikach mala dharini, parmeshwar-priye! cchindhi-cchindhi, vidravaya vidravay, Devi! pishach nagasur garud kinnar vidhyadhar gandharv yaksh rakshas lokpalan stambhay stambhay, keelay keelay, ghatay ghatay vishvamurti maha tejase Om hram sah mam shatrunam vidhyam stambhaya stambhaya Om hoom sah mam shatrunam mukham**

**stambhay stambhay, Om hoom sah mam shatrunam hastau stambhay stambhay, Om hoom sah mam shatrunam padau stambhay stambhay Om hoom sah mam shatrunam hastau stambhay stambhay, Om hoom sah mam shatrunam padau stambhay stambhay Om hoom sah mam shatrunam kutumb mukhani stambhay stambhay, sthanam keelay keelay, gramam keelay keelay mandalam keelay keelay**

**desham keelay keelay sarv siddhi maha-bhagay! Dharkasya saparivarasya shantim kuru kuru, phat svaha, Om Om Om Om Om, am am am am am, hum hum hum hum hum, kham kham kham kham kham, phat svaha. Jai pratyangiray! Dharkasya saparivarasy mam raksham kuru kuru, Om hum sah jai jai svaha.**

**Om Aim Hreem Shreem Brahmani! siro raksh raksh, hum svaha.**

**Om Aim Hreem Shreem Kaumari mam vaktram raksh raksh, hum svaha.**

**Om Aim Hreem Shreem Vaishanavi mam kanttham raksh raksh, hum svaha.**

**Om Aim Hreem Shreem Naarsinghi mamodaram raksh raksh, hum svaha.**

**Om Aim Hreem Shreem Indrani! mam naabhim raksh raksh, hum svaha.**

**Om Aim Hreem Shreem Chamunday! mam guhyam raksh raksh, hum svaha.**

**Om namo bhagavati, ucchisht chandaalini, trishul, vajra-ankush dharay maans bhakshini, khatvang**

**kapaal vajrasi dhaarini! dah dah, dham dham, sarva dushtaan gras gras Om Aim Hreem Shreem phat svaha.**

**Om danstraa karaali, mam mantra-tantra-vrandaadeen vish, shastra-abhicharkebhyo raksh raksh svaha.**

**Istambhini mohini chaiv kshobhini draavini tatha,**
**jrambhini traasini raudri tatha sanhaarini cha.**
**shaktayah kram yogen shatru pakshay niyojitah,**
**dhaaritah saadhakendren sarv shatru nivarini.**
**Om stambhini! isphrayn mam shatroon stambhay stambhay svaha.**
**Om Mohini ! Isphrayn mam shatroon mohaya mohaya svaha.**
**Om Kshobhini ! Isphrayn mam shatroon kshobhay-kshobhay svaha.**
**Om Dravini ! Isphrayn mam shatroon draavay-draavay svaha.**
**Om Jrambhini ! Isphrayn mam shatroon jrambhay-jrambhay svaha.**
**Om Trasini ! Isphrayn mam shatroon traasay-traasay svaha.**
**Om Raudri ! Isphrayn mam shatroon santaapay-santaapay svaha.**
**Om Sanhaarini ! Isphrayn mam shatroon sanhaaray-sanhaaray svaha.**

**( At first recite this stotram 108 times within 7 days).**

श्री प्रत्यंगिरा हवन विधि

ॐ प्राणाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा से पांच आहुतियां देकर मूल मंत्र से आहुतियां प्रदान करें। उसके उपरान्त ईशान कोण में बटुक भैरव, अग्नि कोण में योगिनियों, नैऋत्य में क्षेत्रपाल, वायव्य कोण में गणपति, तदोपरान्त छाग बलि प्रदान करनी चाहिए। हवन सामग्री कामना के अनुसार प्रयोग करें ।

## श्री प्रत्यंगिरा कवच

देव्युवाचः

भगवन् सर्व धर्मज्ञ सर्वशास्त्रार्थ पारग ।
देव्याः प्रत्यंगिरायाश्च कवचं यत्प्रकाशित।।१।।
भैरव-उवाचः
श्रृणु देवि प्रवक्ष्यामि कवचं परमाद्भुतम् ।।२।।
सर्वार्थ साधनं नाम त्रैलोक्ये चातिदुर्लभम् ।
सर्वसिद्धिमयं देवि सर्वेश्वर्य-प्रदायकम् ।।३।।
पठनाच्छ्रवणान्मर्त्यः त्रैलोक्यैश्वभाग्भवेत्।
सर्वार्थ-साधकस्यास्य कवचस्य ऋषिः शिवः।।४।।
छंदोविराट्परा शक्ति-र्जगद्धात्री च देवता ।
धर्मार्थ-काम-मोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्त्तितः।।५।।

## पाठ

प्रणवं मे शिरः पातु वाग्भवं च ललाटकम्।
ह्रीं पातु दक्ष नेत्रं में लक्ष्मीर्वामं सुरेश्वरी।।६।।
प्रत्यंगिरा दक्ष कर्णे वामे कामेश्वरी तथा।
लक्ष्मी प्राणं सदा पातु बंधनं पातु केशवः ।।७।।
गौरी तु रसनां पातु, कंठं पातु महेश्वरः।
स्कंधदेशं रतिः पातु, भुजौ तु मकरध्वजः।।८।।
शंखं निधिकरः पातु वक्षः पद्मनिधिस्तथा।
ब्राह्मी मध्यं सदा पातु, नाभिं पातु महेश्वरी।।९।।
कौमारी पृष्ठदेशं तु, गुह्यं रक्षतु वैष्णवी।
वाराही च कटि पातु, चैंद्री पातु पद द्वयम्।।१०।।
भार्यां रक्षतु चामुण्डा, लक्ष्मी रक्षतु पुत्रकान्।
इंद्रः पूर्वे सदा पातु, आग्नेय्यां-अग्नि देवता।।११।।

याम्ये यमः सदा पातु, नैर्ऋत्यां निर्ऋतिस्तथा।
पश्चिमे वरूणः पातु, वायव्यां वायु देवता।।१२।।
सौम्यां सोमः सदा पातु, चैशान्यामीश्वरो विभुः।
उर्ध्वे प्रजापतिः पातु, ह्यध्श्च-अनंत देवता।।१३।।
राजद्वारे श्मशाने च अरण्ये प्रांतरे तथा।
जले स्थले चांतरिक्षे, शत्रुणां निवहे तथा।।१४।।
एताभिः सहिता देवी, चतुर्बीजा महेश्वरी।
प्रत्यंगिरा महाशक्तिः सर्वत्र मां सदावतु।।१५।।
इति ते कथितं देवि, सारात्सारं परात्परम्।
सर्वार्थ साधनं नाम कवचं परमाद्भुतम्।।१६।।

फलश्रुति

अस्यापि पठनात्सद्यः कुबेरोऽपि धनेश्वरः।
इंद्रद्याः सकला देवाधारणात्पठनाद्यतः ।।१७।।
सर्वसिद्धीश्वराः संतः सर्वेश्वर्यम-वाप्तुयुः।
पुष्पांजल्यष्टकं दत्वा मूलेनैव सकृत्पठेत्।।१८।।
संवत्सराकृतायास्तु पूजायाः फलमाप्नुयात्।
प्रीतिमन्यान्तः कृत्वा कमला निश्चला गृहे।।१९।।
वाणी च निवसेद्वक्त्रे सत्यं सत्यं न संशयः।
यो धारयति पुण्यात्मासर्वार्थ-साधनाभिधम्।।२०।।
कवचं परमं पुण्यं सोऽपि पुण्यवतां वरः।
सर्वैश्वर्ययुतो भूत्वा त्रैलोक्य विजयी भवेत्।।२१।।
पुरूषो दक्षिणे बाहौ नारी वामभुजे तथा।
बहुपुत्रवती भूत्वा धन्यापि लभते सुतम्।।२२।।
ब्रह्मास्त्रादीनि शस्त्राणि नैवकृन्तन्तितत्तनुम्।
एतत्कवचमज्ञात्वा यो जपेत्परमेश्वरीं।।२३।।
दारिद्रयं परमं प्राप्य सोऽचिरान्मृत्युमाप्नुयात्।

..........

## मातृका-सम्पुटित विपरीत प्रत्यंगिरा स्तोत्र

**किसी भी प्रकार के शत्रु के निवारणार्थ साधक को निम्नलिखित स्तोत्र का प्रतिदिन दस बार पाठ करना चाहिए।**

"ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ विपरीत परब्रह्म महाप्रत्यंगिरे ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं मम सपरिवारकस्य सर्वेभ्यः सर्वतः सर्वदा रक्षां कुरू-कुरू मरण-भयापन-पापनय-त्रिजगतां पररूप-वितायुर्मे सपरिवारकाय देहि-देहि दापय-दापय साधकत्वं प्रभुत्वं च सततं देहि-देहि विश्व रूपे धनं पुत्रान् देहि-देहि मां सपरिवारकस्य मां पश्येत्तु देहिनः सर्वे हिंसकाः प्रलयं यान्तु मम सपरिवारकस्य शत्रुणां बल-बुद्धि-हानिं कुरू-कुरू तान स-सहायान् स्वेष्ट देवतान् संहारय संहारय स्वाचार-मपनया-अपनय ब्रह्मास्त्रादिनि व्यर्थी कुरू हूं हूं स्फ्रें स्फ्रें ठः ठः फट् फट् ॐ। "

.....................

# श्री काली प्रत्यंगिरा स्तोत्र

इस स्तोत्र की रचना श्री अंगिरा ऋषि ने मारण हेतु की थी। इसका प्रयोग कभी निष्फल नहीं होता। अच्छी संख्या में जप हो जाने पर इसे लिखकर दायीं भुजा अथवा कण्ठ में धारण करने से शत्रुओं का नाश होता है। समस्त अनिष्ट ग्रहों की शांति, दुष्टों का मर्दन करने तथा समस्त पापों का नाश करने में यह स्तोत्र अति उत्तम माना जाता है।

कृष्ण पक्ष की अष्टमी से लेकर अमावस्या की रात्रि तक यदि प्रतिदिन इसके एक हजार की सख्ंया में पाठ किये जाये तो सहज ही शत्रु पक्ष का विलय हो जाता है।

विनियोग :- अस्य श्री प्रत्यंगिरा मन्त्रस्य श्री अंगिरा ऋषिः, अनुष्टुप छंदः, श्री प्रत्यंगिरा देवता, हूं बीजं, ह्रीं शक्तिः, क्रीं कीलकं ममाभीष्ट सिद्धये पाठे विनियोगः।

अंगन्यासः- श्री अंगिरा ऋषये नमः शिरसि।
अनुष्टुप छन्दसे नमः मुखे ।
श्री प्रत्यंगिरा देवतायै नमः हृदि।
हूं बीजाय नमः गुह्ये ।
ह्रीं शक्तये नमः पादयोः।
क्रीं कीलकाय नमः सर्वांगे। ममाभीष्ट सिद्धये पाठे विनियोगाय नमः अंजलौ।

## ध्यान

भुजैश्-चतुर्भि-र्धृत तीक्ष्ण बाण,
धनुर्वरा-भीश्च शवांघ्रि युग्मा।
रक्ताम्बरा रक्त तनस्त्रि-नेत्रा,
प्रत्यंगिरेयं प्रणतं पुनातु ।।

## स्तोत्र

नमः सहस्र सूर्येक्षणाय श्रीकण्ठानादि रूपाय पुरूषाय पुरू हुताय ऐं महा सुखय व्यापिने महेश्वराय जगत सृष्टि कारिणे ईशानाय सर्व व्यापिने महा घोराति घोराय प्रभावं दर्शय दर्शय।

हिल हिल विद्युतज्जिव्हे बन्ध-बन्ध मथ-मथ प्रमथ-प्रमथ विध्वंसय-विध्वंसय ग्रस-ग्रस पिव-पिव नाशय-नाशय त्रासय-त्रासय विदारय-विदारय मम शत्रून खाहि-खाहि मारय-मारय मां सपरिवारं रक्ष-रक्ष कर कुम्भस्तनि सर्वापद्र-वेभ्यः।

महा मेघौघ राशि सम्वर्तक विद्युदन्त कपर्दिनि दिव्य कनकाम्भो-रूहविकच माला धारिणि परमेश्वरी प्रिये! छिन्धि-छिन्धि विद्रावय-विद्रावय देवि! पिशाच नागासुर गरूड किन्नर विद्याधर गन्धर्व यक्ष राक्षस लोकपालान् स्तम्भय-स्तम्भय कीलय-कीलय घातय-घातय विश्वमूर्ति महा तेजसे हूं सः मम शत्रूणां विद्यां स्तम्भय-स्तम्भय, हूं सः मम शत्रूणां मुखं स्तम्भय-स्तम्भय, हूं सः मम शत्रूणां हस्तौ स्तम्भय-स्तम्भय, हूं सः मम शत्रूणां पादौ स्तम्भय-स्तम्भय, हूं सः मम शत्रूणां गृहागत कुटुम्ब मुखानि स्तम्भय-स्तम्भय, स्थानं कीलय-कीलय ग्रामं कीलय-कीलय मण्डलं कीलय-कीलय देशं कीलय-कीलय सर्वसिद्धि महाभागे! धारकस्य सपरिवारस्य शान्तिं कुरू-कुरू फट् स्वाहा

अं अं अं अं अं हूं हूं हूं हूं हूं खं खं खं खं खं फट् स्वाहा। जय प्रत्यंगिरे! धारकस्य सपरिवारस्य मम रक्षां कुरू-कुरू हूं सः जय जय स्वाहा।

ऐं ह्रीं श्रीं ब्रह्माणि ! शिरो रक्ष-रक्ष, हूं स्वाहा।

ऐं ह्रीं श्रीं कौमारि! मम वक्त्रं रक्ष-रक्ष, हूं स्वाहा। ऐं ह्रीं श्रीं वैष्णवि! मम कण्ठं रक्ष-रक्ष हूं स्वाहा।

ऐं ह्रीं श्रीं नारसिंहि! ममोदरं रक्ष-रक्ष हूं स्वाहा।

ऐं ह्रीं श्रीं इन्द्राणि! मम नाभिं रक्ष-रक्ष हूं स्वाहा।

ऐं ह्रीं श्रीं चामुण्डे! मम गुह्यं रक्ष-रक्ष हूं स्वाहा।

नमो भगवति, उच्छिष्ट चाण्डालिनि, त्रिशूल वज्रांकुशधरे मांस भक्षिणि, खट्वांग कपाल वज्रांसि-धारिणि! दह-दह, धम-धम, सर्व दुष्टान् ग्रस-ग्रस, ऐं ह्रीं श्रीं फट् स्वाहा।

---

---

## श्री राज-राजेश्वरी-तर्पण-स्तोत्र

**प्रस्तुत स्तोत्र का पाठ भगवती के तर्पण हेतु किया जाता है। इस स्तोत्र का पाठ करते हुए मां त्रिपुर सुंदरी के यंत्र अथवा चित्र पर निरंतर धारा प्रवाहित की जाती है। यदि केवल शहद अथवा गंगाजल में शहद मिलाकर यह धारा प्रवाहित की जाये तो इसके परिणाम स्वरूप साधक की सभी कामनांए पूर्ण होती हैं। लम्बी आयु के लिए शुद्ध घी से तर्पण किया जाता है। लम्बी बीमारी से छुटकारे के लिए साधक को दूध से तर्पण करना चाहिए और सभी कामनाओं की पूर्ति के लिए नित्य प्रति नारियल के जल से तर्पण करना चाहिए।**

**सर्वप्रथम भगवती श्री राज-राजेश्वरी का ध्यान करें-**

### ध्यान

बालार्कायुत-तेजसं त्रि-नयनां रक्ताम्बरो-ल्लासिनीम् ।
नानालंकृति-राजमान-वपुषं बालोडुराृ-शेखराम् ।।
हस्तैरिक्षु-धनुः सृणिं सुमशरं पाशं मुदा विभ्रतीम् ।
श्री चक्र-स्थित-सुंदरीं त्रिजगतामाधार-भूतां स्मरेत्।।

बालार्क-मण्डलाभासां चतुर्बाहां त्रि-लोचनाम् ।
पाशांकुश-शरांश्चापं, धारयन्तीं शिवां भजे।।

उपर्युक्तानुसार ध्यान करने के उपरान्त श्री यंत्र में स्थित मां श्री राज-राजेश्वरी का ध्यान करके निम्नांकित स्तोत्र का श्रद्धा पूर्वक पाठ एवं तर्पण करें-

## तर्पण-स्तोत्र

छन्दः- पाद-युगां निरूक्ति-सुमुखां शिक्षां च जंघा-युगां,
ऋग्वेदोरू-युगां यजुस्तु सघनां या साम-वेदोदराम् ।
तर्क -न्याय-कुचां श्रुति-स्मृति-करां काव्यादि-वेदाननाम्,
वेदनान्तामृत-लोचनां भगवती-श्रीराज-राजेश्वरीम्।।१।।
कल्याणयुत-पूर्ण-बिम्ब-वदनां पूर्णेश्वरा-नन्दिनीम्,
पूर्णां पूर्ण-परां परेश-महिषीं पूर्णामृता-स्वादिनीम्।
सम्पूर्णां परमोत्तसामृत-कलां विद्यावती भारतीम्,
श्रीचक्र-प्रिय-बिन्दु-तर्पण-परां श्रीराज-राजेश्वरीम्।।२।।
एकानेकमनेक-कार्य-विविधां कार्यैकंचिद्-रूपिणीम्,
चैतन्यात्मक-एक-चक्र-रचितां चक्रांक-एकाकिनीम्।
भावाभाव-विवर्द्धिनीं भय-हरां सद्-भक्ति-चिन्ता-मणिम्,
श्रीचक्र-प्रिय-बिन्दु-तर्पण-परां श्रीराज-राजेश्वरीम् ।।३।।
ईशाधीश्वर-योगि-वृन्द-विदितां सानन्द-भूतां पराम्,
पश्यन्तीं तनु-मध्यमां विलसतीं श्री भैरवी-रूपिणीम्।
आत्मानात्म-विचारिणीं विवरगां विद्यां त्रि-बीज-त्रयीम्,
श्रीचक्र-प्रिय-बिन्दु-तर्पण-परां श्रीराज-राजेश्वरीम् ।।४।।
लक्ष्यालक्ष्य-निरीक्षणां निरूपमां रूद्राक्ष-माला-धराम्,
साक्षात् कारण-दक्ष-वंश-कलितां दीर्घाक्षि-दीर्घेश्वरीम्।
भद्रां भद्र-वर-प्रदां भगवतीं भद्रेश्वरीं भद्रिणीम्,
श्रीचक्र-प्रिय-बिन्दु-तर्पण-परां श्रीराज-राजेश्वरीम् ।।५।।
ह्रीं-बीजान्वित-नाद-विन्दु-भरितां ॐकार-नादात्मिकां,

ब्रह्मानन्द-घनोदरीं गुणवतीं ज्ञानेश्वरीं ज्ञानदाम्।
इच्छा-ज्ञान-क्रियावतीं जित-वतीं गन्धर्व-संसेविताम्,
श्रीचक्र-प्रिय-बिन्दु-तर्पण-परां श्रीराज-राजेश्वरीम् ।।६।।
हर्षोन्मत्त-सुवर्ण-पात्र-भरितां पीनोन्नता-घूर्णिताम्,
हुंकार-प्रिय-शब्द-ब्रह्म-निरतां सारस्वतोल्लासिनीम्।
सारासार-विचार-चारू-चतुरां वर्णाश्रमा-कारिणीम्,
श्रीचक्र-प्रिय-बिन्दु-तर्पण-परां श्रीराज-राजेश्वरीम् ।।७।।
सर्वज्ञान-कलावतीं स-करूणां सन्नादिनीं नन्दिनीम्,
सर्वान्तर्गत-शालिनीं शिव-तनुं सन्दीपिनीं दीपिनीम्।
संयोग-प्रिय-रूपिणीं प्रियवतीं प्रीति-प्रतापोन्नताम्,
श्रीचक्र-प्रिय-बिन्दु-तर्पण-परां श्रीराज-राजेश्वरीम् ।।८।।
कर्माकर्म-विवर्जितां कुलवतीं कर्मप्रदां कौलिनीम्,
कारूण्यां तनु-बुद्धि-कर्म-निरतां सिंधु-प्रियां शालिनीम्।
पंच-ब्रह्म-सनातनां शव-हृदां ज्ञेयांग-योगान्विताम्,
श्रीचक्र-प्रिय-बिन्दु-तर्पण-परां श्रीराज-राजेश्वरीम् ।।६।।
हस्ते कुम्भ-निभां पयोधर-धरां पीनोन्नतां नौमि ताम्,
हाराद्या-भरणां सुरेन्द्र-विनुतां श्रृंगार-पीठालयाम्।
योन्याकारिणि योनि-मुद्रित-करां नित्यां च वर्णात्मिकाम्,
श्रीचक्र-प्रिय-बिन्दु-तर्पण-परां श्रीराज-राजेश्वरीम् ।।१०।।
लक्ष्मी-लक्षण-पूर्ण-भक्ति-वरदां लीला-विनोद-स्थिताम्,
लाक्षा-रंजित-पाद-पद्म-युगलां ब्रह्माण्ड-संसेविताम्।
लोकालोकित-लोक-काम-जननीं लोक-श्रियांक-स्थिताम्,
श्रीचक्र-प्रिय-बिन्दु-तर्पण-परां श्रीराज-राजेश्वरीम् ।।११।।
ह्रींकारायुत-शंकर-प्रिय-तनुं श्रीयोग-पीठेश्वरीम्,
मांगल्यायुत-पंकजाभ-नयनां मांगल्य-सिद्धि-प्रदाम्।
तारूण्यां तपसार्चितां तरूणिकां तत्रोद्भवां तत्त्विनीम्,
श्रीचक्र-प्रिय-बिन्दु-तर्पण-परां श्रीराज-राजेश्वरीम् ।।१२।।
सर्वेशांग-विहारिणीं स-करूणां सर्वेश्वरीं सर्वगाम्,
सत्यां सर्व-मयीं सहस्र-दलजां सप्तार्णवोप-स्थिताम्।
संगासंग-विवर्जितां शुभकरीं बालार्क-कोटि-प्रभाम्,

श्रीचक्र-प्रिय-बिन्दु-तर्पण-परां श्रीराज-राजेश्वरीम् ।।१३।।
कादि-क्षान्त-सुवर्ण-विन्दु-सुतनुं स्वर्णादि-सिंहासिनीम्,
नाना-वर्ण-विचित्र-चित्र-चरितां चातुर्य-चिन्ता-मणिम्।
चित्तानन्द-विधायिनीं सु-विपुलां रूढ-त्रयां शेषिकाम्
श्रीचक्र-प्रिय-बिन्दु-तर्पण-परां श्रीराज-राजेश्वरीम।।१४।।
लक्ष्मीशादि-विधीन्द्र-चन्द्र-मुकुटामष्टांग-पीठार्चिताम्,
सूर्येन्द्रग्नि-मयैक-पीठ-निलयां त्रिस्थां त्रिकोणेश्वरीम्।
गोप्त्रीं गुर्विणिं-गर्वितां गगनगां गंगा-गणेश-प्रियाम्,
श्रीचक्र-प्रिय-बिन्दु-तर्पण-परां श्रीराज-राजेश्वरीम।।१५।।
ह्रीं-कूट-त्रय-रूपिणीं समयिनीं संसारिणीं हंसिनीम्,
वामाचार-परायणां सु-कुलजां बीजावतीं मुद्रिणीम्।
कामाक्षीं करूणार्द्र-चित्त-चरितां श्रीमन्त्र-मूर्त्यात्मिकाम्,
श्रीचक्र-प्रिय-बिन्दु-तर्पण-परां श्रीराज-राजेश्वरीम।।१६।।

।।श्री आदि शंकराचार्य-विरचितं श्रीराज-राजेश्वरी-स्तोत्रम्।।

## श्री त्रिपुर-सुन्दरी तंत्र-साधना

साधकों **के हितार्थ जिस स्तोत्र का उल्लेख मैं यंहा करने जा रहा हूँ, वह भगवती श्रीराज राजेश्वरी का स्तोत्र है, जिसे** “श्रीललिता-लकारादि-शतनाम-स्तोत्र” **के नाम से जाना जाता है। इस स्तोत्र को विधि-विधान से पाठ आदि करने पर षट्कर्मों का साधन होता है। लेकिन यह अति आवश्यक है कि साधक उत्तम गुरू के द्वारा दीक्षित होना चाहिए।**

**भगवती त्रिपुर सुन्दरी समस्त तंत्रों की आधारभूत शक्ति हैं। तंत्रों में उत्कृष्ट साधना भैरवी चक्र अथवा श्रीचक्र में इन्हीं महाशक्ति का यजन-पूजन होता है।**

- **प्रस्तुत तंत्रात्मक स्तोत्र का विधान निम्नवत् हैः-**
- **निर्जन स्थान, श्मशान, निर्जन भवन, शिवालय, तालाब, नदी के किनारे, या एक-लिंग** (एक-लिंग उस स्थान को

कहा जाता है, जिस शिवलिंग के चारों ओर पांच कोस तक दूसरा शिवलिंग न हो।) में **पाठ करने से समस्त सिद्धियों की प्राप्ति होती है।**

- किसी वेश्या अथवा मासिक धर्म के समय स्त्री के पास बैठकर इस स्तोत्र के एक सौ आठ बार पाठ करने से यह सिद्ध हो जाता है और स्मरण करने मात्र से सिद्धियां प्रत्यक्ष हो जाती हैं।
- एक निश्चित अवधि में इस स्तोत्र की दस हजार आवृतियां करने पर एक पुरश्चरण पूर्ण होता है। पुरश्चरण पूर्ण होने पर यह सिद्ध होकर साधक की समस्त मनोकामनाएं पूर्ण करने में समर्थ होता है।
- पुरश्चरण के उपरान्त यदि किसी का वशीकरण करना हो तो इस स्तोत्र का एक हजार बार पाठ करें।
- यदि किसी भी लोक की कन्या का वशीकरण करना हो तो नित्यप्रति इस स्तोत्र का पाठ करते हुए धतूरे के फूलों से हवन करें। ऐसा करने से छः माह में समस्त लोकों की कन्याओं का वशीकरण होता है।
- रोग नाश के लिए पीपल के वृक्ष के नीचे बैठकर इस स्तोत्र का १०८ बार पाठ करें।
- किसी निर्जन घर में बैठकर इस स्तोत्र का एक हजार बार पाठ करने से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है और समस्त लोग साधक के वशीभूत होते हैं।
- यदि कोई शत्रु आपके विरूद्ध कोई अनर्गल वार्तालाप करके आपकी मान-मर्यादा, पद-प्रतिष्ठा, गरिमा को हानि पंहुचा रहा हो तो मंगलवार के दिन प्रेत-वस्त्र लाकर उस पर उस शत्रु का नाम लिखकर उसमें शत्रु की प्राण-प्रतिष्ठा करें और रात्रिकाल में उस वस्त्र को श्मशान भूमि में दबाकर उक्त स्तोत्र का वंही बैठकर दो हजार पाठ करें

तो उस शत्रु की जीभ बंध जाती है और वह गूंगा अथवा गूंगे के समान हो जाता है।

- श्मशान भूमि में इस स्तोत्र का पांच हजार बार पाठ करने से समस्त शत्रुओं का नाश हो जाता है।
- यदि शत्रु को मृत्यु का ग्रास बनाना हो तो शनिवार के दिन प्रेत-वस्त्र लाकर, प्रत्येक नाम से सम्पुंटित करके शत्रु का नाम लिखें। तदोपरान्त उसकी प्राण-प्रतिष्ठा करके मां श्री राज-राजेश्वरी की पूजा  काले धतूरे के फूलों से करें। रात्रि में उस वस्त्र को श्मशान भूमि में दबाकर इस स्तोत्र का १०८ बार पाठ करें।

- मंगलवार के दिन प्रेत भूमि में जाकर वंहा से चिता के अंगारे ले आएं और प्रेत-वस्त्र में लपेट कर प्रेत-रस्सी से बांध दें। उसके बाद उसे इस स्तोत्र से दस बार अभिमंत्रित करके दुश्मन के घर में दबा दे। केवल सात दिनों के भीतर ही उस स्थान अथवा पद से शत्रु का उच्चाटन हो जाता है।

- कुमारी पूजा करके श्रद्धा पूर्वक इस स्तोत्र का पाठ करने वाले साधक के असाध्य कार्य सिद्ध होते हैं।

- युद्ध भूमि, शत्रुओं के मध्य, राज-भय और अकाल के समय इस स्तोत्र का पाठ करने से संकट दूर होता है।

- शोधिता उत्तम स्त्री को अपने बांयी ओर बिठाकर जप सहित इस स्तोत्र का पाठ करने से बहुत जल्दी सिद्धि प्राप्त होती है।

- **चतुर्दशी के दिन कामिनी के साथ जो दरिद्र व्यक्ति ८ बार स्तोत्र का पाठ करता है, वह कुबेर के समान धनी हो जाता है।** (कामिनी अथवा शोधिता स्त्री को भैरवी भी कहा जाता है।)

- **नित्य-प्रति मां त्रिपुर सुन्दरी की पूजा करके प्रत्येक नाम से हवन करने से साधक को विपुल धन की प्राप्ति होती है।**

- **इस स्तोत्र से मक्खन को अभिमंत्रित करके बन्ध्या स्त्री को खिलाने से वह पुत्रवती होती है।**

- **पुत्र की कामना करने वाली स्त्री को इस स्तोत्र का यंत्र बनाकर गले, बांयी भुजा अथवा योनि में रखना चाहिए।**

**क्रम-दीक्षा से युक्त साधक को ही सिद्धि मिलती है। वह कल्पोक्त सिद्धियों को प्राप्त कर क्रमशः राज्य-वैभव को प्राप्त करता है। वह ब्रह्मा के लेख यानि कि प्रारब्ध को भी मिटाकर संसार-बंधन से छूटकर सभी सिद्धियों को प्राप्त करता है।**

**सर्वप्रथम दाहिने हाथ में जल लेकर विनियोग करें:-**

विनियोगः- ॐ अस्य श्री ललिता लकारादि **शतनाम स्तोत्र मन्त्रस्य राज-राजेश्वर ऋषिः, अनुष्टुप छंदः श्री ललिताम्बा देवता, धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष प्राप्तयर्थे च षट्कर्म सिद्धयर्थे पाठे विनियोगः।**

ऋष्यादि न्यासः- श्री राज-राजेश्वर ऋषये नमः शिरसि।
अनुष्टप छन्दसे नमः मुखे। श्री ललिताम्बा देवतायै नमः हृदि। धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष साधने च षट्कर्म सिद्धयर्थे पाठे विनियोगः।
इसके उपरान्त "ऐं क्लीं सौः" बीजों से कर-षडंग-न्यास करें और प्रयोगों में इसी की योजना करें।

श्री ललिता-लकारादि-शत-नाम-स्तोत्र

।।पूर्व पीठिका।।

कैलास-शिखरासीनं, देव-देवं जगद्-गुरूम्।
पप्रच्छेशं परानन्दं, भैरवी परमेश्वरम् ।।

।। श्री भैरवी-उवाच।।

कौलेश! श्रोतुमिच्छामि, सर्व-मन्त्रोत्तमोत्तमम्।
ललिताया शतनाम, सर्व काम-फल-प्रदम्।।

।।श्री भैरव-उवाच।।

श्रृणु देवि महाभागे! स्तोत्रमेतदनुत्तमम्।
पठनाद् धारणादस्य, सर्व-सिद्धीश्वरो भवेत्।।
षट्-कर्माणि सिद्धयन्ति, स्तवस्यास्य प्रसादतः।
गोपनीयं पशोरग्रे, स्व-योनिमपरे यथा।।

।।विनियोग।।

ललिताया लकारादि, नाम-शतकस्य देवि! ।
राज-राजेश्वरो षिः, प्रोक्तो छन्दोऽनुष्टुप् तथा।।
देवता ललिता-देवी, षट्-कर्म-सिद्धयर्थे तथा।
धर्मार्थ-काम-मोक्षेषु, विनियोगः प्रकीर्तितः।।
वाक्-काम-शक्ति (ऐं क्लीं सौः), कर-**षडंगमाचरेत्।**
प्रयोगे बाला-त्र्यक्षरी, योजयित्वा जपं चरेत्।।

********

।।मूल श्री ललिता लकारादि-शतनाम स्तोत्रम्।।

**ललिता लक्ष्मी लोलाक्षी लक्ष्मणा लक्ष्मणार्चिता।**
**लक्ष्मण-प्राण-रक्षिणी, लाकिनी लक्ष्मण-प्रिया ।।१।।**
**लोला लकारा लोमेशा, लोल-जिह्वा लज्जावती।**
**लक्ष्या लाक्ष्या लक्ष-रता, लकाराक्षर-भूषिता ।।२।।**
**लोल-लयात्मिका लीला, लीलावती च लांगली।**
**लावण्यामृत-सारा च, लावण्यामृत-दीर्घिका ।।३।।**

लज्जा लज्जा-मती लज्जा, ललना ललन-प्रिया ।
लवणा लवली लसा, लाक्षकी लुब्धा लालसा ।।४।।
लोक-माता लोक-पूज्या, लोक-जननी लोलुपा ।
लोहिता लोहिताक्षीच, लिंगाख्या चैव लिंगेशी।।५।।
लिंग-गीति लिंग-भवा, लिंग-माला लिंग-प्रिया।
लिंगाभिधायिनी लिंगा, लिंग-नाम-सदानन्दा ।।६।।
लिंगामृत-प्रीता लिंगार्चन-प्रीता लिंग-पूज्या।
लिंग-रूपा लिंगस्था च, लिंगालिंगन-तत्परा ।।७।।
लता-पूजन-रता च, लता - साधक -तुष्टिदा।
लता-पूजक-रक्षिणी, लता -साधन- सिद्धिदा।।८।।
लता - गृह - निवासिनी, लता-पूज्या लताराध्या ।
लता-पुष्पा लता-रता, लता-धारा लता-मयी।९।।
लता-स्पर्शन-सन्तुष्टा, लता-आलिंगन हर्षिता।
लता-विद्या लता-सारा, लता-आचारा लता-निधि।।१०।।
लवंग-पुष्प-सन्तुष्टा, लवंग-लता-मध्यस्था।
लवंग-लतिका-रूपा, लवंग-होम-सन्तुष्टा।।११।।
लकाराक्षर-पूजिता, च लकार-वर्णोद्भवा।
लकार-वर्ण-भूषिता, लकार-वर्ण-रूचिरा ।।१२।।
लकार-बीजोद्भवा तथा लकाराक्षर-स्थिता।
लकार-बीज-निलया, लकार-बीज-सर्वस्वा।।१३।।
लकार-वर्ण-सर्वांगी, लक्ष्य-छेदन-तत्परा।
लक्ष्य-धरा लक्ष्य-घूर्णा, लक्ष-जापेन-सिद्धिदा।।१४।।
लक्ष-कोटि-रूप-धरा, लक्ष-लीला-कला-लक्ष्या।
लोक-पालेनार्चिता च, लाक्षा-राम-विलेपना ।।१५।।
लोकातीता लोपा-मुद्रा, लज्जा-बीज-स्वरूपिणी।
लज्जा-हीना लज्जा-मयी, लोक-यात्रा-विधायिनी।।१६।।
लास्या-प्रिया लय-करी, लोक-लया लम्बोदरी।
लघिमादि-सिद्धि-दात्री, लावण्य-निधि-दायिनी।
लकार-वर्ण-ग्रथिता, लं-बीजा ललिताम्बिका।।१७।।

......................फल-श्रुति......................

इति ते कथितं देवि!, गुह्याद् गुह्य-तरं परम्।
प्रातः - काले च मध्यान्हे, सायान्हे च सदा निशि।
यः पठेत् साधक-श्रेष्ठो, त्रैलोक्य-विजयी भवेत्।।१।।
सर्व - पापि - विनिर्मुक्तः, स याति ललिता-पदम्।
शून्यागारे शिवारण्ये, शिव-देवालये तथा।।२।।
शून्य-देशे तडागे च, नदी-तीरे चतुष्पथे।
एक-लिंगे ॠतु-स्नाता-गेहे वैश्या-गृहे तथा।।३।।
पठेदष्टोत्तर-शत-नामानि सर्व-सिद्धये।
साधको वांच्छां यत्-कुर्यात्, तत्तथैव भविष्यति।।४।।
ब्रह्माण्ड-गोलके याश्च, याः काश्चिज्जगती-तले।
समस्ताः सिद्धयों देवि!, करामलक-वत् सदा।।५।।
साधक - स्मृति - मात्रेण, यावन्त्यः सन्ति सिद्धयः।
स्वयमायान्ति पुरतो, जपादीनां तु का कथा।।६।।
अयुतावर्त्तनाद् देवि!, पुरश्चर्याऽस्य गीयते।
पुरश्चर्या-युतः स्तोत्रः, सर्व-कर्म-फल-प्रदः।।७।।
सहस्त्रं च पठेद्यस्तु, मासार्धं साधकोत्तमः।
दासी-भूतं जगत्-सर्वं, मासार्धाद् भवति ध्रुवम्।।८।।
नित्यं प्रति-नाम्ना हुत्वा, पलाश-कुसुमैर्नरः।
भू-लोकस्थाः सर्व-कन्याः, सर्व-लोक-स्थितास्तथा।।९।।
पातालस्थाः सर्व-कन्याः, नाग-कन्याः यक्ष-कन्याः।
वशीकुर्यान्मण्डलार्धात्, संशयो नात्र विद्यते।।१०।।
अश्वत्थ-मूले पठेत् शत-वारं ध्यान-पूर्वकम्।
तत्-क्षणाद् व्याधि-नाशश्च, भवेद् देवि! न संशयः।।११।।
शून्यागारे पठेत् स्तोत्रं, सहस्रं ध्यान-पूर्वकम्।
लक्ष्मी प्रसीदति ध्रुवं, स त्रैलोक्यं वशिष्यति।।१२।।
प्रेत-वस्त्रं भौमे ग्राह्यं, रिपु-नाम च वेष्टितम्।
प्राण-प्रतिष्ठां कृत्वा तु, पूजां चैव हि कारयेत्।।१३।।
श्मशाने निखनेद् रात्रौ, द्वि-सहस्रं पठेत् ततः।
जिह्वा-स्तम्भनमाप्नोति, सद्यो मूकत्वमाप्नुयात्।।१४।।

श्मशाने पठेत् स्तोत्रं, अयुतार्धं सु-बुद्धिमान्।
शत्रु-क्षयो भवेत् सद्यो, नान्यथा मम भाषितम्।।१५।।
प्रेत-वस्त्रं शनौ ग्राह्यं, प्रति-नाम्ना सम्पुटितम्।
शत्रु-नाम लिखित्वा च , प्राण-प्रतिष्ठां कारयेत्।।१६।।
ततः ललितां सम्पूज्य, कृष्ण-धत्तूर-पुष्पकैः।
श्मशाने निखनेद् रात्रौ, शतवारं पठेत् स्तोत्रम्।।१७।।
ततो मृत्युमवाप्नोति, देव-राज-समोऽपि सः।
श्मशानांगारमादाय, मंगले शनिवारे वा।।१८।।
प्रेत-वस्त्रेण संवेष्टय, बध्नीयात् प्रेत-रज्जुना।
दशाभिमन्त्रितं कृत्वा, खनेद् वैरि-वेश्मनि।।१९।।
सप्त-रात्रान्तरे तस्योच्चाटनं भ्रामणं भवेत्।
कुमारीं पूजयित्वा तु, यः पठेद् भक्ति-तत्परः।।२०।।
न किंचिद् दुर्लभं तस्य, दिवि वा भुवि मोदते।
दुर्भिक्षे राज-पीडायां, संग्रामे वैरि-मध्यके।।२१।।
यत्र यत्र भयं प्राप्तः, सर्वत्र प्रपठेन्नरः।
तत्र तत्राभयं तस्य, भवत्येव न संशयः।।२२।।
वाम-पार्श्वे समानीय, शोधितां वर-कामिनीम्।
जपं कृत्वा पठेद् यस्तु, तस्य सिद्धिः करे स्थिता।।२३।।
दरिद्रस्तु चतुर्दश्यां, कामिनी-संगमैः सह।
अष्ट-वारं पठेद् यस्तु, कुबेर सदृशो भवेत्।।२४।।
श्री ललितां महादेवी, नित्यं सम्पूज्य मानवः।
प्रति-नाम्ना जुहुयात् स, धन-राशिम-वाप्नुयात्।।२५।।
नवनीतं चाभिमन्त्रय, स्त्रीभ्यो दद्यान्महेश्वरि!
वन्ध्यां पुत्र-प्रदं देवि! नात्र कार्या विचारणा।।२६।।
कण्ठे वा वाम-बाहौ वा, योनौ व धारणाच्छिवे !
बहु-पुत्र-वती नारी, सुभगा जायते ध्रुवम्।।२७।।
उग्रं उग्रं महदुग्रं, स्तवमिदं ललितायाः।
सु-विनीताय शान्ताय, दान्तायाति-गुणाय च।।२८।।
भक्ताय ज्येष्ठ-पुत्राय, गुरू-भक्ति-पराय च।
भक्त-भक्ताय योग्याय, भक्ति-शक्ति-पराय च।।२९।।

वेश्या-पूजन-युक्ताय, कुमारी-पूजकाय च।
दुर्गा-भक्ताय शैवाय, कामेश्वर-प्रजापिने।।३०।।
अद्वैत-भाव-युक्ताय, शक्ति-भक्ति-पराय च।
प्रदेयं शत-नामाख्यं, स्वयं ललिताज्ञया।।३१।।
खलाय पर-तन्त्राय, पर-निन्दा-पराय च।
भ्रष्टाय दुष्ट-सत्वाय, परी-वाद-पराय च।।३२।।
शिवाभक्ताय दुष्टाय, पर-दार-रताय च ।
वेश्या-स्त्री-निन्दकाय च, पंच-मकार-निन्दके।।३३।।
न स्तोत्रं दर्शयेद् देवि! मम हत्या-करो भवेत्।
तस्मान्न दापयेद् देवि! , मनसा कर्मणा गिरा।।३४।।
अन्यथा कुरूते यस्तु, स क्षीणायुर्भवेद् ध्रुवम्।
पुत्रहारी च स्त्री-हारी, राज्य-हारी भवेद् ध्रुवम।।३५।।
मन्त्र-क्षोभश्च जायते, तस्य मृत्युर्भविष्यति।
क्रम-दीक्षा-युतानां च, सिद्धिर्भवति नान्यथा।।३६।।
क्रम-दीक्षा-युतो देवि!, क्रमाद् राज्यमवाप्नुयात्।
क्रम-दीक्षा-समायुक्तः, कल्पोक्त-सिद्धि-भाग्भवेत्।।३७।।
विधेर्लिपिं तु सम्मार्ज्य, किंकरत्वं विसृज्य च।
सर्व-सिद्धिमवाप्नोति, नात्र कार्या विचारणा।।३८।।
क्रम-दीक्षा-युतो देवि!, मम समो न संशयः।
गोपनीयं गोपनीयं, गोपनीय सदाऽनघे।।३९।।
स दीक्षितः सुखी साधुः, सत्य-वादी जितेन्द्रियः।
स वेद-वक्ता स्वाध्यायी, सर्वानन्द-परायणः।।४०।।
स्वस्मिन् ललितां सम्भाव्य, पूजयेज्जगदम्बिकाम्।
त्रैलोक्य-विजयी भूयान्नात्र कार्या विचारणा ।।४१।।
गुरू-रूपं शिवं ध्यात्वा, शिव-रूपं गुरूं स्मरेत्।
सदा-शिवः स एव स्यान्नात्र कार्या विचारणा।।४२।।

(श्री कौलिकार्णवे श्री भैरवी-संवादे षट्कर्म-सिद्धि-दायकं श्रीमल्ललिताया लकारादि-शत-नाम स्तोत्रं। सौजन्य से परा-वाणी आध्यात्मिक शोध-संस्थान।)

**नोटः- जो साधक इस स्तोत्र का मात्र एक बार पाठ करते हैं, उन्हें यह स्तोत्र पूरा, अर्थात् आरम्भ से अन्त तक पढ़ना चाहिए। जो साधक इस स्तोत्र का**

अनुष्ठान करते हैं, उन्हें प्रथम बार आरम्भ से अन्त तक तथा इसके बाद आरम्भ के केवल १७ श्लोक ही पढ़ने चाहिए। अन्त में पुनः एक बार आरम्भ से अन्त तक, अर्थात स्तोत्र एवं श्रुति-फल भी पढ़ना आवश्यक है।

## कामाख्या-साधना

साधना के इस क्रम में यंहा मैं भगवती कामाख्या की साधना का उल्लेख कर रहा हूँ।

कौल-मार्ग शाक्त मार्ग है। यद्यपि शिव और शक्ति सर्वथा अभिन्न हैं, लेकिन कौलाचारी शक्ति तत्व को प्रधान मानते हैं। मूल रूप से यद्यपि शक्ति एक ही है, किन्तु भिन्न-भिन्न काल में अलग-अलग रूप में अलग-अलग उद्देश्य से अवतरित होने के कारण उसके रूप और नाम अलग-अलग हैं। मां कामाख्या, काली और तारा का मिश्रित स्वरूप माना जाता है। कुछ विद्वान इसे मां षोडशी का स्वरूप भी मानते है।। चारों प्रकार की वाणियों में भगवती कामाख्या परावाक् हैं। काली, तारा और षोडशी की गणना दश महाविद्याओं में क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर मानी जाती हैं, जिनका मिश्रित स्वरूप भगवती कामाख्या हैं।

साधना-विधि :- सर्वप्रथम आचमन आदि करके दांये हाथ में जल लेकर विनियोग करें-

**विनियोगः-** ॐ अस्य श्री कामाख्या मन्त्रस्य अक्षोभ्य ऋषिः, अनुष्टुप छन्दः, कामाख्या देवता सर्वसिद्धये जपे विनियोगः।

इसके उपरान्त न्यास आदि करें-

कर-न्यासः-

ॐ त्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ त्रीं तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ त्रूं मध्यमाभ्यां नमः।
ॐ त्रैं अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ त्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
ॐ त्रः कामाख्यै नमः।

हृदयादि-न्यासः-

ॐ त्रां हृदयाय नमः।
ॐ त्रीं शिरसे स्वाहा।
ॐ त्रूं शिखायै वषट्।
ॐ त्रौं कवचाय हुं।
ॐ त्रैं नेत्र-त्रयाय वौषट्।
ॐ त्रः अस्त्राय फट्।

**इस प्रकार न्यास करने के उपरान्त भगवती कामाख्या का ध्यान करें:-**

ध्यान

रक्त-वस्त्रां वरोद्-युक्तां सिन्दूर-तिलकान्विताम्।
निष्कलंक सुधा-धाम-वदन-कमलोज्ज्वलाम्।।१।।
स्वर्णादिन-मणि-माणिक्य-भूषणै-र्भूषितां पराम्।
नाना-रत्नादि-निर्माण-सिंहासनोपरि-स्थिताम्।।२।।
हास्य-वक्त्रां पद्म-राग-मणि-कान्तिमनुत्तमाम्।
पीनोत्तुंग-कुचां कृष्यां श्रुति-मूल-गते-क्षणाम्।।३।।
कटाक्षैश्च महा-सम्पद्-दायिनीं परमेश्वरीम्।
सर्वांग-सुन्दरीं नित्यां विद्याभिः परिवेष्टिताम्।।४।।
डाकिनी-योगिनी-विद्याधरीभिः परिशोभिताम्।
कामिनी-भिर्युतां नानागन्धाद्यैः परिगन्धिताम्।।५।।
ताम्बूलादि-कराभिश्च नायिका-भिर्विराजिताम्।
समस्त-सिद्ध-वर्गाणां प्रणतानां प्रतीक्षणाम्।।६।।
त्रिनेत्रां सम्मोहकरां पुष्प-चापेषु बिभ्रतीम्।
भग-लिंग-समाख्यानं किन्नरीभ्योऽपि शृण्वतीम्।।७।।
वाणी-लक्ष्मी-सुधा-वाक्य-प्रति-वाक्य-महोत्सुकाम्।
अशेष-गुण-सम्पन्नां करूणा-सागरां शिवाम्।।८।।

उपरोक्त ध्यान करने के उपरान्त भगवती कामाख्या के मूल मंत्र का यथाशक्ति जप करें। यदि भगवती का पूजनोपचार करना हो तो उन्हें कुंकुम, लाल फूल, सुगंधि, गुडहल के फूल, सिंदूर और मुख्य रूप से कनेर के पुष्प अर्पित करें।

मंत्रोद्धारः-

जृम्भणान्तं त्यक्तपाशं यात्रावारणरोहकम्।
वामकर्णयुतं देवि नादबिन्दुयुतं पुनः।।
एतत्तु त्रिगुणीकृत्य कल्पवृक्षमनुं जपेत्।
एकं वापि द्वयं वापि त्रयं वा जपेत् सुधी।।
अर्थातः- हे देवि! जृम्भणान्त अर्थात्-''त''।
त्यक्तपाश अर्थात्-''अ'' से रहित। (त्)
यात्रावारण अर्थात-''र''।
रोहक अर्थात्-''युक्त''
वामकर्ण अर्थात्-''ई''।
नादविन्दु अर्थात्- ''ँ''।

उपरोक्त स्पष्टीकरण से जो शब्द निकलकर आता है, वह बनता है- ''त्रीं'' । कल्पवृक्ष के समान इस मंत्र का जप करना चाहिए। इस कल्पवृक्ष को तीन गुना कर, अर्थात्- ''त्रीं त्रीं त्रीं'' की एक माला, दो माला, तीन माला अथवा चाहे जितनी बार जप करें। इनकी साधना में न तो चक्रशुद्धि की आवश्यकता है, न काल-शोधन की।

जप करने के उपरान्त अपने जप भगवती को समर्पित करें।

..................................

## कुछ विशिष्ट जानने योग्य तथ्य

1. भक्ति बड़ी चीज हैः- अनुभव में आया है कि बहुत से साधकों को अभिमान हो जाता है कि वे मां काली के उपासक हैं, अथवा अन्य किसी देवता के उपासक हैं और वे किसी का भी अहित करने में सक्षम हैं। वे बहुत उच्च्य शक्ति के उपासक हैं अथवा उन्होंने अपने इष्ट देवता के बहुत अधिक संख्या में जप कर लिये हैं और वे सदैव अपराजित रहेंगें। यह सब सम्भव है, लेकिन यदि सामने वाला व्यक्ति किसी अन्य देवता या देवी का उपासक है और उसमें त्याग, सत्यता, शुद्धता, श्रद्धा और अपने देवता के प्रति अनन्य विश्वास और समर्पण भावना है, अंहकार की उपस्थिति उसमें तनिक भी नहीं है तो हो सकता है कि आपके प्रयोगों के द्वारा वह कुछ समय के लिए तो परेशान हो जायेगा,

लेकिन कुछ समय पर्यन्त ही उसका सब कुछ ठीक हो जायेगा और घमंडी उपासक को निश्चय ही अपमानित होना पड़ेगा। इस लिए यदि आप साधक हैं तो समस्त गुण अपने आप में लाईये, तभी आपका सफल होना सम्भव है। त्याग, तपस्या, भक्ति, अंहकारहीन, सत्यवादी, तपश्चर्या का पालन करना ही एक साधक का धर्म है। आपने साधना, तपस्या तो बहुत की, लेकिन व्यर्थ में ही उसे लुटा दिया तो एक समय आपको ऐसा दिन भी देखना पड़ेगा, जब आप सामान्य व्यक्ति से भी पराजित हो जायेंगें। और इस समय का सामना करना स्वयं में ही अपमृत्यु के समान है।

2. जब अवांछित दुर्घटनाएं बार-बार होती हों, अचानक ही व्यक्ति कर्ज, असाध्य बीमारी, अनायास ही नुकसान पर नुकसान, लम्बे समय से चली आ रही विपत्तियों का अन्त न होना, ऐसी स्थिति में कोई भी व्यक्ति यह सोचने के लिए बाध्य हो जाता है कि मेरे घर, व्यवसायिक प्रतिष्ठान आदि पर कोई गलत आत्मा का साया तो नहीं है, अथवा किसी दुश्मन के द्वारा कोई जादू-टोना तो नहीं कर दिया गया है, किसी के द्वारा मूठ तो नहीं चला दी गयी है अथवा किसी के द्वारा कोई अघोरी या श्मशानिक प्रयोग तो नहीं कर दिया अथवा करा दिया गया है। या फिर कालसर्प दोष, पितृ दोष या फिर किसी ग्रह का दोष या परिवार की किसी अतृप्त आत्मा का दोष तो नहीं है। वह बार-बार किसी पंडित, मौलवी या फिर किसी तांत्रिक की खोज में भटकता है और अपना बहुमूल्य समय और धन लुटाता है। यदि किसी व्यक्ति के साथ इस प्रकार की समस्या हो तो सर्वप्रथम निम्नाकित तथ्यों पर विचार करें-

- बहुत से प्रयोग इस प्रकार के होते हैं कि उनका करीब १०० सालों तक भी प्रभाव रहता है। यह मेरा अपना अनुभव है कि अनेक परिवार ऐसे हैं, जिनके पुरखों पर किया गया अभिचार कर्म ५०-६० साल पुराना है, जो आज भी उनका नाश कर रहा है।

- शत्रुतावश किसी का वंश बांध दिया जाता है, या फिर किसी परिवार को शाप होता है। इस स्थिति में होता यह है कि परिवार में संतान ही नहीं होती। यदि होती भी है तो वह किसी असाध्य बीमारी से पीडित रहती है। अथवा घर में कोई व्यक्ति असाध्य बीमारी से पीडित रहता है। उस घर का मुखिया ऋण, अर्थहानि, रोग के कारण इतना अधिक पीडित हो जाता है कि वह धर्म, कर्म आदि के लिए स्वयं को तैयार ही नहीं कर पाता है।

- यदि मृतक व्यक्ति की मुक्ति हेतु कोई कर्म किया जाता है तो जिस आत्मा के प्रभाव के कारण उसकी मृत्यु हुई है, वह उस कर्म को रोक देगी और आपके द्वारा मुक्ति हेतु किये गये किसी प्रयोग का फल मृतक व्यक्ति को नहीं मिल पायेगा। ऐसी स्थिति में व्यक्ति को स्वयं ही नित्यप्रति उच्च कोटि की शक्तियों के पाठ आदि के लिए २-३ घंटों का समय लगाना होगा।

धूमावती साधना :-

- यदि किसी व्यक्ति को विशिष्ट पूजा- अनुष्ठान आदि करने पर भी कोई फल प्राप्त नहीं हो रहा है तो इसका तात्पर्य यह है कि उसके ग्रहों की मारकेश दशा चल रही है, अपने प्रारब्ध का फल उसे भोगना पड़ रहा है। ऐसी स्थिति में उसे धूमावती महाविद्या का आश्रय लेना चाहिए। धूमावती चूंकि वृद्धा, विधवा तथा दरिद्रता और कलह की देवी है, इसलिए उनके अनुष्ठान में विशेष सतर्कता की आवश्यकता है। इनकी साधना सरल नहीं है, क्योंकि वे विघ्नों की अधिष्ठात्री और अमंगला है, इस कारण इनका आवाहन अपने निवास स्थान में नहीं किया जाता है। अतः इनकी उपासना व्यक्ति को खूब सोच-समझकर करनी चाहिए।

धूमावती की साधना रात्रि-काल में ही की जाती है। इस देवी का स्वरूप बड़ा विचित्र है। इनके शरीर का आकार स्थूल है। केश रूखे-सूखे हैं, वेश मलिन है, दोनों स्तन नीचे की ओर लटके हुए हैं, झुके हुए हैं,जैसे किसी वृद्धा स्त्री के होते हैं।

वैसे तो साधारणतया सभी प्रकार की मनोकामनाएं लेकर धूमावती की साधना की जाती है, परन्तु दरिद्रता को दूर करने के लिए, कर्ज से छुटकारे के लिए, किसी को कर्ज दिया हो और वह पैसा वापिस न दे रहा हो, कोई आपको अकारण सता रहा हो, आपकी जमीन-मकान पर कब्जा किये बैठा हो, अनाधिकृत रूप से आपका हक मार रहा हो, घर में हमेशा दरिद्रता, वीरानगी बनी रहती हो, सब कुछ ठीक होते हए भी संतान की प्राप्ति न होना आदि- जब ऐसी स्थितियां दिखायी दें तो भगवती धूमावती की उपासना करना अत्यन्त ही हितकारी होता है। किसी के द्वारा कोख-बंधन कर दिया गया हो, आपका व्यवसायिक प्रतिष्ठान बांध दिया गया हो, रोजगार, आमदनी बांध दी हो, मित्र से, अधिकारी से, घर के लोगों से विद्वेषण, उच्चाटन करा दिया गया हो, तो उसके लिए इन भगवती की उपासना करनी चाहिए।

विश्व में दुख के चार मूल कारण होते हैं- रूद्र, यम, वरूण और नैऋति देवता। इनमें निऋति ही धूमावती हैं। प्राणियों में मूर्च्छा, मृत्यु, असाध्य रोग, कलह, दरिद्रता, शोक आदि ये देवी ही उत्पन्न करती हैं। व्यक्ति का भिखारी बन जाना, पहनने के फटे-पुराने वस्त्र भी उपलब्ध न होना, भूख-प्यास, वैधव्य की स्थिति, असहनीय शोक, पुत्रशोक अथवा संतानहीनता, महाक्लेश आदि- सब धूमावती के ही स्वरूप हैं। इसलिए ही ऐसी परिस्थितयां उत्पन्न होने के कारण धूमावती का अनुष्ठान किया अथवा कराया जाता है।

नैऋति शक्तियां यूं तो सर्वत्र व्याप्त रहती हैं, लेकिन ज्येष्ठा नक्षत्र इनका प्रधान केन्द्र है। इसी नक्षत्र से यह शक्ति जुड़ी हुई है। यही कारण है कि इस नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति जीवन पर्यन्त दुख-दरिद्रता भोगता है।

प्रत्येक चातुर्मास-आषाढ़ शुक्र एकादशी से कार्तिक शुक्र तक होता है। इन चार महीनों में नैऋति का साम्राज्य होता है, और देवताओं का सुषुप्ति काल माना जाता है। सन्यासी लोग भी भ्रमण त्याग कर किसी एक स्थान पर रूक जाते हैं। कोई भी शुभ कार्य इन चार महीनों में वर्जित माना जाता है। कार्तिक कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी इसका अन्तिम दिन होता है, जिसे नरक चौदस कहा जाता है। इसी

दिन दरिद्रता की देवी धूमावती का गमन होता है और दूसरे ही दिन अमावस्या को रोहिणी नक्षत्र में लक्ष्मी अर्थात् दीपावली का आगमन होता है। यह सब कहने का तात्पर्य यह है कि महाविधा धूमावती की प्रधानता वर्षा काल के चार महीनों में मुख्यतः रहती है, और इसी काल में इनका अनुष्ठान विशेष प्रभावी रहता है।

मन्त्र-विधान

भगवती धूमावती की उपासना किसी निर्जन स्थान या श्मशान में की जाती है। किसी कारणवश यदि स्व-निवास पर ही करना पड़े तो अपने घर में इनकी मूर्ति, चित्र अथवा यन्त्र की स्थापना न करें। एक साबुत पान के पत्ते पर रोली, सिन्दूर अथवा हिंगुल से त्रिशुल की आकृति बनाकर, उस पर धूप दीप, नैवेद्य, पुष्प आदि अर्पित करके मन्त्र-जप आरम्भ करें। जप करते समय अपने हृदय में भावना करें कि भगवती धूमावती मेरे समस्त दुखों, शोकों, पापों, दरिद्रता, कलह, रोगों, विघ्नों और शत्रुओं को अपने खाली सूप में भरकर प्रसन्नता पूर्वक घर से विदा हो रही हैं। मेरे उपर जो भी अभिचार कर्म, बुरी नजर, टोने-टोटके आदि हैं, उन सबको वे अपने सूप में समेट रही हैं। समस्त शत्रुओं तथा भूत-प्रेतादि दोषों को अपने उदर में ले रही हैं और सभी प्रकार की बाधाओं और कष्टों को अपने साथ लेकर वे प्रसन्न चित्त से कंही और जा रही हैं। प्रसन्नावस्था में वे मुझे अभय प्रदान कर रही हैं, जिसके कारण मेरे समस्त रोग, दोष, भय, शत्रु, पीड़ा, क्लेश, विघ्न-बाधाएं, ऋण आदि मुझे कभी भी पीड़ा नहीं दे पायेगें और मां का वरद हस्त सदैव मुझ पर बना रहेगा।

पूजा व मन्त्र-जप करने के उपरान्त पान के पत्ते को उठाकर किसी ऐसे स्थान पर विसर्जित करें, जंहा किसी का पैर न पड़े या कोई उलखने न पाये।

कुछ विशिष्ट ज्ञातव्य तथ्यः-

भगवती के मन्त्र का पुरश्चरण ८ लाख जप का है। ८० हजार मंत्रों से हवन किया जाता है। यदि ८० हजार आहुतियों की सामर्थ्य न हो तो उतनी संख्या में या उसकी दोगुनी संख्या में मंत्र जप कर लेना चाहिए और सामर्थ्यानुसार होम करा देना चाहिए। हवन में आक की

लकड़ी का प्रयोग विशेष रूप से करना चाहिए। पूजन सामग्री में सभी सामान सफेद रंग का होना चाहिए। जैसे- सफेद वस्त्र, आसन, पुष्प, गंध, धूप-दीप, चंदन, नैवेद्य आदि सभी सफेद रंग के होने आवश्यक हैं। जप के लिए माला तुलसी, मोती या आक की लकड़ी की होनी चाहिए। कौए के पंखों का प्रयोग भी मार्जन, पूजन, हवन में करना चाहिए। पान के पत्ते के स्थान पर कौए के पंखों का प्रयोग विद्वेषण आदि उग्र कार्यों में करना चाहिए। विद्वेषण, उच्चाटन आदि कर्मों में धतूरे के फल, बीज, जड़ आदि का अथवा कटेरी सफेद फूल वाली के पत्ते, जड़, लकड़ी का प्रयोग हवन में करें। हवन में काले तिलों का, शाकल्य में सफेद तिलों के स्थान पर उच्चाटन आदि कर्मो में करें। दरिद्रता दूर करने के लिए सफेद तिलों का प्रयोग ही करना चाहिए।

सर्व प्रथम विनियोग करें-

विनियोगः- अस्य श्री धूमावती महामन्त्रस्य, पिप्लाद ऋषिः, निवृत छन्दः, ज्येष्ठा देवता, धूं बीजं, स्वाहा शक्तिः, धूमावती कीलकं, ममाभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः-

पिप्लाद ऋषये नमः शिरसि।<br>
निवृति छन्दसे नमः मुखे।<br>
श्री ज्येष्ठा धूमावती देवतायै नमः हृदि।<br>
धूं बीजाय नमः गुह्ये ।<br>
स्वाहा शक्तये नमः पादयोः।<br>
धूं कीलकाय नमः नाभौ।<br>
विनियोगाय नमः सर्वांगे।

कर-न्यासः-

ॐ धां अंगुष्ठाभ्यां नमः।<br>
ॐ धीं शिरसे स्वाहा।

ॐ धूं शिखायै वषट्।
ॐ धैं कवचाय हुम्।
ॐ धौं नेत्र-त्रयाय वौषट्ं
ॐ धः अस्त्राय फट्।

ध्यान

विवर्णा चंचला कृष्णा दीर्घां मलिनाम्बरा।
विमुक्त कुंतला रूक्षा विधवा विरल द्विजा।।
काक-ध्वज-रथारूढ़ा विलम्बित पयोधरा।
शूर्म हस्ताति-रूक्षाक्षी धूमहस्ता वरान्विता।।
प्रबद्ध-घोषा तु भृशं कुटिला कुटिलेक्षणा।
क्षुत्पिपासार्दिता नित्य भयदा कलहास्पदा।।

अर्थात्- भगवती धूमावती का स्वरूप विवर्ण है, चंचल है और लम्बा शरीर है। मैले और फटे हुए वस्त्र हैं, उनका विधवाओं के समान वेश है तथा खुले हुए और रूखे केश हैं। वे कौए की ध्वजा वाले रथ में बैठी हैं। ढीले-ढाले लटके हुए स्तन और उनकी दंतावली विरल है, सूप उनके हाथ में है तथा रूखे नेत्र हैं। दरिद्रता की देवी भक्तों को वर तथा अभय मुद्रा में बैठी हैं। रोग, शोक, कलह तथा दरिद्रता के नाश के लिए मां धूमावती का ध्यान व उन्हें नमस्कार करता हॅू।

इस प्रकार ध्यान करने के उपरान्त मंत्र जप करें।

मूल मन्त्रः- धूं धूं धूमावती ठः ठः ।।

इसके अतिरिक्त उनका एक अन्य मंत्र भी है, जो बहुत अधिक प्रभावी है-

ॐ धूं धूं धूमावति आपद् उद्धारणाय कुरू-कुरू स्वाहा ।।

..............................................................

## स्वामी-वश्यकरी शत्रु-विध्वंसिनी स्तोत्र

भगवती वैष्णवी के इस स्तोत्र का पाठ उस सेवक को करना चाहिए जिसका स्वामी दुष्ट, क्रोधी, लालची व दुराचारी हो। इस स्तोत्र का पाठ ऐसी स्थिति में भी किया जा सकता है, जब वह आपकी सेवाएं समाप्त करने जा रहा हो अथवा जान-बूझकर आपका प्रमोशन ना कर रहा हो। यंहा स्वामी से तात्पर्य राजकीय अथवा निजि कम्पनियों के अधिकारियों से भी है। इस स्तोत्र के पाठ से साधक के शत्रुओं का भी नाश होता है।

विनियोगः- ॐ अस्य श्री स्वामिवश्यकरी शत्रुविध्वंसिनी स्तोत्र मंत्रस्य पिप्पलायन ऋषिः, अनुष्टुप छन्दः, श्रीरामचन्द्रो देवता, मम स्वामी-प्रीत्यर्थं मत् सकाशात् शत्रोः पिशाचवत् पलायनार्थे जपे विनियोगः।

इसके उपरान्त षडंग-न्यास करें-

ॐ रां अंगुष्ठाभ्यां नमः।<br>
ॐ रीं तर्जनीभ्यां नमः।<br>
ॐ रूं मध्यमाभ्यां नमः।<br>
ॐ रैं अनामिकाभ्यां नमः।<br>
ॐ रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः।<br>
ॐ रं अस्त्राय फट्।

इसके उपरान्त ध्यान करें-

### ध्यान

ॐ कालाम्भोधर कांतिकायमनसं वीरासनाध्यासितम्<br>
मुद्रां ज्ञानमयी दधानमपरां हस्ताम्बुजे जानुनी।<br>
सीतां पार्श्वगतां शिरोरूहकरां विद्युन्निमं राघवम्।<br>
पश्यन्तीं मुकुटं गदादिविविधं कल्पोज्ज्वलांगीं भजे।।

### स्तोत्र

ॐ स्वामी-वश्य-करी देवी प्रीति-वृद्धि-करी मम।<br>
शत्रु-विध्वंसिनी रौद्री त्रिशिरा सा विलोचनी।।१।।<br>
अग्निर्ज्वाला रौद्रमुखी घोरदंष्ट्रा त्रिशूलिनी।<br>
दिगंबरी मुक्तकेशी रणपाणिर्महोदरी ।।२।।

एकराड् वैष्णवी घोरे शत्रु-मुद्दिश्य ते   विषम्।
प्रभु-मुद्दिश्य पीयूषं प्रसादादस्तु ते   सदा ।।३।।

००००००००००००००००

( साधक को इस स्तोत्र का तीन हजार की सख्या में अनुष्ठान लेकर पाठ करना चाहिए, तभी कार्य सिद्ध होता है।)

..............................

श्री शरभ शालुवराज प्रयोग

श्री शरभ शालुवराज का वर्णन श्री शिव पुराण में आया है। इन्हें पक्षिराज, आकाश भैरव आदि नामों से भी जाना जाता है। इस सम्बन्ध में काफी समय पूर्व एक ग्रंथ प्रकाशित हुआ था, जिसका नाम था- आकाश भैरव कल्प । इस ग्रंथ की मैंने काफी खोज की परन्तु यह उपलब्ध नहीं हो सका। यदि किसी सज्जन के पास यह प्रति उपलब्ध हो तो कृपया अवगत कराने का कष्ट करें।

श्री शिव पुराण के अनुसार जिस समय नृसिंह भगवान ने हिरण्यकश्यपु को मार डाला तो उन्हें कुछ घमंड हो गया और प्रजा व देवता उनसे दुखी हो गये। उन्होंने भगवान नृसिंह की प्रार्थना भी की लेकिन उन्होंने अपने अत्याचार जारी रखे। अन्त में सब देवता लोग भगवान शिव के पास गये और उन्हें अपनी व्यथा बतायी। तब भगवान शिव ने अपना ऐसा स्वरूप बनाया जो एक ऐसे पक्षी का था, जिसका मुख उल्लू के समान था। उसके तीनों नेत्रों में अग्नि, सूर्य और चन्द्रमा का निवास था। उसका धड मनुष्य के समान था जो अपने चार हाथों में विशेष आयुध धारण किये हुए था। उसके नाखून वज्र के समान तीखे और उसके दो पंखों में मां काली और दुर्गा का निवास था। उसके हृदय में जठरानल और पेट में बडवानल जैसी भयंकर अग्नियों का निवास था, उसकी कमर के बाद का भाग किसी हिरण के समान एवं उसकी पूंछ किसी उग्र सिंह के समान लम्बी थी, उसके उरू में बीमारी और मृत्यु की उपस्थिति थी। भगवान शिव के ऐसे स्वरूप ने भगवान नृसिंह को चोंच मारकर मूर्छित कर दिया, अपनी पूंछ से भगवान नृसिंह के दोनों पैर बांध दिये, अपने दोनों पिछले पद भगवान नृसिंह के पैरों पर रखें और अपने अग्रपादों को नृसिंह देव की छाती पर और अपने हाथों से नृसिंह भगवान के हाथों को पकडकर आकाश में ले गये और उस समय निसहाय होकर भगवान नृसिंह अर्थात भगवान विष्णु ने उनकी स्तुति की और अपने स्वरूप का विसर्जन किया तब भगवान शिव

ने प्रसन्न होकर उन्हें मुक्त किया और भगवान शिव के आशीर्वाद से उन्होनें अपना स्वरूप धारण किया।

यह बताना मेरा कर्तव्य है कि भगवान शरभ शालुव राज का प्रयोग भगवान नृसिंह से कई गुना अधिक घातक है। जो व्यक्ति इसके प्रयोग की कामना करता है, उसे उच्च्व कोटि का साधक होना अत्यावश्यक है। यदि कोई व्यक्ति इस शक्ति का साधन करना चाहता है तो उसे आत्मरक्षार्थ कवच एवं भगवान महामृत्युंजय मंत्र का प्रयोग करना चाहिए। इसके साथ-2 यह ध्यान रखना परमावश्यक है कि जंहा यह प्रयोग किया जाये, वंहा भगवान विष्णु की मूर्ति अथवा विग्रह नहीं होना चाहिए।

अपने किसी शिष्य के अनुरोध पर मैं यह शत्रु निग्रह प्रयोग यंहा दे रहा हूँ, जिसे श्री आकाश भैरव चित्रमाला मंत्र के नाम से जाना जाता है। अपने शत्रुओं के नाश के लिए यह प्रयोग किया जाता है। इसे आरम्भ करने से पूर्व अपने गुरूदेव एवं इष्टदेवता का ध्यान-पूजन कर निम्नांकित मंत्र के 108 पाठ करें। सामान्य कार्य सम्पादन के लिए 7 पाठ ही पर्याप्त हैं।

सर्व प्रथम अपने दायें हाथ में जल लेकर विनियोग करें, यथाः-

विनियोगः- ॐ अस्य श्री आकाशभैरवस्य चित्रमाला नाम मंत्रस्य श्री आनन्द भैरव ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्री आकाश भैरव देवता, ह्रीं बीजं, हुं शक्तिः, मम अमुक नामकं शत्रु विनाशार्थे जपे विनियोगः।

हाथ का जल भूमि पर छोड दें। इसके बाद ऋष्यादि न्यास करेंः-

ॐ श्री आनन्द भैरव ऋषये नमः शिरसि, ॐ गायत्री छन्दसे नमः मुखे, ॐ आकाश भैरव देवतायै नमः हृदि, ॐ ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये, ॐ हुं शक्तयै नमः पादयोः, ॐ मम अमुक नामकं शत्रु विनाशार्थे विनियोगाय नमः सर्वांगे।

इसके उपरान्त कर-न्यास करें-

ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा, ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां वषट्,
ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां हुं, ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्, ॐ ह्रः करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्।

इसके बाद अंग न्यास करेंः-

ॐ ह्रां हृदयाय नमः, ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा, ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां वषट्, ॐ ह्रैं कवचाय हुं, ॐ ह्रौं नेत्र-त्रयाय-वौषट्, ॐ ह्रः अस्त्राय फट्।

न्यास आदि करने के उपरान्त साधक को निम्नवत् ध्यान करना चाहिए-

ध्यान

सहस्रपाणि-पद-वक्त्रं, सहस्त्र-त्रय लोचनम् ।
सर्वाभिष्ट प्रदं देवं, स्मरेद् आकाश-भैरवम्।।

।। माला मंत्र।।

ॐ नमो भगवते आकाश भैरवाय निखिल-लोकप्रियाय प्रणत जन-परिताप-विमोचनाय सकल भूत निवारणाय सर्वाभिष्ट प्रदाय नित्याय सच्चिदानन्द-विग्रहाय सहस्त्र बाहवे सहस्त्र मुखाय सहस्त्र त्रिलोचनाय सहस्त्र चरणाय करालाय अखिलरिपु संहार कारणाय अनेक कोटि ब्रह्मकपाल माला अलंकृताय नर रूधिर मांस भक्षणाय महा बल पराक्रमाय महा दन्तराय विष विमोचनाय पर मत्रं तंत्र यंत्र विद्या विच्छेदनाय प्रसन्न वदनाम्बुजाय ऐह्येहि आगच्छागच्छ ममाभीष्टं आकर्षय आकर्षय आवेशय आवेशय मोहय मोहय भ्रामय भ्रामय द्रावय द्रावय तापय तापय सिद्धय सिद्धय बंधय बंधय भाषय भाषय क्षोभय-क्षोभय भूत-प्रेतादि-पिशाचान् मर्दय-मर्दय कुर्दम-कुर्दम पाटय-पाटय मोटय-मोटय गुम्फय-गुम्फय कम्पय-कम्पय ताडय-ताडय त्रोटय-त्रोटय भेदय-भेदय छेदय-छेदय चण्ड-वातांति-वेगाय सन्तत-गम्भीर-विजृम्भणाय संकर्षय-संकर्षय संक्रामय-संक्रामय प्रवेशय-प्रवेशय स्तोभय-स्तोभय स्तंभय-स्तंभय तोदय-तोदय खेदय-खेदय तर्जय-तर्जय गर्जय-गर्जय नादय-नादय रोदय-रोदय घातय-घातय वेतय-वेतय सकल रिपु-जनान्छिंदि-छिंदि भिन्दय-भिन्दय अन्धय-अन्धय रून्धय-रून्धय नर्दय-नर्दय बंधय-बंधय श्रीं ह्रीं क्लीं कल्याण-कारणाय श्मशानानंद महाभोग-प्रियाय देवदत्तं (शत्रु का नाम लें) आनय-आनय दूनय-दूनय केलय-केलय मेलय-मेलय प्रपन्न वत्सलाय प्रति वदन दहनामृत किरण नयनाय सहस्त्र कोटि वेताल परिवृताय मम रिपून् उच्चाटय-उच्चाटय नेपय-नेपय तापय-तापय सेचय-सेचय मोचय-मोचय लोटय-लोटय स्फोटय-स्फोटय ग्रहण-ग्रहण अन्नत-वासुकी-तक्षक कर्कोटक -पद्म-महापद्म-शंख-गुलिक-महानाग भूषणाय स्थावर-जंगमानां विषं नाशय-नाशय प्राशय-प्राशय भस्मी-कुरू भस्मी-कुरू भक्तजन-वल्लभाय सर्व-स्थिति-संहारकारणाय कथय-कथय सर्व-शत्रून उद्रेकय-उद्रेकय विद्वेषय-विद्वेषय उत्सादय-उत्सादय बाधय-बाधय साधय-साधय दह-दह पच-पच शोषय-शोषय पोषय-पोषय दूरय-दूरय मारय-मारय भक्षय-भक्षय शिक्षय-शिक्षय समस्त भूतं शिक्षय-शिक्षय श्रीं ह्रीं क्लीं क्ष्म्रयैं अनवरत-ताण्डवाय आपद-उद्धारणाय साधु-जनान् तोषय-तोषय भूषय-भूषय पालय-पालय शीलय-शीलय काम-क्रोध-लोभ-मोह-मद-मात्सर्यं शमय-शमय दमय-दमय त्रासय-त्रासय शासय-शासय क्षिति-जल-दहन-मरूत-गगन-तरणि-सोमात्म-शरीराय शम-दमोपरति तितिक्षा-समाधान-श्रद्धां दापय-दापय प्रापय-प्रापय विघ्न-विच्छेदनं कुरू-कुरू रक्ष-रक्ष क्ष्म्रयै क्लीं ह्रीं श्रीं ब्रह्मणे स्वाहा।

++++++++

उपरोक्त पाठ करने से पूर्व अपने गुरूदेव का ध्यान करके अपने इष्ट देवता का पूजन करने के बाद उक्त माला मत्रं का 101 बार पाठ करने से समस्त कार्य सिद्ध होते हैं। सामान्य कार्य हेतु मात्र 7 पाठ ही पर्याप्त हैं ।

........................................

Sarv siddhi prada Bagala ashtottar shatnam stotram.

Brahmaastr-rupini devi mata shri Bagalamukhi,
Chichchhaktir-gyan-roopa cha brahmaanand-pradaayini.
Mahavidya maha-laxmi shrimat-tripur-sundari,
Bhuvneshi jaganmata parvati sarva-mangla.
Lalita Bhairvi Shanta Annapurna Kuleshwari,
Varahi Chhinnamasta cha Tara Kali Saraswati.
Jagat-pujya Maha-maya Kameshi Bhagmalini,
Daksh-putri Shivankastha Shiv-roopa Shiv-priya.
Sarv-sampat-kari devi sarv-lok-vashankari,
Ved-vidya Maha-pujya bhaktaa-dveshi bhayankari.
Stambh-roopa stambhini cha dusht-stambhan-karini,
Bhakt-priya maha-bhoga Shri-vidya Lalitambika.
Maina-putri shivaananda matangi Bhuvneshwari,
Naar-singhi Narendraa cha nrapa-arradhya Narottama.
Nagini nag-putri cha nag-raj-suta Uma,
Pitaamba peet-pushpa cha peet-vastr-priya shubha.
Peet-gandh-priya Rama Peet-ratnaarchita shiva,
Ardh-chandr-dhari devi Gada-mudgar-dhaarini.
Savitri tripada shuddha sadyo-raag-vivardhini,
Vishnu-roopa Jagan-moha Brahm-roopa Hari-priya.
Rudr-roopa rudr-shaktish-chinmayi bhakt-vatsalaa,
Lok-mata shiva sandhya Shiv-pujan-tatparaa.
Dhanaa-dhyaksha dhaneshi cha dharmdaa dhanda dhanaa,
Chand-darp-hari devi Shumbh-asur-nivharini.
Raj-rajeshwari devi Mahishasur-mardini,
Madhu-Kaitabh-hantri cha Rakt-been-vinaashini.
Dhumraksh-daitya-hantri cha Bhandaasur-vinashini,
Renu-putri Maha-maya Bhramari Bhramra-ambika.
Jvalamukshi Bhar-kali Bagala Shatru-vinaashini,

Indraani Indra-pujya cha guhya-mata guneshvari,
Vajr-paash-dharaa devi jivha-mudgar-dhaarini,
Bhakta-anand-kari devi Bagala Parmeshwari.

Shruti-phal (Result).

Ashtottar-shatam naamnam Bagala-yaastu yah Patthet,
Ripu-baadha-vinirmuktah Laxmi-sthairyam-vaapnuyaat.
Bhoot-pret-pishaachaascha grah-peeda-nivarnnam,
Rajano vash-maayanti sarv-aishvaryam-cha vindati.
Naana-vidya cha labhatay rajyam praapnoti-nishchitam,
Bhukti-muktim-vaapnoti sakshaat shiv-samo bhavet.
(This stotram belongs to Rudryaamalay Tantra)

## महाकाली शत्रु संहारक प्रयोग

**एक** व्यक्ति के चाचा ने उसकी सारी सम्पत्ति हड़प ली, और उसे घर से निकाल दिया। उस व्यक्ति ने मां काली के मन्दिर में २१ दिनों तक ११ मालाएं निम्नलिखित साबर मन्त्र की पूर्ण की । कुछ ही दिनों के अन्तराल से उसके चाचा कुसंग में फंसकर दीन-हीन हो गये और साथ ही साथ उनके पैरों में फोड़े हो गये जिसके उसके दोनों पैर गल गये और कुछ समय बाद ही वह परमलोक का वासी हो गया ।

इसका नित्यप्रति कम से से १०८ पाठ सरसों के तेल का दीपक जलाकर करें। पाठ करते समय आपका स्वर दीन भाव से युक्त होना चाहिए और पुकार हृदय से।

## पाठ

तुझसे अरज करूं, ऐ हो मात कालिका तुझसे अरज करूं।
मोहि जो सतावे, सुख पावै ना आठों याम वाको तुम भक्ष लेओ, ऐ हो।
...............मेरी मात कालिका! तुझसे अरज करूं ।
हाड़ तो हविष लेओ, खाल को खविष लेओ, गले पहनो मात! आंतन की जालिका........ तुझसे अरज करूं।
क्रोध करी धाओ, शीघ्र धाओ मात! मेरे शत्रु ;अमुक को गिराओ मात! वाके रूधिर से नहाओ, टीका लगाओ रक्त लाली का....तुझसे अरज करूं ।
देखके स्वरूप तेरा, योगिनी प्रसन्न होएं। लागे वाके घाव, पाके वाके पावं!
वाको अंगहू पिराए, वाको बालक मर जाये....मेरा दुख न सहो अब मात कालिका...... तुझसे अरज करूं ।

तुझसे अरज कंरू मेरी मात कालिका, तुझसे अरज करूं ।

## श्री लक्ष्मी आराधना

सम्पूर्ण विश्व में प्राणी यदि सबसे अधिक किसी की कामना करता है तो वह है-धन । धन की प्राप्ति के लिए व्यक्ति कुछ भी करने के लिए तत्पर रहता ष्प्राप्त होता है, वह सर्वशक्तिमान कहलाने के स्तर पर पंहुचता है। जिस पर लक्ष्मी की कृपा बरसती है, संसार उसके आगे नतमस्तक हो जाता है।

तन्त्र शास्त्रों के अनुसार दस महाविद्याओं में 'श्री कमला' अन्तिम दसवीं महाविद्या कही जाती हैं। इन्हीं के द्वारा विश्व का पालन होता है। श्रीमद् भागवत के आठवें स्कन्ध के आठवें अध्याय में इनके उद्भव की कथा आयी है। देवताओं और राक्षसों के द्वारा अमृत-प्राप्ति के लिए किये समुद्र-मंथन के परिणाम स्वरूप इनका उद्भव हुआ और इन्होंने भगवान विष्णु का वरण अपने पति के रूप में किया। इस प्रकार ये वैष्णवी शक्ति है और भगवान विष्णु की लीला सहचरी हैं, इस प्रकार इनकी उपासना जगदाधार-शक्ति की उपासना है। देवता, मानव, सिद्ध, गन्धर्व और दानव - सभी इनकी कृपा के बिना पंगु है।

लक्ष्मी तन्त्र के अनुसार इनके दस मुख्य नाम हैं - महामाया, महाकाली, महामारी, क्षुधा, तृष्णा, निद्रा, कृष्णा, एक-वीरा, काल-रात्रि एवं दुरत्यया। जो भी भगवती के इन दशों नामों का भक्ति-पूर्वक स्मरण करता है, उसे सभी प्रकार से सुख, शान्ति की प्राप्ति होती है। स्थिर सम्पत्ति, उत्तम नारी एवं पुत्रों की प्राप्ति हेतु इनकी उपासना करनी चाहिए।

साधकों के लिए मैं यंहा मां लक्ष्मी के कुछ अति विशिष्ट एवं गोपनीय प्रयोग प्रस्तुत कर रहा हूँ। इनमें सबसे पहले लक्ष्मी-पंज्र-स्तोत्र का प्रस्तुतीकरण है। अर्थाभाव से जूझ रहे साधकों को निम्नवत् इसका प्रयोग करना चाहिए -

- **बेल-वृक्ष के पत्ते के पृष्ठ भाग पर कमला-यन्त्र बनाकर उसके छहों कोणों में मंत्राक्षर लिखकर उसका पूजन करें, फिर भगवती का पूजन करके इस स्तोत्र का पाठ करें।**

- **विष्णु-सहस्त्र नाम का पाठ करके इस स्तोत्र का पाठ करें। इसके बाद पुनः विष्णु-सहस्त्र-नाम का एक पाठ करें। इस क्रम को पचास हजार की सख्ंया में करने से साधक को महालक्ष्मी की पूर्ण कृपा प्राप्त होती है। इसकी आवृति संकल्प के साथ करें।**

- **यदि उपरोक्तानुसार पाठ करने में सक्षम न हों तो कम से कम एक क्रम नित्य प्रति करें।**

**साधना-काल में पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए फलाहार अथवा शुद्ध एवं सात्विक भोजन करें।**

**प्रारम्भिक कर्म के उपरांत हाथ में जल लेकर विनियोग करें:-**

<u>विनियोग</u> :- **अस्य श्री लक्ष्मी-पंजर-महा मंत्रस्य श्री ब्रह्मा ऋषिः, पंक्तिश्छन्दः, श्री महालक्ष्मीः देवता, श्रीं बीजं, स्वाहा शक्तिः, श्रिये कीलकं, मम सर्वाभिष्ट सिद्धयर्थे श्री लक्ष्मी-पंजर-स्तोत्र पाठे विनियोगः। विनियोग करने के उपरांत हाथ में लिया जल भूमि पर छोड़ दें।इसके बाद ऋष्यादि न्यास करें-**

<u>ऋबयादि-न्यास</u> :- ॐ श्रीं ब्रह्म ऋषये नमः शिरसि। पंक्तिश्छन्दसे नमः मुखे। श्री महा लक्ष्मी देवतायै नमः हृदि। श्रीं बीजाय नमः गुह्ये। स्वाहा शक्तये नमः नाभौ। श्रिये कीलकाय नमः पादयोः। मम सर्वाभीष्ट सिद्धयर्थे श्री लक्ष्मी-पंजर-स्तोत्र पाठे विनियोगाय नमः सर्वांगे।

इसके बाद कर-न्यास करें -

<u>कर-न्यास</u> :-

ॐ श्रीं ह्रीं विष्णु-वल्लभायै अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ श्रीं ह्रीं जगज्जनन्यै तर्जनीभ्यां नमः। ॐ श्रीं ह्रीं सिद्धि सेवितायै मध्यमाभ्यां नमः। ॐ श्रीं ह्रीं सिद्धि-दायै अनामिकाभ्यां नमः। ॐ श्रीं ह्रीं वांछित-पूरिकायै

कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं श्रिये नमः स्वाहा करतल-कर-पृष्ठाभ्यां नमः ।

कर न्यास के उपरान्त अंग न्यास करें, यथा-

अंग-न्यास :-

ॐ श्रीं ह्रीं विष्णु-वल्लभायै हृदयाय नमः। ॐ श्रीं ह्रीं जगज्जनन्यै शिरसे स्वाहा। ॐ श्रीं ह्रीं सिद्धि-सेवितायै शिखायै वषट्। ॐ श्रीं ह्रीं सिद्धि-दायै कवचाय हुम्। ॐ श्रीं ह्रीं वांछित-पूरिकायै नेत्र-त्रयाय वौषट्। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं श्रिये नमः स्वाहा अस्त्राय फट्।

न्यास क्रिया पूर्ण कर लेने के उपरान्त भगवती का ध्यान करें-

### ध्यान

ॐ_वंदे लक्ष्मीं पर-शिव-मयीं, शुद्ध-जाम्बू-नदाभाम्।
तेजोरूपां कनक-वसनां, सर्व भूषोज्ज्वलांगीम्।।
बीजापूरं कनक-कलशं, हेमपद्मं_दधानामाद्याम्।
शक्तिं सकल-जननीं, विष्णु-वामांक-संस्थाम्।।
शरणं त्वां प्रपन्नोऽष्मि, महा-लक्ष्मि! हरि-प्रिये! ।
प्रसादं कुरू देवेशि!, मयि दुष्टेऽपराधिनि।।
कोटि-कन्दर्प- लावण्यां, सौन्दर्यैक-स्वरूपताम्।
सर्व-मंगल-मांगल्यां, श्री रामां शरणं ब्रजे।।

## पाठ

ॐ श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं नमो विष्णु-वल्लभायै, महा-मायायै कं खं गं घं ङं नमस्ते नमस्ते।

मां पाहि-पाहि रक्ष-रक्ष धनं धान्यं श्रियम्, समृद्धिं देहि-देहि श्रीं श्रिये नमः स्वाहा।।

ॐ श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं नमो जगज्जनन्यै, वात्सल्य-निधये चं छं जं झं ञं नमस्ते नमस्ते।

मां पाहि-पाहि रक्ष-रक्ष श्रियं प्रतिष्ठाम्, वाक-सिद्धिं मे देहि-देहि श्रीं श्रिये नमः स्वाहा।।

ॐ श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं नमः सिद्धि-सेवितायै,
सकलाभिष्ट-दान-दीक्षितायै टं ठं डं ढं णं नमस्ते नमस्ते ।
मां पाहि-पाहि रक्ष-रक्ष सर्वतोऽभयं,
देहि-देहि श्रीं श्रिये नमः स्वाहा।।

ॐ श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं नमः सिद्धि-दायै,
महा-अचिन्त्य-शक्तिकायै तं थं दं धं नं नमस्ते नमस्ते।
मां पाहि-पाहि रक्ष-रक्ष मे, सर्वाभीष्ट-सिद्धिम् -
देहि-देहि श्रीं श्रिये नमः स्वाहा।।

ॐ श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं नमो वांछित-पूरिकायै,
सर्व-सिद्धि-मूल-भूतायै पं फं बं भं मं नमस्ते नमस्ते।
मां पाहि-पाहि रक्ष-रक्ष मे मनो-वांछिताम्,
सर्वार्थ-भूतां सिद्धिं देहि-देहि श्रीं श्रिये नमः स्वाहा।

ॐ श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं कमले कमलालये मह्यम्,
प्रसीद-प्रसीद महा-लक्ष्मि! तुभ्यं नमो नमस्ते।
जगद्धितायै यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं नमस्ते नमस्ते,
मां पाहि-पाहि रक्ष-रक्ष मे वश्याकर्षण-मोहन-
स्तम्भनोच्चाटन-ताडनाचिन्त्य-शक्ति-वैभवम्,
देहि-देहि श्रीं श्रिये नमः स्वाहा।।

## श्री लक्ष्मी माला-मंत्र

श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं धात्र्यै नमः स्वाहा ।
श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं श्रीं बीज-रूपायै नमः स्वाहा ।
श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं विष्णु-वल्लभायै नमः स्वाहा ।
श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं सिद्धयै नमः स्वाहा ।
श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं बुद्धयै नमः स्वाहा ।
श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं धृत्यै नमः स्वाहा ।
श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं मत्यै नमः स्वाहा ।

श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं कान्त्यै नमः स्वाहा ।
श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं शान्त्यै नमः स्वाहा ।
श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं सर्वतोभद्ररूपायै नमः स्वाहा ।
श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं श्रीं श्रिये नमः स्वाहा ।

नमो भगवति ! ब्रह्मादि-वेद-मातर्वेदोद्भवे ! वेद-गर्भे ! सर्व-शक्ति-शिरोमणे श्री हरि-वल्लभे ! ममाभीष्ट पूरय-पूरय मां सिद्धि-भाजनं कुरू-कुरू अभयं कुरू-कुरू सर्व-कार्येषु ज्वल-ज्वल प्रज्वल-प्रज्वल मे सुप्त-शक्तिं दीपय-दीपय ममाहितान् नाशय-नाशय असाध्य-कार्यं साधय-साधय ह्रीं ह्रीं ह्रीं ग्लौं ग्लौं ग्लौं श्रीं श्रिये नमः स्वाहा ।

नोटः- इस माला मंत्र का १०८ बार जप करें। विशेष प्रभाव के लिए इसका हवन भी किया जा सकता है । हवन में गुग्गुल, शहद, कमल बीज, काले तिल, बूरा, केशर, माल पुए, खीर, शुद्ध घी, पंच मेवा आदि का प्रयोग किया जाता है।

## श्री लक्ष्मी-कवच

शिरो मे रक्षताद् देवी, पद्मा पंकज-धारिणी ।
भालं पातु जगन्माता, लक्ष्मीः पद्मालया च मे ।।
मुखं पायान्महा-माया, दृशौ मे भृगु-कन्यका ।
घ्राणं सिन्धु-सुता पायान् नेत्रे मे विष्णु-वल्लभा ।।
कण्ठं रक्षतु कौमारी, स्कन्धौ पातु हरि-प्रिया ।
हृदयं मे सदा रक्षेत् सर्व-शक्ति-विधायिनी ।।
नाभिं सर्वेश्वरी पायात् सर्व-भूतालया च मे ।
कटिं च कमला पातु, ऊरू ब्रह्मादि-देवता ।।
जंघे जगन्मयी रक्षेत्, पादौ सर्व-सुखावहा।
श्री वीज-वास-निरता, सर्वांगे जनकात्मजा ।।
सर्वतोभद्र-रूपा मामव्याद् दिक्षु विदिक्षु च ।
विषमे संगटे दुर्गे, पातु मां व्योम-वासिनी ।।

## पुत्री के शीघ्र विवाह हेतु प्रयोग

बच्चों के शीघ्र विवाह की कामना प्रत्येक माता-पिता की होती है। विशेबातः कन्याओं के विवाह की चिन्ता  तो बनी ही रहती है। लड़कियों के विवाह में विलम्ब के अनेक कारण हो सकते हैं जिनमें मुख्यतः निम्नवत् हैंः:-

- कभी-कभी कन्या को मंगल का दोष होता है, जिस कारण उसका विवाह होता तो है, लेकिन देर से होता है।
- कन्या के जन्मांग में लग्न-योग नहीं होता या फिर बहुत निर्बल होता है।
- कन्या के जन्मांग में काल-सर्प दोष अथवा अर्ध काल-सर्प दोष होता है।
- ऐसी स्थितियों में उनका निवारण किसी योग्य पंडित से कराना चाहिए । लेकिन यदि किन्हीं अपरिहार्य कारणों से ऐसा ना कर सकें तो पूर्ण श्रद्धा एवं विश्वास के साथ निम्नलिखित उपायों में से कोई एक उपाय करें :

मंगल ग्रह की अशुभता में :

- किसी भी शुक्ल पक्ष के मंगलवार के दिन किसी चौकोर लाल कपड़े में साबुत मसूर, लाल चंदन, लाल पुष्प, लाल रंग का कोई मिष्ठान एवं एक रूपया बांधकर नदी में बहा दें । ऐसा करने से मंगल दोष का परिहार होता है।
- अपने पूजा स्थल में मंगल ग्रह का यंत्र स्थापित करके उसके समक्ष ‘ ॐ भौमाय नमः’ अथवा ‘ ॐ क्रां क्रीं

क्रौं सः भौमाय नमः' का जप प्रतिदिन मूंगे की माला से १०८ बार जप करें।

- कन्या को पीला पुखराज ५ रत्ती या सवा तीन रत्ती का धारण करना चाहिए।
- ५ या ६ रत्ती के टोपाज की अंगूठी ६० प्रतिशत चांदी, ३० प्रतिशत तांबा और १० प्रतिशत सोना मिलाकर बनवाएं।

इसके अतिरिक्त निम्नांकित उपाय भी कन्या के शीघ्र विवाह हेतु करणीय हैं:-

प्रयोग संख्याः-१

मंत्रः- शं शंकराय सकल जन्मार्जित पाप विध्वंसनाय पुरूषार्थ चतुष्टय लाभाय च पतिं मे देहि कुरू-कुरू स्वाहा ।

विधानः- सर्व प्रथम अपने पूजन-स्थल में भगवान शिव और मां पार्वती जी के चित्र अथवा मूर्ति की स्थापना करें। इसके बाद मिट्‌टी का एक कूंडा लेकर उसमें मिटटी भरें और केले का एक छोटा सा पौधा उसमें बो दें और उसे भगवान शिव और पार्वती के सामने रख दें । नित्य प्रति उसमें जल दें।अब उस पौधे को ११ बार सूत के कच्चे डोरे से लपेटकर उसका पूजन करें। तदोपरान्त कन्या उपरोक्त मंत्र की तीन माला जप करे। जप करने के बाद पौधे की १२ बार परिक्रमा करे। ऐसा करने से ग्रहों का कुप्रभाव भी नष्ट होगा और बांधाए भी नष्ट होंगी। जब तक परिणाम न मिले तब तक ऐसा ही करते रहें। भगवान शिव और मां पार्वती की कृपा से निश्चित ही सफलता प्राप्त होगी ।

प्रयोग-२

मंत्रः-

शरणागत-दीनार्त-परित्राण-परायणे !
सर्वस्यार्ति-हरे देवि! नारायणि नमोऽस्तु ते।।

यह प्रयोग २७ मंगलवार तक करना होता है। जिस कन्या के विवाह में निरन्तर बाधाएं आ रही हों, रिश्ते की बात बनते-बनते बिगड़ जाती हो या फिर अन्य कोई भी ऐसा कारण बन जाता हो तो कन्या को चाहिए कि वह इस प्रयोग को पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ करे। कन्या को चाहिए कि वह मंगलवार के दिन एक बार भोजन करे, गाय का दूध और फल ग्रहण करे और थोड़ा सा गुड़ और एक रोटी गाय को भी खिलाए।

विधान

मां दुर्गा के चित्र अथवा मूर्ति के सामने एक लकड़ी की चौकी रखें। लगभग १०० ग्राम चावल लेकर उनमें रोली मिलाकर, उन्हें उस चौकी पर रख दें। चावलों के ऊपर घी का दीपक रखकर जलाएं। इसके बाद दीपक की लौ पर ध्यान लगाकर कन्या उक्त मंत्र का १०८ बार जप करे। यह क्रिया प्रति मंगलवार को प्रातः काल में करनी होती है। जप आरम्भ करने से पहले कन्या को दुर्गा जी को तथा स्वयं को रोली, जिसे कुंकुम भी कहा जाता है, का टीका लगाना चाहिए। जप समाप्त होने के बाद जब दीपक बुझ जाये तो चौकी पर रखे गये चावलों को बाहर चबूतरे आदि पर डाल दें।

प्रयोग काल में ही अथवा प्रयोग के उपरान्त कन्या के लिए निश्चित रूप से अच्छे घरों से रिश्ते आयेगें। यदि इसमें थोडा विलम्ब भी हो तो प्रयोग बन्द न करें। उचित समय आने पर समस्त कार्य अच्छे से सम्पन्न होगा ।

प्रयोग-३

भगवान शिव के अभिषेक के सम्बन्ध में सभी लोग जानते हैं कि यह कितना श्रेष्ठ विधान माना जाता है। जिस प्रकार भगवान शिव अभिषेक से प्रसन्न होते हैं और इसका अनन्त फल प्राप्त होता है उसी प्रकार शीघ्र एवं श्रेष्ठ वर की प्राप्ति हेतु गणेश जी के तर्पण का विधान है जो इस प्रकार हैः-

सर्व प्रथम स्नानादि से निवृत होकर, एक अर्घ्य पात्र लेकर उसमें गंगाजल, सामान्य जल, चंदन-चूर्ण, गंध, केसर, सुगन्धित द्रव्य, अक्षत, दूर्वा एवं सुगन्धित पुष्प मिला दें। उसके उपरान्त किसी अन्य पात्र में गणेश जी का यंत्र अथवा मूर्ति स्थापित कर दें। फिर अपनी कामना व्यक्त करते हुए निम्नांकित मंत्र पढते हुए अर्घ्य पात्र में रखे गये जल से गणपति महाराज का तर्पण करेंः-

मंत्रः- श्रीं रति सहितं कामराजं तर्पयामि ।

यह प्रयोग शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथी से चतुर्दशी अर्थात ११ दिन तक प्रतिदिन १४४ बार किया जाता है।

वधु प्राप्ति हेतु लड़के भी इस प्रयोग को कर सकते हैं, लेकिन मंत्र में थोडा परिवर्तन हो जाता है, यथाः-

श्री कामराज सहितं रतिं तर्पयामि ।

---------------

## काल सर्प योगः कारण एवं निवारण

जब जन्म कुण्डली में राहु या केतु के मध्य समस्त ग्रह आ जाते हैं तो कालसर्प योग कहलाता है।

हमारे नक्षत्र मण्डल में सात ग्रहों का प्रत्यक्ष रूप से भौतिक आस्तित्व है, लेकिन राहु-केतु का कोई भौतिक आस्तित्व नहीं है। यही कारण है कि इन्हें छाया ग्रह कहा जाता है।

प्राचीन ग्रंथों के अनुसार राहु के पिता विपुचिति दानव थे और माता दानवराज हिरण्यकशिपु की पुत्री सिंहिका थी। समुद्र-मंथन के उपरान्त प्राप्त अमृत का छलपूर्वक पान करने के कारण भगवान विष्णु ने सुदर्शन चक्र से राहु का शिर काट दिया था, लेकिन चूंकि उसने अमृत पान कर लिया था इसलिए वह अमर हो गया । विवशतावश भगवान ने उस दानव के कटे शिर को राहु एवं धड़ को केतु के रूप में नौ ग्रहों में स्थान प्रदान किया।

यदि फलित ज्योतिष के अनुसार देखा जाये तो नैसर्गिक रूप से राहु और केतु, सूर्य और चन्द्रमा के शत्रु हैं। बुध, शुक्र और शनि राहु के मित्र हैं, जबकि गुरू सम तथा मंगल शत्रु हैं। इसी प्रकार केतु के मित्र हैं- शुक्र और मंगल । बुध और गुरू सम है और शनि इसके शत्रु हैं। कन्या राहु की उच्च राशि है और मिथुन में २० अंश का परमोच्च तथा धनु में २० अंश का परम नीच होता है। केतु की स्वराशि मीन है और यह धनु में ६ अंश का परमोच्च और मिथुन में ६ अंश का परमनीच होता है। अन्य ग्रहों के समान राहु-केतु की सातवीं दृष्टि नहीं होती, केवल पांचवी और नवीं दृष्टि होती है।

राहु-केतु की गति शूद्र, दिशा नैर्ऋत्य, पंचधातु, तमोगुणी, कषाय-रस, क्रमशः काला एवं धब्बेदार मिश्रित रंग माना गया है। राहु का रत्न गोमेद और केतु का रत्न लहसुनिया है।

राहु का प्रभाव शनि देवता के समान है, और इनका आघात एवं प्रहार अचूक एवं महाभयानक होता है।

राहु ग्रह घमंड, राजनीति, तस्करी, षड़यंत्र, शिकार, शराब, अपहरण, कुतर्क, दादागिरी, देश-निकाला, सर्प, हवा, मैथुन, म्लेच्छ, परनिंदा, कपट, गांजा-भांग, अफीम, सिगरेट, विद्रोह, दुर्गुण, मजदूर, सफाई, पैथोलोजिस्ट, गोबर, श्मशान, कर्मचारी, उल्टी, विषजन्यरोग, आदि का प्रतिनिधित्व करता है। जबकि केतु ग्रह जादू-टोना, इन्द्रजाल, चमत्कारी कार्य, गड़ा हुआ धन, अचानक भाग्योदय, वेद-शाास्त्रों का अधिनायक, चर्म रोग, गुप्त बल, वर्णशंकर, भूख से उत्पन्न कष्ट, दादी, नाना, सौतेला पिता, दत्तक पुत्र का प्रतिनिधित्व करता है।

इन दोनों छाया-ग्रहों का अपना प्रभाव नहीं होता बल्कि ये जिस ग्रह के साथ होते हैं उसी के स्वभाव के अनुसार फल प्रदान करते हैं। अकेले होने पर जिस ग्रह की राशि में होते हैं, उसी ग्रह का फल प्रदान करते हैं।

## कालसर्प योग का प्रभावः-

काल सर्प योग से प्रभावित जातक को अनेक प्रकार की मुसीबतें , कष्ट, अपमान, झेलने पड़ते हैं। वास्तविकता यह है कि ऐसे लोग जीवन तो जी रहे होते हैं, लेकिन अपने लिए नहीं बल्कि केवल दूसरों के लिए। ऐसे लोगों को हमेशा शारिरिक कष्ट लगा रहता है। पढाई में रूकावट, पैसे की बरबादी, विश्वासघात और गलत फहमी आदि होना इसकी पहचान मानी जाती है। इस योग के कारण अन्य खूब अच्छे-२ योग भी अपना पूर्ण फल प्रदान नहीं कर पाते। इस योग से प्रभावित जातक सदैव परेशान ही रहता है। उसकी विद्या-प्राप्ति में रूकावटें आती हैं, उसे शारिरिक कष्ट लगा रहता है, उसने जो विद्या प्राप्त की है, उसका समुचित उपयोग नही होता है।वह गलतफहमी का शिकार रहता है, उसके पैसे की बरबादी होती है और यहां तक भी होता है कि कभी-२ उसके पास पैसे का अम्बार लग जाता है, लेकिन कभी-२ वह एक रूपये के लिए भी मोहताज हो जाता है। उसे घर से बाहर रहना पड़ता है, मानसिक अशांति से जूझना पड़ता है , उसे धन-प्राप्ति नहीं होती, संतान की प्राप्ति उसे दूर का ख्वाब लगती है और उसका गृहस्थ जीवन भी कलह-युक्त हो जाता है।

- इस योग से प्रभावित जातक को निरंतर बुरे स्वप्न आते हैं और स्वप्न में सर्प दिखायी देते हैं। अकाल मृत्यु का डर, अथवा कुछ अशुभ होने की आशांका मन में समाई रहती है। ऐसा जातक पूरा मन लगाकर कार्य करता है परन्तु उसका फल उसे प्राप्त नहीं होता। वह जो भी कार्य करता है, उसका परिणाम उसे प्राप्त नहीं होता और यदि होता भी है तो बहुत देर से होता है । उसे जो पद-प्रतिष्ठा मिलनी चाहिए वह उसे नहीं मिलती और उसका श्रेय दूसरे ले जाते हैं। सामान्यतः ऐसे जातकों को मिलने वाले परिणाम निम्नवत् हो सकते हैंः-
- भाई-बंधु रिश्तेदार आदि धोखा देते हैं। भाईयों का सुख नहीं मिलता ।
- पत्नी को बार-बार गर्भ गिरने की समस्या आती है।

- ऐसा जातक आजीवन संघर्षरत रहता है। उसका भाग्य साथ नहीं देता।
- दैहिक एवं मानसिक कष्ट भोगने पड़ते हैं, स्वास्थय साथ नहीं देता।
- कार्य व्यवसाय में दिवाला निकल जाता है अथवा भारी क्षति उठानी पड़ती है।
- ऐसे जातकों की पैत्रिक सम्पत्ति नष्ट हो जाती है अथवा उसे ऐसी सम्पत्ति से वंचित कर दिया जाता है।
- घर में अकाल मृत्यु होती रहती है।
- संतान कष्ट होता है या फिर संतान का विवाह उचित समय पर नहीं होता है।
- अदालतों या थानों के चक्कर लगाने पड़ते है।
- ग्रह-क्लेश अथवा घर में कलह होती रहती है।
- पत्नी या पति अनुकूल नहीं मिलता।
- नौकरी अथवा व्यवसाय में बार-बार असफलता हाथ लगती है।
- मन अशांत रहता है और अज्ञात भय बना रहता है।
- संचित धन-सम्पदा का अचानक समाप्त हो जाना ।
- संतान सुख से असंतुष्टि, उनकी शिक्षा में बाधा आना अथवा संतान का जिद्दी एवं अनियंत्रित होना ।
- जल, नदी, तालाब आदि को देखकर भय लगना ।
- स्वयं के साथ दुर्घटनाएं घटित होना ।
- वायवी शक्तियों, शत्रुओं द्वारा किये गये अभिचार कर्मों से पीड़ित होना।

## काल-सर्प योग क्या है:-

पृथ्वी की दो प्रकार की गतियां होती हैं- दैनिक गति, जिसे परिभ्रमण एवं वार्षिक गति, जिसे परिक्रमण कहा जाता है। पृथ्वी का सूर्य की ओर घूमने का मार्ग तथा चन्द्र का पृथ्वी के चारों ओर घूमने का मार्ग अलग-अलग हैं। जंहा ये एक दूसरे को क्रास करते हैं, उसी छाया को राहु व केतु कहा जाता है। राहु व केतु की अपनी कोई राशि नहीं होती। राहु का जन्म नक्षत्र भरणी और केतु का आश्लेषा कहा गया है। भरणी का देवता काल व आश्लेषा का देवता सर्प हैं। इन्ही काल व सर्प के मिलने से 'कालसर्प योग' नामक योग उत्पन्न होता है। सर्प का मुख राहु तथा पूंछ केतु हैं।

कुण्डली में समस्त ग्रह एक भाव में आ सकते हैं लेकिन राहु व केतु कभी एक भाव में नहीं आ सकते। वे सदैव एक दूसरे से सातवे भाव अर्थात १८० अंश पर ही रहते है। यही कारण है कि सर्प के सिर वाले भाग को राहु व धड़ वाले भाग को केतु की संज्ञा दी जाती है।

राहु नागलोक का प्रतिनिधित्व करता है। जातक की मृत्यु होने के उपरान्त यदि उसकी वासना परिवार में ही अटकी रहती है तो वह नाग योनि में ही रहता है। वासनाओं के कारण जब उसका पुनः जन्म होगा तो उसकी कुण्डली में काल-सर्प योग होगा। इसके अतिरिक्त ज्योतिषिय ग्रंथो में अनेक प्रकार के शापों का वर्णन आता है, जिनमें- पूर्वजन्मकृत पितृशाप, गुरूशाप, पत्नीशाप, प्रेतशाप, सर्पशाप आदि प्रमुख हैं। जो जातक सर्पशाप से ग्रसित होता है, उसकी कुंडली में कालसर्प योग होता है।

- सामान्यतः करीब ५७६ प्रकार के कालसर्प योग बनते हैं, लेकिन यदि शनि से सम्बन्ध बनाकर पुष्टि करें तो हजारों प्रकार के कालसर्प योग बनते हैं। मुख्यतः यह योग दो प्रकार से बनता है। राहु के मुख की ओर से समस्त ग्रह आएं तो सम्मुख कालसर्प योग और राहु के दांयी ओर से समस्त ग्रह आएं तो उसे विपरीत काल सर्प योग कहा जाता है। इन्हे उदित एवं अनुदित भी कहा जाता है। उदित कालसर्प योग मुख की ओर से बनता है, जो बहुत कष्टप्रद होता है क्योंकि राहु सदैव वक्री होता है। इसकी अपेक्षा अनुदित कालसर्प योग कम कष्ट देने वाला होता है।

जब कोई ग्रह राहु केतु के साथ हो और राहु से कम अंशों पर हो तो वह कालसर्प योग कष्टदायक होता है, लेकिन यदि राहु से अधिक अंशों पर स्थित ग्रह साथ हो तो वह कालसर्प भंग योग की श्रेणी में आकर कम कष्टदायी हो जाता है।

कालसर्प योग को अशुभ योग माना जाता है लेकिन ऐसा नहीं है। कभी-कभी ऐसा योग जातक को बुलंदियों पर भी पहुंचा देता है। पं० जवाहरलाल नेहरू, सम्राट अकबर, राजीव गांधी, सचिन तेंदुलकर आदि इसके उदाहरण हैं। परन्तु यह योग कितना शुभ होगा और कितना अशुभ होगा, इसकी गणना जातक की कुंडली के गहन अध्ययन से ही संभव है।

वास्तविकता यह है कि ९० प्रतिशत व्यक्ति कालसर्प योग से प्रभावित होते हैं । जिनके भी जन्मांग में यह योग होता है उन्हें अनेक प्रकार के कष्ट, अपमान, मुसीबतें सहने पड़ते हैं। एक इस योग के कारण दूसरे अनेक अच्छे योग भी अपना फल प्रदान नहीं कर पाते हैं।

## कालसर्प योग के उपाय

१. राहु केतु के मंत्रों का जप करें -

राहु-मंत्रः ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहुवे नमः ।

केतु-मंत्रः ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतुवे नमः ।

२. शिवलिंग पर चांदी के नाग व नागिन का जोड़ा चढांए ।

३. कालसर्प यंत्र के सामने ४३ दिनों तक सरसों के तेल का दीपक जलाकर - 'ॐ नमः शिवाय' मंत्र का यथाशक्ति जप करें। पूजन में मिश्री तथा चन्दन का उपयोग करना चाहिए। इसमें रोली, या सिंदूर का प्रयोग नहीं किया जाता । इसके साथ-साथ महामृत्युंजय मंत्र -

'ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
ऊर्वारूकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।

का भी जप करना चाहिए।

४. महामृत्युंजय अनुष्ठान किसी योग्य ब्राह्मण से कराएं।

५. भगवान विष्णु या शिवजी का पूजन अवश्य करें।

६. एक वर्ष तक नवनाग स्तोत्र का पाठ करें, जो निम्नवत है:-

नवनाग-स्तोत्र

अनन्तम् वासुकिं शेषं पद्मनाभं च कंबलम्।
शंखपालं धार्तराष्ट्रं तक्षकं कालियं तथा।।
एतानि नव नामानि नागानाम् च महात्मनाम् ।
सायंकाले पठेन्नित्यं प्रातःकाले विशेषतः ।।
तस्मै विषभयं नास्ति सर्वत्र विजयी भवेत्।

७. कालसर्प योग की शान्ति का सबसे सरल और प्रभावी उपाय यह है कि अपने घर और कार्यालय में मोर पंख रखें और सुबह-शााम उसे अपने शरीर पर स्पर्श करायें।

8. एक रेंगते हुए डिजाईन का चांदी का सर्प बनवाकर उसके फन पर गोमेद तथा पूंछ में लहसुनिया रत्न जड़वाकर नागपंचमी, अमावस्या अथवा शिवरात्रि के दिन 'ॐ नमः शिवाय' मंत्र का जप करते हुए नाग को नदी में प्रवाहित कर दें।

9. नाग-प्रतिमा की अंगूठी धारण करें।

10. शिवरात्रि, नागपंचमी या सोमवार को नाग-नागिन का जोड़ा बनवाकर शिवलिंग पर चढायें। इसके बाद सर्प सूक्त का पाठ एवं 'ॐ नमः शिवाय' मंत्र की एक माला जप करके इस जोड़े को नदी में विसर्जित कर दें।

11. १०८ दिनों तक हनुमान चालीसा का पाठ करें।

12. रात्रि में सोते समय जौं के कुछ दाने अपने सिरहाने रखकर प्रातः पौं फटने के समय उन्हें पक्षियों को खिलाएं ।

13. यदि व्यक्ति समर्थ हो तो नाग मन्दिर का निर्माण कराये और उसमें नागदेव की पत्थर की प्रतिमा की प्राण-प्रतिष्ठित स्थापना कराये।

14. बुधवार के दिन एक मुठ्ठी काले उड़द लेकर किसी काले कपड़े में बांधकर उस पर राहु-मंत्र का यथाशक्ति जप करके किसी चाण्डाल को दक्षिणा सहित दान करें या फिर उसे किसी नदी में प्रवाहित कर

दें। यह क्रिया लगातार ७२ दिनों तक करनी होती है। इससे निश्चित ही कालसर्प का प्रभाव दूर हो जाता है।

15. श्री कार्तवीर्याजुन मंत्र का ३३-३३ हजार जप का अनुष्ठान १० बार कराने से कालसर्प योग का दुष्प्रभाव दूर होकर राजयोग के समान भाग्यवर्धक शुभ प्रभाव मिलने लगता है और जातक राजयोग का लाभ प्राप्त करता है।

16. कालसर्प योग शांति यंत्र के समक्ष नित्य प्रति नवनाग स्तोत्र एवं सर्प-सूक्त का पाठ करना चाहिए। सर्प-सूक्त निम्नवत् है:-

ब्रह्म लोकेषु ये सर्पाः शेषनाग पुरोगमाः।
नमोस्तु-तेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीताः मम सर्वदा ।।
इन्द्रलोकेषु ये सर्पाः वासुकि प्रमुखादयः।
नमोस्तु-तेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीताः मम सर्वदा ।।
कद्रवेयाश्च ये सर्पाः मातृभक्ति परायणा ।
नमोस्तु-तेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीताः मम सर्वदा ।।
**इन्द्रलोकेषु ये सर्पाः लक्षका प्रमुखादयः।**
नमोस्तु-तेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीताः मम सर्वदा ।।
**सत्यलोकेषु ये सर्पाः वासुकिना च रक्षिता।**
नमोस्तु-तेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीताः मम सर्वदा ।।
**मलये चैव ये सर्पाः कर्कोटक प्रमुखादयाः।**
नमोस्तु-तेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीताः मम सर्वदा ।।
**पृथिव्यांचैव ये सर्पा ये साकेत वासिता।**
नमोस्तु-तेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीताः मम सर्वदा ।।
**सर्वग्रामेषु ये सर्पाः वसंतिषु संच्छिता।**
नमोस्तु-तेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीताः मम सर्वदा ।।
**ग्रामे वा यदिवारण्ये ये सर्पाप्रचरन्ति च ।**
नमोस्तु-तेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीताः मम सर्वदा ।।
**समुद्रतीरे ये सर्पाये सर्पाजलवासिनः ।**
नमोस्तु-तेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीताः मम सर्वदा ।।

रसांतलेषु ये सर्पाः अनन्तादि महाबला।
नमोस्तु-तेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीताः मम सर्वदा ।।

..........................

## कार्तवीर्यार्जुन-प्रयोग

कार्तवीर्यार्जुन-प्रयोग आज के समय में प्रत्येक साधक के लिए वांछाकल्पद्रुम के समान है। राजा तथा चोर आदि से पीड़ित होने पर, शस्त्र, अग्नि तथा जहर के प्रयोग होने पर, महामारी तथा बुरे स्वप्नों की बाधा होने पर, ग्रह-भय तथा रोग-भय होने पर, भूत-प्रेत, राक्षस, गंधर्व, बेताल, पिशाच, द्वारा ग्रस्त होने पर, महाभय अथवा महाविनाश के समय, घोर महामृत्यु का भय होने पर अथवा सर्वस्व-हरण हो जाने पर इस प्रयोग का फल अचूक होता है। इतना ही नहीं यदि किसी व्यक्ति का धन नष्ट हो गया हो, अथवा कोई धन उधार लेकर या अन्य किन्हीं कारणों से धन वापस ना कर रहा हो तो उस धन की वापस प्राप्ति के लिए कार्तवीर्यार्जुन प्रयोग बहुत ही प्रभावी होता है।

यह प्रयोग एक दुर्लभ प्रयोग है, जिसे मैं साधकों के लिए यहां लिख रहा हूॅं।

कार्तवीर्यार्जुन-प्रयोग से अपरिचित साधकों को यंहा कार्तवीर्यार्जुन के विषय में संक्षेप में उल्लेख करना आवश्यक समझता हूॅ। ‘कार्तवीर्य’ को अर्जुन, सहस्रार्जुन, कार्तवीर्यार्जुन, तथा हैहयाधिपति भी कहा जाता है। इनके पिता का नाम कृतवीर्य तथा माता का नाम शालधरा था। ये हैहय देश के राजा थे और इनकी राजधानी का नाम माहिष्मति था। कठोर तपस्या के कारण इन्होंने भगवान दत्तात्रेय से कई वरदान प्राप्त किये थे, जिनमें सहस्र भुजाएं और स्वर्ण-रथ मुख्य थे। ये रावण के समकालीन थे और एक बाद इन्होंने उसे बन्दी भी बना लिया था, परन्तु उसके पिता महर्षि पुलस्त्य के कहने पर मुक्त कर दिया था। एक बार

**इन्होंने परशुराम जी के पिता जमदग्नि ऋषि की कामधेनु गाय का अपहरण कर दिया था तो परशुराम जी ने इनका वध कर डाला था।**

**प्रत्येक कार्य की सिद्धि के लिए इनके अलग-अलग मंत्र हैं। इसलिए जिस साधक का जो लक्ष्य हो, उसी से सम्बन्धित मंत्र का अनुष्ठान उसे करना चाहिए। वे मंत्र मैं क्रमशः लिख रहा हूँ।**

धन-प्राप्ति के लिएः-

ॐ क्रों धनदकार्तवीर्यार्जुनाय नमः । जप संख्या- एक लाख

वशीकरण के लिएः-

ॐ ह्रीं क्रों वशीकरण कार्तवीर्याजुनाय नमः । जप संख्या- एक लाख

सर्वकामना सिद्धि के लिए :-

**ॐ क्लीं क्रों कार्तवीर्य सर्व कामनायै नमः । जप संख्या-एक लाख**

शत्रु-नाश के लिए :-

**ॐ छ्रीं क्रों कार्तवीर्यार्जुनाय शत्रु-क्षय कामाय नमः। एक लाख**

सर्वलोक-वशीकरण के लिएः-

**ॐ ह्रीं क्रों क्लीं कार्तवीर्यार्जुनाय सर्वलोक वशीकरण कामाय नमः । उपरोक्त**

उच्चाटन के लिएः-

**ॐ क्रों कार्तवीर्यार्जुनाय उच्चाटन कामाय नमः। उपरोक्त**

अभीष्ट-सिद्धि के लिएः-

**ॐ हुं फट् कार्तवीर्यार्जुनाय अभीष्ट सिद्धि कामाय नमः। उपरोक्त**

सर्व दुखों के नाश के लिएः-

**ॐ क्रां क्रूं क्लीं कार्तवीर्यार्जुनाय सर्वदुख प्रशमन-कुपित-प्रसादन सर्वकामनायै नमः। जप संख्या एक लाख**

सर्व कार्यों में बाधा-निवारण के लिएः-

**ॐ क्रों गां गीं गूं गं नमः । सर्वकार्याविघ्न कामाय नमः । जप संख्या एक लाख**

असाध्य की सिद्धि के लिएः-

**ॐ गं नमः। क्रों कार्तवीर्यार्जुनाय नमः। जप संख्या चार लाख**

सर्वरोग निवारण के लिएः-

**ॐ दुख हर्ता कार्तवीर्यार्जुनाय सर्वरोग निवारण कामाय नमः। एक लाख**

व्यापार-वृद्धि के लिएः-

**ॐ क्लीं कार्तवीर्यार्जुनाय व्यापार कामाय नमः। एक लाख**

राजा अथवा उच्चाधिकारी से कार्य कराने के लिएः-
**ॐ क्लीं क्रों कार्तवीर्यार्जुनाय राजसमीप कामाय नमः। एक लाख**
समस्त कार्यों की पूर्णता के लियेः-
**ॐ क्रों ध्रीं भ्रूं आं ह्रीं क्रों श्रीं हुं फट् कार्तवीर्यार्जुनाय नमः। चार लाख**
नष्ट अथवा गये हुए धन की प्राप्ति के लिएः-
**ॐ कार्तवीर्याजुर्नो नाम राजा सहस्रबाहुकम्। यस्य स्मरण मात्रेण हृत नष्टं च लभ्यते ।।**
घर से रूठकर अथवा अन्य किन्हीं कारणों से गये व्यक्ति को वापिस बुलाने के लिएः-
**ॐ कार्तवीर्याजुर्नो नाम राजा सहस्रबाहुकम्। यस्य स्मरण मात्रेण (अमुक) हृत नष्टं च लभ्यते ।। जप संख्या एक लाख ।**
कार्तवीर्यार्जुन-गायत्री मंत्रः-
**ॐ कार्तवीर्यार्जुनाय विद्महे सहस्रकराय धीमहि। तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्।।**

**उपर्युक्त सभी मंत्रों के ध्यान, विनियोग, न्यास एवं विधान अलग-अलग हैं। इसलिए यदि किसी मंत्र का प्रयोग करें तो सर्वप्रथम किसी योग्य व्यक्ति से विधान का ज्ञान करने के उपरान्त ही आरम्भ करें।**

::::::::::::::::::::::::::::::::::::::

# घोर दारिद्रय-विनाशक-प्रयोग
## धन्देश्वरी लक्ष्मी-तंत्र

{धन्देश्वरी देवी को सुरसुन्दरी, धनदा-यक्षिणी और दारिद्रय-विनाशक यक्षिणी के नाम से भी जाना जाता है। इनकी साधना करने वाले व्यक्ति को दरिद्रता इस प्रकार नहीं छू सकती, जिस प्रकार सर्पों का विशााल समूह भी गरूड़ को स्पर्श नहीं कर सकता। ये देवी अपने साधक के दारिद्रय-शमन हेतु स्वयं प्रतिबद्ध हैं और स्वयं ही कहती

है कि –‘ जो मुझे नित्य स्मरण करता है, उसकी दरिद्रता मिटाने के लिए मैं कृत-संकल्पित हूॅ और दासी के समान उसकी सेवा करती हूॅ। वह धनाधिपति हो जाता है, फिर उसके दारिद्रय की शंका ही कैसी ?’ }

वास्तव में दरिद्रता मनुष्य के लिए सबसे बड़ा अभिशाप है। जंहा दरिद्रता की देवी निवास करती है, वंहा न कोई होम होता है, न कोई त्यौहार होता है और न ही उत्साह होता है। महालक्ष्मी जैसी उच्च कोटि देवी की साधना सम्पन्न कर सिद्धि प्राप्त करना सबके लिए सम्भव नहीं है, और न ही सबको ऐसे मार्गदर्शक की प्राप्ति होनी सम्भव है, जो ऐसी साधनाओं को निर्विघ्न पूर्ण करा सके। इसीलिए भगवती पार्वती ने लोक-कल्याण की भावना से दारिद्रय विनाशक एवं समस्त प्रकार के ऐश्वर्य प्रदान करने वाले इस धनदा-यक्षिणी तंत्र की साधना विधि को प्रकट करने हेतु भगवान आशुतोष से जिज्ञासा प्रकट की थी।

इस तंत्र का प्रकटीकरण परमपिता ब्रह्मा के द्वारा यक्षराज कुबेर के समक्ष सर्वप्रथम किया गया था, जो भगवान शिव और जगन्माता पार्वती के संवाद में स्पष्ट किया गया है। इस साधना की सिद्धि होने पर निश्चय ही साधक धन-धान्यादि समस्त सम्पत्तियों से परिपूर्ण हो जाता है। इस सिद्धि को प्राप्त करने में साधक को समय व श्रम भी अधिक लगाना नहीं पड़ता है, क्योंकि यह विद्या तांत्रिक रीति पर प्रस्तुत की गयी है। ब्रह्मदेव के मुख से प्रतिपादित तथा यक्षराज कुबेर के मुख से जन-जन तक पंहुचने वाली इस विद्या के प्रभाव से निर्धन से निर्धन व्यक्ति भी श्रेष्ठ तथा धनवान हो जाता है। लेकिन इसके लिए गुरू-दीक्षा प्राप्त करना सबसे प्रथम कर्तव्य है।

## मंत्र एवं साधना-विधि :-

साधकों के लिए इस सर्वश्रेष्ठ धनदायी विद्या की प्रस्तुति मैं अपने अनुयायियों के लिए कर रहा हूॅ। प्रस्तुतिकरण अत्यन्त ही सरल विधि-विधान के

साथ किया जा रहा है। यदि इतने सरल विधि-विधान के उपरान्त भी कोई इस साधना को सम्पन्न न कर सके तो उसे 'अभागा' ही कहा जा सकता है।

मन्त्रः- इस महती धन्देश्वरी का साधना-मंत्र निम्नवत् हैः-

ॐ रं श्रीं ह्रीं धं धनदे रतिप्रिये स्वाहा ।

यह चौदह अक्षरों वाला मंत्र है, जो सर्वश्रेष्ठ माना जाता है।

## साधना-विधि

यंहा साधकों के लिए सर्वाधिक सुफलदायी चतुर्दशाक्षरी मंत्र की विधि प्रस्तुत की जा रही है। फिर भी यदि कोई साधक अन्य किसी मंत्र की साधना में तत्पर हो तो केवल मंत्रवर्णन्यास में ही उसे सूक्ष्म परिवर्तन करना होगा, अन्य समस्त विधि यही होगी।

इस मंत्र का पुरश्चरण एक लाख जप, उसका दशांश होम, होम का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन और मार्जन का दशांश ब्राह्मण-भोज, करने के उपरान्त अपने गुरूदेव, माता-पिता, बड़े बुजुर्गों के आशीर्वाद लेने पर पूर्ण होता है। लेकिन यदि रात्रि काल में सात दिनों तक नित्यप्रति एक हजार आठ सौ की संख्या में भी इस मंत्र का जप किया जाये, तो भी मंत्र की सिद्धि हो जाती है।

इस मंत्र का पुरश्चरण आरम्भ करने से तीन दिन पूर्व ही क्षौर आदि कृत्य सम्पन्न कर प्रायश्चित के साथ चन्द्रायण व्रत करना चाहिए। यदि ऐसा करना सम्भव ना हो तो तो प्रायश्चित स्वरूप 'ॐ का उच्चारण करते हुए पंचगव्य का पान करके उस दिन व्रत रखें और दस हजार गायत्री मंत्र का जप करें तथा अंत में तर्पण करें। गायत्री-विधान इस प्रकार हैः-

सर्वप्रथम देशकाल का उच्चारण करे ज्ञात एवं अज्ञात पापों के नाश हेतु एवं किये जाने वाले उक्त धनदा-यक्षिणी प्रयोग के अधिकार-प्राप्ति एंव इस मंत्र की सिद्धि हेतु दस हजार गायत्री मंत्र का संकल्प लें।

## कर्ण पिशाचिनी-साधना

इस मंत्र को गुप्त त्रिकालदर्शी मंत्र भी कहा जाता है। इस मंत्र के साधक को किसी भी व्यक्ति को देखते ही उसके जीवन की सूक्ष्म से सूक्ष्म घटना का ज्ञान हो जाता है। उसके विषय में विचार करते ही उसकी समस्त गतिविधियों एवं क्रिया कलापों का ज्ञान हो जाता है।

कर्ण-पिशाचिनी-साधना वैदिक विधि से भी सम्पन्न की जाती है और तांत्रिक विधि से भी अनुष्ठानित की जाती है।यंहा वैदिक विधि द्वारा सम्पन्न की जाने साधना का वर्णन किया जा रहा है।

**मंत्रः-** ॐ लिंग सर्वनाम शक्ति भगती कर्ण-पिशाचनी चण्ड रूपी सच-सच मम वचन दे स्वाहा।

विधिः- किसी भी नवरात्र में भूत-शुद्धि, स्थान-शुद्धि, गुरू स्मरण, गणेश पूजन, नवग्रह पूजन से पूर्व एक चौकी पर लाल कपड़ा बिछाएं। उस पर तांबे का एक लोटा या कलश-स्थापना करें। कलश पर पानी वाला नारियल रखें। कलश के चारों ओर पान, सुपारी,सिंदूर व २ लड्डू रखें। कलश-पूजन करके साष्टांग प्रणाम करें।

इसके बाद कंधे पर लाल कपड़ा रखकर उपरोक्त मंत्र का जप करें। जप पूर्ण होने पर पहले सामग्री से, फिर खीर से और अन्त में त्रिमधु से होम करें। इसके उपरान्त क्षमा-याचना कर साक्षात देवी रूपी कलश को भूमि पर लेटकर दण्डवत प्रणाम करें। अनुष्ठान के दिनों में ब्रह्मचर्य का पालन एवं एकान्तवास करें। सदाचरण करते हुए सभी नियमों का पालन करें। झूठ, फरेब, अत्याचार, बेइमानी से दूर रहें।

**समयः-** नवरात्र । यदि ग्रहण काल में आरम्भ करें तो स्पर्श काल से १५ मिनट पूर्व आरम्भ करके मोक्ष के १५ मिनट बाद तक करें। ग्रहण-काल में नदी के किनारे अथवा श्मशान में जप करें। आवश्यक समस्त सामग्री अपने साथ रखें।

**सामग्रीः-** पान, सुपारी, लौंग, सिंदूर, नारियल, अगर-ज्योत, लाल वस्त्र, जल का लोटा, लाल चन्दन की माला, जप करने के लिए, और दो लड्डू ।

**जप-संख्याः-** एक लाख ।

**हवन-सामग्रीः-** सफेद चंदन का चूरा, लाल चन्दन का चूरा, लोबान, गुग्गल, प्रत्येक ३०० ग्राम, कपूर लगभग १०० ग्राम, लौंग १० ग्राम, अगर ५० ग्राम, तगर ५० ग्राम, केशर २.५ ग्राम, कस्तूरी १ ग्राम, बादाम गिरी ५०ग्राम, काजू ५० ग्राम, अखरोट गिरी ५० ग्राम, गोला ५०ग्राम, छुआरे ५०ग्राम, मिश्री का कूजा-१। इन सभी को बारीक करके मिला लें। इसमें घी भी मिलाएं। फिर खीर बनाएं। चावल कम दूध ज्यादा रखें। खीर में पांच मेवे डालैं। देशी घी, शहद, व चीनी भी डालें।

**विशेषः-** जप करने के उपरान्त १०,००० मंत्रों से हवन करें। हवन के दशांश का तर्पण, उसके दशांश यानि एक माला से मार्जन और उसके बाद १० कन्याओं एवं एक बटुक को भोजन कराकर गुरूदेव से आशीर्वाद प्राप्त करें ।

**नोटः- उपरोक्त साधना के लिए गुरू-दीक्षा आवश्यक है, अन्यथा प्रयास असफल रहता है।**

. ++++++++++++++++

## भौतिक पर-कृत-प्रयोग, बाधा, नजर आदि दूर करने हेतु प्रयोग

**यंहा मैं ऐसे मंत्र का प्रयोग बताने जा रहा हूँ, जो किसी भी व्यक्ति पर किये गये पर-प्रयोग, बाधा, बुरी नजर आदि को हटाने में पूर्ण सक्षम है। मेरा अनुभव है कि यदि किसी व्यक्ति की बुरी नजर किसी भी व्यक्ति के रोजगार पर, उसकी सम्पत्ति पर, अथवा उसके सुख पर लग जाए तो अच्छा-खासा परिवार तबाह हो जाता है। प्रभावित व्यक्ति कर्ज, बीमारी, मुकदमों आदि में घिर जाता है, उसका सुख सम्पूर्णतः दुख में बदल जाता है।**

**यदि आप ऐसे ही प्रयोगों, बुरी नजर आदि से स्वयं को प्रभावित महसूस करते हैं तो इस निम्नांकित मंत्र का प्रयोग कीजिए और परिणाम मुझे बताईए।**
**मेरा पूर्ण विश्वास है कि आपको निश्चित रूप से इन समस्त व्याधियों से मुक्ति प्राप्त हो जाएगी। लेकिन इस मंत्र को गुरू से प्राप्त करना आवश्यक है, अन्यथा परिणाम संदेहात्मक ही रहेगा।**

**मंत्रः-** ॐ ह्रीं ब्रीं बिकट। वीर हनुमन्त। वीर मंत्र को मारो, उलट दो पाताल, काल जाल संघारो। जो धन जंहा से आवे, वंही को जाए। टोनहिन का टोना, ओझा को दण्ड, द्रोही शत्रु को मारो। न मारो तो माता अंजनि के बत्तीस धार का दूध हराम करो। सीता के सिर चोट पड़े, हुं फट् स्वाहा।

### कर्ण पिशाचिनी मंत्र

ॐ कर्णपिशाचिनी वदातितानागतं ह्रीं स्वाहा ।

## मातंगी-तंत्र (सुमुखी-मंत्र प्रयोग)

**भगवती मातंगी प्रचलित दश महाविद्याओं में से एक हैं, जो वशीकरण, सम्मोहन, ज्ञान, सर्वाभिष्ट की सिद्धि हेतु सर्वोपरि मानी जाती हैं। वाम मार्ग से उपासना करने पर ये अतिशीघ्र प्रसन्न होती हैं। इन्हें उच्छिष्ट चाण्डालिनी एवं सुमुखी के नाम से भी जाना जाता है। इनके मंत्रों का जप भोजन करने के उपरांत जूठे मुख से करने का विधान है। जप करने के बाद जो भोजन आपने**

किया है, उसी भात से इनके मंत्र से होम करना चाहिए। मुख्य रूप से इनके मंत्र के प्रयोग निम्नवत् हैं:-

१. भात में दही मिलाकर एक लाख मंत्रों से आहुति देने से अधिकारी, राजा, मंत्री आदि साधक के वशीभूत हो जाते हैं।
२. समस्त विद्याओं में पारंगत होने के लिए साधक को मार्जार (बिलाव) के मांस से होम करना चाहिए।
३. खीर से होम करने से भी विद्या की प्राप्ति होती है।
४. धन-प्राप्ति के लिए साधक को बकरे के मांस से होम करना चाहिए।
५. जन-समूह को वशीभूत करने के लिए साधक को रजस्वला स्त्री का अन्दर का वस्त्र लेकर, उसके छोटे-छोटे भाग करके, उन्हें शहद और खीर में मिलाकर होम करना चाहिए।
६. लक्ष्मी प्राप्ति हेतु साधक को पान, घी व शहद से होम करना चाहिए।
७. स्त्री-आकर्षण के लिए साधक को तत्काल मारे गये बिलाव के मांस एवं उसके बाल घी, एवं शहद के साथ मिलाकर होम करना चाहिए।
८. स्त्री-आकर्षण एवं विद्या-प्राप्ति हेतु साधक को खरगोश के मांस से हवन करना चाहिए।
९. शत्रु को वशीभूत करने के लिए साधक को धतूरे की लकड़ी से जलाई गयी चिता की अग्नि में कोयल एवं कौए के पंखों से होम करना चाहिए।
१०. अपने शत्रुओं के मध्य कलह उत्पन्न करने के लिए साधक को कौवे और उल्लू के पंखों से होम करना चाहिए।
११. किसी भी स्त्री का गर्भ गिराने के लिए साधक को उल्लू के पंखों से होम करना चाहिए।
१२. किसी बंध्या स्त्री को पुत्र-प्राप्ति के लिए बेल वृक्ष के पत्तों को घी में मिलाकर एक हजार की संख्या में प्रतिदिन आहुति देते हुए एक माह तक प्रयोग करना चाहिए।
१३. किसी भी भाग्यहीन स्त्री को सौभाग्यवती बनाने के लिए बंधूक पुष्पों को शहद में मिलाकर होम करना चाहिये।

१४. अपनी अभिष्ट-सिद्धि के लिए साधक को किसी वन, एकांत स्थान, चौराहा, उजड़े हुए गांव, या फिर निर्जन स्थान पर भगवती मातंगी को बलि समर्पित करके जूठे मुंह से ५,००० मंत्रों का जप करना चाहिए।

इसके उपरांत मैं यहां मां मातंगी के मंत्र एवं उसके विधान का उल्लेख कर रहा हूँ। सर्वप्रथम साधक को किसी भी मंत्र का जप करने से पूर्व उसका उत्कीलन करना चाहिए ।भगवती मातंगी का जो मंत्र मैं यंहा लिख रहा हूँ, उसके उत्कीलन के लिए साधक को १० माला अग्रलिखित मंत्र का जप करना चाहिए-

उत्कीलन मंत्रः- ऐं ह्रीं सुमुख्यै नमः ।

इसके बाद मंत्र का विनियोग करें, यथा--

विनियोगः- अस्य श्री सुमुखी मंत्रस्य, भैरव ऋषिः, गायत्री छंदः, श्री सुमुखी देवता, आत्मनो-अभिष्ट सिद्धये, सुमुखी मंत्र जपे विनियोगः।

तदोपरांत षडंग-न्यास करें, यथा....

षडंग-न्यासः-

ॐ उच्छिष्ट चाण्डालिनि हृदयाय नमः।
ॐ सुमुखि शिरसे स्वाहा।
ॐ देवि शिखायै वषट्।
ॐ महापिशाचिनि कवचाय हुम्।
ॐ ह्रीं नेत्र-त्रयाय वौषट्।
ॐ ठः ठः ठः अस्त्राय फट्।

इसके बाद माता मातंगी का ध्यान करें, यथा---

ध्यान

गुंजा-निर्मित-हार भूषित-कुचां सद्यौवनोल्लासिनीं ,
हस्ताभ्यां नृकपाल-खड्ग-लतिके रम्ये मुद्रा बिभ्रतीम् ।
रक्तालंकृति वस्त्रलेपन लसद्-देह-प्रभां ध्यायतां ,
नृणां श्री सुमुखीं शवासनगतां स्युः सर्वदा सम्पदः ।।

मंत्रः- ऐं क्लीं उच्छिष्ट चाण्डालिनि सुमुखी देवि महापिशाचिनि ह्रीं ठः ठः ठः स्वाहा ।

## सर्वजन-वशीकरण हेतु श्यामा मातंगी मंत्र

ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ऐं ॐ नमो भगवति श्री मातंगीश्वरिं सर्वजन-मनोहारि सर्वमुख-रंजिनि क्लीं ह्रीं श्रीं सर्वराज-वशंकरि सर्व-स्त्री-पुरूष-वशंकरि सर्वदुष्ट-मृग-वशंकरि सर्व-सत्व-वशंकरि सर्वलोक-वशंकरि अमुकं (यंहा वांछित व्यक्ति का नाम लें ।) मे वशमानय स्वाहा।

इस मंत्र के ऋषि दक्षिणामूर्ति, छंद-गायत्री, देवता- मातंगीश्वरी, बीज- ऐं, शक्ति-सौः, कीलक-क्लीं एवं विनियोग - सर्वजन-वशीकरण हैं ।

## सर्वार्थ सिद्धि हेतु राजमातंगी मंत्र

ॐ ह्रीं राजमातंगिनि मम सर्वार्थ-सिद्धिं देहि-देहि फट् स्वाहा ।

## परम देवी-सूक्त

**भगवती महात्रिपुर सुन्दरी का यह स्तोत्र अत्यन्त ही गोपनीय एवं प्रमाणित है, लेकिन यह गुरू-गम्य है। अर्थात् गुरू-मुख से प्राप्त करने के उपरान्त ही यह फलदायी होता है। यदि इस सूक्त का पाठ निरंतर तीन सालों तक किया जाये तो निश्चित रूप से साधक को भगवती त्रिपुर सुंदरी का साक्षात्कार होता है। इस स्तोत्र का नित्य पाठ करने वाला साधक समस्त सिद्वियों का स्वामी, सर्वत्र विजय प्राप्त करने वाला एवं संसार को वश में करने वाला हो जाता है। उसकी जिह्वा पर साक्षात मां सरस्वती का निवास हो जाता है। उपरोक्त समस्त इच्छाएं रखने वाले साधक को चाहिए कि वह श्री गुरू-चरणों में बैठकर इस स्तोत्र को प्रयत्नपूर्वक प्राप्त करे ।**

**विनियोग**- ॐ अस्य श्री परमदेवता सूक्त माला मन्त्रस्य मार्कण्डेय सुमेधादि-ऋषयः, गायत्र्यादि नानाविधानीच्छन्दांसि, त्रिशक्ति-रूपिणी चण्डिका देवता, ऐं बींज सौः शक्तिः, क्लीं कीलकं चतुर्विध पुरूषार्थ सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

**इसके उपरान्त ध्यान करें** -

ध्यान

ॐ योगाढ्यामरकाय निर्गत महत्तेजः समुत्पत्तिनी ।
भास्वत्पूर्ण शशांक चारू वदना नीलोल्लसद् भ्रूलता ।।
गौरोत्तुंग-कुचद्वया तदुपरि स्फूर्जप्रभामण्डला ।
बन्धूकारूणकाय-कान्तिरवताच्छ्री चण्डिका सर्वतः।।

पाठ

**ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हस्ख्फ्रें ह्सौं ह्सौः जय जय महालक्ष्मि जगदाधारबीजे सुरासुर त्रिभुवन निधाने दयांकुरे सर्वदेवतेजो रूपिणि महामहा महिमे महा महा रूपिणि महामहामाये महामायास्वरूपिणि विरिंच संस्तुते विधिवरदे चिदानन्दे (विद्यानन्दे) विष्णुदेहावृते महामोह मोहिनि मधुकैटभ जिंघासिनि नित्यवरदान तत्परे महासुधाब्धिवासिनि महामहत्तेजोधारिणि सर्वाधारे सर्वकारणकारणे आदित्यरूपे इन्द्रादिनिखिलनिर्जरसेविते सामगानगायिनि पूर्णोदय कारिणि विजये जयन्ति अपराजिते सर्वसुन्दरि सक्तांशुके सूर्यकोटिसंकाशे चन्द्रकोटिसुशीतले अग्निकोटि दहनशीले यमकोटिक्रूरे वायुकोटिवहनसुशीले ओंकारनाद चिद्रूपे निगमागममार्गदायिनि महिषासुरनिर्दलनि धूम्रलोचनवधपरायणे चण्डमुण्डादि शिरश्छेदिनि रक्तबीजादि रूधिरशोषिणि रक्तपानप्रिये महायोगिनि भूतबेताल भैरवादितुष्टि विधायिनि शुम्भनिशुम्भशिरश्छेदिनि निखिलासुरदलखादिनि त्रिदशराज्यदायिनि सर्वस्त्रीरत्नरूपिणि दिव्यदेहे निर्गुणे सदसद्रूपधारिणि स्कन्दवरदे भक्तत्राणतत्परे वरवरदे सहस्रारे दशशताक्षरे अयुताक्षरे सप्तकोटि चामुण्डारूपिणि नवकोटिकात्यायनिरूपिणि अनेकशक्त्या लक्ष्यालक्ष्य स्वरूपे इन्द्राणि ब्रह्माणि रूद्राणि कौमारि वैष्णवि वाराहि शिवदूति ईशानि भीमे भ्रमरि नारसिंहि त्रयस्त्रिंशत्कोटि दैवते अनन्तकोटि ब्रह्माण्डनायिके चतुरशीतिलक्षमुनिजनसंस्तुते सप्तकोटि मन्त्रस्वरूपे महाकालरात्रिप्रकाशे कलाकाष्ठादिरूपिणि चतुर्दशभुवनाविर्भावकारिणि गरूडगामिनि क्रौंकार-ह्रौंकार**

ह्रींकार-श्रींकार-क्षौंकार-जूंकार-सौंकार-ऐंकार-क्लींकार-ह्क्लींकार-ह्क्लांकार-हौंकार -नानाबीज-मन्त्रराज-विराजित सकलसुन्दरीगणसेवितचरणारविन्दे श्री-महारात्रि-त्रिपुरसुन्दरी-कामेशदयिते करूणारसकल्लोलिनि कल्पवृक्षाधः स्थिते चिन्तामणिद्वीपावस्थित-मणिमन्दिरनिवासे चापिनि खड्गिनि चक्रिणि गदिनि शंखिनि पद्मिनि निखिल भैरवाराधिते समस्तयोगिनिचक्रपरिवृते कालि कंकालि तारे तोतुले सुतारे ज्वालामुखि छिन्नमस्तके भुवनेश्वरि त्रिपुरे त्रिलोक जननि विष्णुवक्षः स्थलालंकारिणि अजिते अमिते अपराजिते अनौपमचरिते गर्भवासादि दुःखापहारिणि मुक्तिक्षेत्राधिष्ठायिनि शिवे शान्ति कुमारि देवि देवीसूक्तसंस्तुते महाकालि महालक्ष्मि महासरस्वति त्रयी विग्रहे प्रसीद प्रसीद सर्वमनोरथान् पूरय पूरय सर्वारिष्ट-विघ्नांश्छेदय छेदय सर्वग्रहपीडाज्वरोग्रभयः विध्वंसय विध्वंसय सद्यस्त्रिभुवन जीवजातं वशमानय वशमानय मोक्षमार्गं दर्शय दर्शय ज्ञानमार्गं प्रकाशय प्रकाशय अज्ञानतमो निरसय निरसय धनधान्याभिवृद्धिं कुरू कुरू सर्वकल्याणानि कल्पय कल्पय मां रक्ष रक्ष मम वज्रशरीरं साधय साधय ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे स्वाहा नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा।

(श्री जगदम्बार्पणामस्तु)

## SHRI BAGLAMUKHI STOTRAM

**THIS Presentation is adopted from an ancient rare Grantha, named** Rudrayamal Tantra**. Such a sadhak who reads this great hymn becomes safe from every side. Nobody can create obstacles in his way. All the opponents of the sadhak turn into statues. The qualities of fortune can be seen in this hymn.**

**At first remember your Gurudeva and Shri Ganesha.**

Obeisance to Gurudeva.
Obeisance to Shri Ganesha

**Take water in your right palm and read the Viniyoga:-**
विनियोगः–
ॐ अस्य श्री बगलामुखी स्तोत्रस्य भगवान नारद ऋषिः, बगलामुखी देवता, मम सन्निहितां दुष्टानां विरोधिनां वांग् मुख–पद–जिह्वां–बुद्धिनां स्तम्भनार्थे श्री बगलामुखि प्रसाद सिद्धयर्थे पाठे विनियोगः ।
**Viniyoga:-**

Om asya Shri Baglamukhi-stotrasya Bhagwan Narada rishih, Baglamukhi Deveta, Mam Sannihitanama dushtanam virodhinam vang mukh- pada-jivha-buddhinam stambhnarthe Shri Baglamukhi Prasad sidhyarthe patthe viniyogah.

***Om. Of this hymn of Shri Baglamukhi, Narada is the rishi. The aspect of divinity is Baglamukhi. The destruction by paralysis of my enemies' speech, mouth, legs, intellect and the grace of Shri Baglamukhi in the success of this aim is fruit of the mantra's application.***
**Reading the above Mantra let the water drop from your right hand. Then do Kara-nyasa.**

कर – न्यास :–
ॐ ह्लीं अंगुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ बगलामुखी तर्जनीभ्यां स्वाहा।
ॐ सर्व दुष्टानां मध्यमाभ्यां वषट्।
ॐ वाचं मुखं पदं स्तम्भय अनामिकाभ्यां हूं।
ॐ जिह्वां कीलय कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्।
ॐ बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा करतल–कर–पृष्ठाभ्यां नमः।

## Kara-nyasa:

Om Hleem angusthhabhyam namah.
**Om Hleem obeisance to the thumbs (touch both thumbs together)**

Om Baglamukhi tarjnibhyam namah.
**Om Baglamukhi to the index fingers Svaha (touch index fingers)**

Om sarva dushtanam Madhyamabhyam vashata.
**(Om all the bad enemies to the middle fingers vashat (touch middle fingers).**

Om vacham mukham padam stambhaya anamikabhyam Hum.
**Om speech, mouth, feet paralyze to the ring fingers Hum (touch both ring fingers).**

Om jivham keelaya Kanishthhikabhyam vaushat**.**
**Om Peg the tongue! To the little fingers Vaushat (touch both little fingers)**

Om budhim vinashaya Hleem Om swaha kartal kar prashthhabhyam namah.
**Om destroy the intellect! Hleem Om Svaha to the front and the back of the hands Phat (touch both palms and backs of hands with each other).**

हृदयादि-न्यास :-

ॐ ह्लीं हृदयाय नमः।
ॐ बगलामुखि शिरसे स्वाहा।

ॐ सर्व दुष्टानां शिखायै वषट्।
ॐ वाचं मुखं स्तम्भय कवचाय हुं।
ॐ जिह्वां कीलय नेत्र त्रयाय वौषट्।
ॐ बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा अस्त्राय फट्।

**HRADAYADI-NYASA: -**

Om Hleem Hradyay namah**.**

**Om Hleem obeisance to the heart (touch your heart with combination of thumb and ring finger).**

Om Baglamukhi Sirase Svaha**.**

**Om Baglamukhi to the head Svaha (touch your head as before).**

Om sarva dushtanam shikhaye vashat**.**

**Om all the bad to the lock of hair (touch your shikha (tuft) as before).**

Om vacham mukham padam stambhaya Kavchaye Hum.

**Om speech, mouth, feet paralyze to the Kavacha Hum (cross the hands with each other and touch your shoulders).**

Om Jivham Keelaya Netra trayaye vaushat.

**Om Peg the tongue! To the three eyes Vaushat (touch both eyes including Agya Chakra).**

Om Buddhim vinashaya Hleem Om swaha Astraye Phat.

**Om destroy the intellect Hleem Om Svaha to the arm Phat (Snap the fingers three times around the head clock wise**

**and then with the help of right index and middle fingers clap thrice on left palm).**

## DHYANAM (Meditation)

SANSKRIT: -

सौवर्णासन संस्थितां त्रिनयनां पितांशुकोल्लासिनीम् ।
हेमाभांगरूचिं शशांक मुकुटं सच्चम्पक–स्रगयुताम्।।
हस्तैर्मुद्गर–पाश–वज्र रसनां सम्बिभ्रतीं भूषणै–,
र्व्याप्तांगीम बगलामुखि त्रिजगताम् संस्तम्भिनीं चिन्तयेत्।।

English:-

Sauvarnasan sansthitam-tri-nayanam pitanshu-kollasineem;
Hema-bhang-ruchim shashank-mukutam sachchampaka sragyutam.
Hastair-mudgar-pash-vajra-rasanam sambi-bhrateem-bhushanair
Vyaptangim Baglamukhi tri-jagatama sanstambhinim chintayet.

***I meditate on Baglamukhi, who is seated on a gold throne, with three eyes, wearing yellow clothes, blissful, with limbs as bright as pure gold, wearing a garland of Champak flowers, with the moon as Her diadem, with Her hands holding a club(Hammer), and a noose which binds the opponent. Her limbs are decorated with jewels, and She is the All paralyser of the three worlds.***

ॐ मध्ये सुधाब्धि–मणि–मण्डप–रत्न–वेद्यां।
सिंहासनो–परिगतां परिपीत वर्णाम्।।
पीताम्बरा–भरण–माल्य विभूषितांगीं ।
देवीं भजामि धृत मुद्गर वैरि जिह्वाम् ।।

जिह्वाग्रमादाय करेण देवीं ! वामेन् शत्रून् परिपीडयंतीम् ।
गदाभिघातेन् च दक्षिणेन्, पीताम्बराढ्यां द्विभुजां नमामि ।।

Om Madhye sudhabdhi-mani-mandap-ratna-vedhyam,
Sinhasano-parigatam pari-peet-varnam
Pitambara-bharan-malya-vibhushitangeem,
Deveem-bhajami-dhrata-mudgar vairee-jivhamm.
Jivhagramadaye Karen Deveem! Vamen shatrun paripeedyanteem,
Gadabhighaten cha dakshinen,
Peetambaradhyam dvibhujam namami.

***Sitting on a golden throne in the midst of an ocean of nectar, where Her canopy, decorated with diamonds, is situated and her throne is decorated with jewels. The Devi, who has seized the tongue and so forth of the enemies with Her left hand, and who with her right hand, beat them with Her club, with yellow garments and with two arms--Her I worship.***

Sanskrit:-
चलत्कनक कुण्डलोल्लासित–चारू–गंडस्थलीम् ।
लसत्कनक–चम्पक द्युतिम्दिन्दु–बिम्नाननाम् ।।
गदाहत–विपक्षकां–कलित्–लोल्जिह्वान्चलाम् ।
स्मरामि बगलामुखीं विमुख–वांग–मन्–स्तम्भिनीम् ।।
Chalat-kanaka-kundalollasit-charu-gandasthaleem,
Lasat-kanaka-champaka-dhutimdindu-bimbananam.
Gadahat-vipakshakam-kalit-lol-jivhan-chalam;
Smarami Baglamukhim Vimukh-wang-manas-stambhineem.

***I meditate on such goddess Baglamukhi, whose cheeks are glowing with the grace of glittering golden ear-rings,***

***wearing radiant as bright golden colored Champak flowers, having face effulgent as the full moon, killing my enemy with assault of club, and pegging his (enemy's) unsteady rolling tongue, the all pervading paralyser of speech and intellect.***

SHLOKA;-
पियूषोदधि–मध्य–चारू–विल्सद्–रक्तोत्पले मण्डपे ।
तत्सिंहासन–मौलि–पतित्–रिपुं प्रेतासना–ध्यासिनीम् ।।
स्वर्णाभ्यां कर–पीडितारि–रसनां भ्राम्यद् गदां विभ्रतीम्।
यस्तवां ध्यायति यान्ति तस्य विलयं सद्योऽथ सर्वापदः।।

**ENGLISH: -**

Piyushodadhi-madhya-charu-vilsad-raktotpale mandape,
Tat-sinhasan-mauli-patit-ripum pretasana-dhyasineem.
Swarnabhama kar-piditari-rasanam bhramyad-gadam vibhrama,
Yastvam dhyayati yanti tasya vilyama sadyo-adya sarvapada.

***The sadhak who meditates on Her, sitting on the corpses and skulls of one's fallen enemies as the base for Her golden throne in the pavilion in the center of a beautiful blossoming red lotus in the midst of the ocean of nectar-milk, his all the obstacles are squandered at once. She holds a moving club in Her hand as radiant as gold, causing woe to the opponent.***

SHLOKA: -
देवि ! त्वच्चरणाम्बुजार्चन–कृते यः पीत–पुष्पांजलिम् ।
मुद्रा वाम–करे निधाय च मनुं मन्त्री मनोज्ञाक्षरम् ।।
पीठ–ध्यान–परोऽथ कुम्भक–वशाद् बीजं स्मरेत् पार्थिवम् ।
तस्यामित्र–मुखस्य वाचि हृदये जाडयं भवेत् तत्क्षणात् ।।

**ENGLISH:**

"Devi! tvacharnambuja-archan-krate yah peet pushpanjalim;
Mudra vamkare nidhaye cha manana mantro manogyaksharama.
Peeta-dhyana-paro-atha-kumbhaka vashad beejam smret parthivam;
Tasya-amitra mukhasya vachi hradaye jadyam bhavet-tatakshanat.

***O my Goddess! Such a person, who offers yellow flowers in thy lotus feet with his left hand, meditating upon your form, recite the mantra, his all the enemies are restrained to act at once without any delay. Whosoever wants to subdue by the Beej Mantra (Lama) and concentrate yellow color in position of Kumbhaka (a situation in which the breath is stopped in body), his enemies' heart, mouth and speech are paralyzed at once, he causes this instantly.***

**Shloka:-**

वादी मूकति रंकति क्षिति–पतिर्वैश्वानर : शीतति।
क्रोधी शाम्यति दुर्जनः सुजनति क्षिप्रानुगः खंजति ।।
गर्वी खर्वति सर्व–विच्च जडति त्वन्मन्त्रिणा यन्त्रितः ।
श्री–नित्ये बगलामुखि ! प्रतिदिनं कल्याणि ! तुभ्यं नमः ।।

**English:-**

Vadi Mukati rankati kshitipatirvaishwanarah sheetati,
Krodhee shamyati durjanah sujanati kshipranuga khhanjati.
Garvee kharavati sarva-vichcha jadati tvad-yantrana yantritah,
Shri nitye ! Baglamukhi ! pratidinam kalyanim tubhyam Namah.

***I salute to you everyday O proclaimer, speechless one, bagger, ruler of the Earth, cosmos and men, cool one, cruel one, reconciling one, wicked one, true mother, giving success quickly, lame one, proud one, crippled one, all- exterminator, dull one, having the Yantra of all Yantras, O Shri Eternal Baglamukhi, O beautiful one.***

**SHLOKA:-**

मन्त्रस्यात्म–बलं विपक्ष दलनं स्तोत्रं पवित्रं च ते ।
यन्त्रं वादि–नियन्त्रणं त्रि–जगतां जैत्रं च चित्रं च ते ।।
मातः! श्री बगलेति नाम ललितं यस्यास्ति जन्तोर्मुखे ।
त्वन्नाम–स्मरणेन संसदि मुख–स्तम्भो भवेद् वादिनाम् ।।

**English:-**

Mantrasya-atm-balam vipaksha dalanam stotram pavitram cha te;
Yantram vadi-niyantranama trijagatam jaitram chitram cha te.
Matah shri bagaleti-nama-lalitam yasyasti jantormukhe;
Twannam smrena sansadi mukh-stambho bhaved vadinam.

***O ma! Spiritual strength of your mantra is enough to crush the mob of enemies. Whosoever knowing the mantra recites your pious hymn, which crushes the enemies in front of your yantra, becomes the conqueror of the three worlds. The name "Shri Bagla" when adorns the mouth of any sadhaka, the mouths of his opponents are astringent at once.***

**SHLOKA:-**

दुष्ट–स्तम्भनमुग्र–विघ्न–शमनं दारिद्रय–विद्रावणम् ।
भूभृद्–संदमनं च यन्मृग–दृशां चित्ता– समाकर्षणम् ।।
सौभाग्यैक –निकेतनं सम–दृशाम कारूण्य–पूर्णेक्षणे ।
मृत्योर्मारण–माविरस्तु पुरतो मातस्त्वदीयं वपुः ।।

**English:-**

Dusta-stamhanam-ugra-vighna-shamanam daridrya-vidravanam;
Bhubhradbhi-samanama cha yan-mrag-drasham cheettah samakarshanam.
Saubhagyeka-niketanama samdrasham karunya-purne-kshane,
Mratyormaran-mavirastu purto matas-tvadiyam vapuh.

***Mother Bagla, who is the seizer of the speech of the multitude of named people, the paralyser of the tongues of speaker, the appeaser of terrifying obstacles, paralyser of evil, dispeller of poverty, crusher of cruel emperors, pacifier of the mind trembling with anxiety like the deer, attractor of good fortune, merciful, pure, nectar-like, who causes cessation of death and murder, how lovely you are, O my beauteous mother? I salute you.***

**Shloka: -**
मातर्भन्जय मद्–विपक्ष–वदनं जिह्वां च संकीलय ।
ब्राह्मीं मुद्रय दैत्य–देव–धिषणामुग्रां गतिं स्तम्भय।।
शत्रूंश्चूर्णय देवि! तीक्ष्ण–गदया गौरांगि, पीताम्बरे ।
विघ्नौघं बगले ! हर प्रणमतां कारूण्य–पूर्णेक्षणे ।।

**English:-**
Matarbhanjaya mada-vipaksha-vadanam jivham cha sankeelaya;
Brahmim-mudraya daitya-deva-ghishnamugram gatim stambhaya.
Shatrunsh-churnaya Devi! Teekshana-gadaya-gaurangi pitambara;
Vighnogham bagle! her pranamatam karunya purne kshane.

***O mother! Shatter my enemies, speech and their tongue, peg their wet mouths, destroy them entirely! Paralyze all terrible things in the three worlds! Grind them to powder O Devi! Furiously beat them O Bagla! Golden limbed one , clothed in yellow, destroy the mind and lives of the mass of obstacles with one glance of your merciful large eyes.***

**SHLOKA: -**

मातर्भैरवि ! भद्रकालि ! विजये ! वाराहि ! विश्वाश्रये ! ।
श्रीविद्ये ! समये ! महेशि ! बगले ! कामेशि ! रामे ! रमे ! ।।
मातंगि ! त्रिपुरे ! परात्पर–तरे ! स्वर्गापवर्ग–प्रदे ! ।
दासो–ऽहं शरणागतः करूणया विश्वेश्वरि ! त्राहि माम् ।।

**English: -**

Matar-Bhairvi! Bhadrakali! Vijaye! Varahi! Vishvashraye!
Shri Vidhye! Samaye! Maheshi! Bagle! Kameshi! Ramey! Rame!
Matangi! Tripure! Paratpartare! Swargapvarg-prade!
Daso-aham sharnagatah karunaya vishweshwari! Trahi-mam.

Meaning:-

***O mother Bhairvi! Bhadrakali! Vijaya! Varahi! Vishva! Ashraye! (The provider of shelter to the world), Shri Vidhya! Maheshi! (The beloved of Lord Shiva), Bagla! Kameshi! (The cause of sex), Ram! Rame! (Beloved of Lord Vishnu), Matangi! Tripura! Above all guardian of Heaven, Giver of things, I am your slave seeking refuge in you, Lady of the Cosmos! Protect me.***

**Sanskrit:-**

त्वं विद्या परमा त्रिलोक –जननी विघ्नौघ–संच्छेदिनी ।
योषाकर्षण–कारिणी त्रिजगतामानन्द सम्वर्धिनी ।।

दुष्टोच्चाटन–कारिणी पशु–मनः   सम्मोह–सन्दायिनी ।
जिह्वा–कीलन–भैरवी   विजयते ब्रह्मास्त्र विद्या परा ।।

***victory so you are the art of Brahama.***

***Tvam vidhya parama triloka-janani vighnaugh sanchchhedini,***
***Yoshakarshana-karini trijagatam-ananda samvardhini.***
***Dushtochchaatan-karini pashu-manah sammoha-sandaayini,***
***Jihva-keelana-Bhairavi vijayatay Brahmastra vidhya paraa.***
***Meaning:-***
***You are the greatest art, the mother of three worlds, destroyer of all the obstacles, fascinator of females, increaser the pleasure of three worlds, remover of bad persons, hypnotizer of worldly people, and you are also the Bhairvi in shut out the tougue of enemies. You are always ready to give victory so you are the art of Brahama.***

विद्या–लक्ष्मीर्नित्य–सौभाग्यमायुः, पुत्रैः पौत्रैः सर्व–साम्राज्य सिद्धिः ।
मानं भोगो वश्यमारोग्य–सौख्यं,   प्राप्तं सर्वं   भूतले त्वत्–परेण ।।
**Vidhya-Lakshmir-nitya-saubhagyamaayuh putraih potraih sarva-samarjya-siddhih,**
**Maanam bhogo vashyam-aarogya-saukhyam praaptam sarvam bhoo-talay tvat-parena.**
**Meaning:-**
**Including the arts, money, neverlast fortune, long life, son, grand son, emperorship, honour, wisdom, fascination, health, and all the happiness are easily obtainable with your grace to your adorer on this earth.**
पीताम्बरां च द्विभुजां  त्रिनेत्रा  गात्र–कोमलाम् ।

शिला-मुद्गर-हस्तां च स्मरेत् तां बगलामुखीम् ।।

**Peetambaram cha dvibhujam trinetra gatra-komalaam; shila mudgara hastaam cha smaret tam Bagalamukhim.**

**Meaning:-**

**I adieu to such Mother Bagalamukhi who is with delicated body, who have Vajra (a kind of fatal weapon) and club in both hands, three eyes and two hands**

पीत–वस्त्र–लसितामरि–देह–प्रेत–वासन–निवेशित–देहाम् ।
फुल्ल–पुष्प–रवि–लोचन–रम्यां दैत्य–जाल–दहनोज्जवल–भूषां ।।
पर्यंकोपरि–लसद्–द्विभुजां कम्बु–जम्बु–नद–कुण्डल–लोलाम् ।
वैरि–निर्दलन–कारण–रोषां चिन्तयामि बगलां हृदयाब्जे ।।

**Peeta-vastra-lasitamari-deha-preta-vasan-niveshita-dehaam;**
**Phulla-pushp-ravi-lochana-ramyam daitya-jaal-dahanojjval-bhusham.**
**Paryankopari-lasad-dvibhujam-kambu-jambu-nada-kundal lolam;**
**Vairi-nirdalan-kaaran-rosham chintayami Bagalam hradyabjay.**

**Meaning:- Wearing yellow colored clothes, sitting on the corps of enemy, blooming like flower, shining eyes like the sun, who wears the white clothes to crush the demons, laying on bed two handed Goddess, adorned with round golden rings, very furious to the enemies, I remember such Bagala in my lotus heart.**

गेहं नाकमि, गर्वितः प्रणमति, स्त्री–संगमो मोक्षति,
द्वेषी मित्रति, पातकं सु–कृतति, क्षमा–वल्लभो दासति।
मृत्युर्वैद्यति, दूषण सु–गणति, त्वत्–पाद्–संसेवनात्,
वन्दे त्वां भव–भीति–भंजन–करीं गौरीं गिरीश–प्रियाम् ।।

Gayham naakami garvitah pranmati, stree sangamo mokshati,
Dveshi mitrati patakam sukratati kshama vallabho daasati.
Mratyur-vaidhyati dooshana suganati tvat-paad-sansevanaat,

Vanday tvam bhava-bhiti-bhanjan-karim Gaurim girish-priyam.
Meaning:
O mother! Through adoring your lotus feet adorer's house turns into heaven, proud turns into gentleness, lusty person gets salvation, enemy turns into friend, an emperor turns into slave, sinner turns into priest, the lord of death Yama becomes himself a doctor, and bad habit turns into good nature. Throwing away all the worldly worries O Beloved of Lord Shiva! Gauri! Bagala! I worship you.

आराध्या जगदम्ब ! दिव्यकविभिः सामाजिकैः स्तोतृभि–
र्माल्यैश्चन्दन–कुंकुमैः परिमलैरभ्यर्च्चिता सादरात् ।
सम्यंग–न्यासि–समस्त–निवहे, सौभाग्य–शोभा–प्रदे!
श्रीमुग्धे बगले! प्रसीद विमले, दुःखापहे! पहि माम् ।।

**English:-**

Aradhya jagadamba! Divya-kavibhih samajikaih stotrabhir-malyaish-chandana-kunkumaih parimalaira-abhayarchchita sadarat.
Samyang-nyasi-samasta-nivahe! Saubhagya-shobha-prade!
Shri mugdhe! Bagle! Praseed vimale!dukhapahe pahimama.

**Meaning(**

***Spiritualists, poets, social people, and devotees worship heartily of Bagla- the mother of all the worlds. Always living in the body of flower, garland, sandal, and roli, giver of fortune, sweet, pious and destroyer of all the grievances! Please mother! Pour your grace upon me and protect me.***

**Sanskrit:-**

सिद्धिं साध्ये–अवगन्तुं गुरू–वर–वचनेष्वार्ह–विश्वास–भाजाम् ,
स्वान्तः पद्मासनस्थां वर–रूचि–बगलां ध्यायतां तार–तारम् ।
गायत्री–पूत–वाचां हरि–हर–नमने तत्पराणां नराणाम् ,

प्रातर्मध्यान्ह–काले स्तव–पठनमिदं कार्य–सिद्धि–प्रदं स्यात् ।।

**English:-**

Siddhim sadhye-avagantum guru-vara vachnesharvaha-vishwash-bhajama,
Swantah padmasan-stham vara-ruchi-baglam dhyayatam tar-taram;
Gayatri-poot –vacham hari-har-namane! Tatparanam narannam,
Pratar-madhyanha-kale stava-pathanamidam karya-siddhi pradam syat.

***Worshipped by Almighty O mother Bagla! Believing in the words of Guru, having imperishable devotion in you, a perfect sadhaka of Gayatri for achieving siddhi in his target, meditates in his heart on you, as seated on the asana of lotus, pious like a lightened flame, in morning and in the midst of noon recites continuously this hymn, gets success in every work.***

**Sanskrit:-**

संरम्भे चोर–संघे प्रहरण–समये बन्धने व्याधि–मध्ये ।
विद्या–वादे विवादे प्रकुपित–नृपतो दिव्य–काले निशायाम् ।।
वश्ये वा स्तम्भने वा रिपु–वध–समये निर्जने वा वने वा ।
गच्छंस्तिष्ठंस्त्रि–कालं यदि पठति शिवं प्राप्नुयादाशु धीरः ।।

**English:-**

Sanrambhe chaur-sanghe praharana samaye bandhane varimadhye,
Vidhya-vade vivade prakupita-nrapatau divya-kale nishayam;
Vashye va stambhane va ripu-vadh samaye nirjane va vane va,

Ganchhanstishthha-kalam yadi pathati shivam prapnuyadashudheerah.

***Whosoever reads this pious hymn with love three times in a day (whether) in the thick of war, in assemblies of thieves, in conflicts, in restrictions, on water, in discussion, in litigation, in facing a king's wrath, at the time of night, at the time of ordeal, in attraction or in paralysis, in the slaughter of battle amongst opponents, in a solitary or in a forest or at any time, becomes steady. Whosoever reads this auspicious text having offered to the yantra and who wears it on the right arm (or neck), (female should wear it on left arm or in neck) is protected in war.***

## Sanskrit:-

फल–श्रुति

नित्यं स्तो्त्रामिदं पवित्रमिह यो देव्याः पठत्यादरात्।
धृत्वा यन्त्रमिदं तथैव समरे बाहौ करे वा गले ।।
राजानोप्यरयो मदान्ध–करिणः सर्पा मृगेन्द्रादिका ।
ये व यान्ति विमोहिता रिपु–गणा लक्ष्मी स्थिरा सर्वदा ।।

**English:-**

Nityam stotram-idam pavitramahi yo Devyah pathhatyadarat-
dhratva yantram-idam tathaiva samara bhahau kare va gale;
Rajano-apyarayo madandh-karinah sarpah mragendra-adikaste,
Vai yanti vimohita ripu-ganah lakshmi sthira sidhhaya.

***Whosoever reads this text with love and honor, the kings, floods, elephants blind with rutting rage serpents, lions, and the hosts of enemies are confused, and one becomes wealthy, steady and accomplished.***

## Sanskrit:-

त्वं विद्या परमा त्रिलोक –जननी विघ्नौघ–संच्छेदिनी ।
योषाकर्षण–कारिणी त्रिजगतामानन्द सम्वर्धिनी ।।
दुष्टोच्चाटन–कारिणी पशु–मनः सम्मोह–सन्दायिनी ।
जिह्वा–कीलन–भैरवी विजयते ब्रह्मास्त्र विद्या परा ।।

**English:-**

Tvam vidya parama trilok-janani vighnaugh-vichchhedinee,
Koshakarshan-karini-tri-jagatam-anand-vardhinee;
Dusht-uchchatana-karinee jan-manas-sammoha-sandayinee,
Jivha-keelan-Bhairvee vijayate Brahmadi-mantro yatha.
Vidhya Lakshmih sarva-saubhagyam-ayuh putraih pautraih sarva-samarjya-siddhih,
Manam bhogo-vashyama-arogya-sokhyam,
Praptam tattad-bhutale-asmin-narena.

***Maidens, Augmenter of Bliss in the three worlds, up rooter of the wicked, deluder of the minds of people, the Bhairavi who, pegs the tongue, conqueror of all Mantras, causes of accomplishment in knowledge, wealth, all good fortune, long life, sons, daughters, sovereignty giver of inner happiness, giving freedom from fever, cheerfulness, victory on earth, obeisance and obeisance to you.***

**Sanskrit:-**

यत्कृतम् जप–संध्यानं चिन्तनं परमेश्वरि!
शत्रूणां निग्रहार्थाय तद् गृहाण नमोऽस्तुते।।
अनुदिनमभिरामं साधको यस्त्रि–कालम्, पठति स भुवनेऽसौ पूज्यते देव–वर्गैः।
सकलममल–कृत्यं तत्व–दृष्टा च लोके, भवति परम–सिद्धा लोकमाता पराम्बा ।।

**English:**

Yat-kratam jap-sannaham gaditam parmeshwari!

Dushtanama nigraharthaye-tad-grahan-namo-astute;
Anudinam-abhiramam sadhako yastri-kalam,
Pathhati sa bhuvane-asau pujyate deva –vargaih.
Sakalam-mal-kratyam tatva-drashta cha loke;
Bhavati param siddha lok mata paramba.

***O Devi! Accept my japa, saying, recitation and meditation to destroy my enemies, I bow you. Whosoever reads this sacred hymn three times per day, he is worshipped in the world by all the categories of Devatas. His all the desires are fulfilled, a he is known as a perceiver of supreme truth through the three worlds. He is renowned a siddha through the grace of mother Bagla……the mother of all the universe.***

**Sanskrit:-**

ब्रह्मास्त्रमिति विख्यातं त्रिषु लोकेषु विश्रुतम् ।
गुरू–भक्ताय दातव्यं न देयं यस्य कस्यचित् ।।
पीताम्बराम च द्विभुजां त्रिनेत्रा गात्रकोज्वलाम्।
शिलामुद्गर हस्तांच स्मरेत्तां बगलामुखीं ।।

**English:**

Brahmastram-iti vikhyatam trishu lokeshu vishrutam,
Guru-bhaktay datavyam na deyam yasya kasyachit.
Pitambaram cha dvibhujam trinetram gatrakojjwalam,
Shilamudgar-hastanch smarettam baglamukhim.

**Meaning:-**

***One should never give this to those who are not devoted to the Guru. One should meditate Her as having two arms,***

***wearing yellow garments, with three eyes, a body of effulgence, holding cliff and club in her hand, ma Baglamukhi.***

JAI MA

----------

साधकों की दैनिक आवश्यकताओं के अनुसार कुछ अति विशिष्ट मंत्र :-

यंहा मैं कुछ ऐसे मंत्रों का प्रस्तुतिकरण कर रहा हूॅ, जो प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक हैं। किसी भी व्यक्ति के जीवन में कुछ भी घटित हो सकता है, यह एक सार्वभौमिक सत्य है। उन्हीं घटनाओं के समाधान के लिए ये मंत्र प्रस्तुत हैं।

## डायबिटिज के लिए मंत्र

**1.** हुं ।

इस मंत्र को बोलते हुए कपालभाति करने से मधुमेह रोग से छुटकारा मिलता है।

**2.** ॐ हूं क्रां क्रां रं स्वाहा।(अपनी नाभि के पास ध्यान रखते हुए इस मंत्र का सुबह-शाम जप करने से मधुमेह रोग दूर होता है) ।

## शत्रु को वश में करने हेतु

ॐ ह्रीं श्रीं क्रीं ब्लूं ऐं नमः स्वाहा ।

भय नाश के लिए मंत्र

ॐ सं क्षं हंसः ह्रीं ॐ फट् ।

बेचैनी का नाश करने के लिए मंत्र

ॐ क्लीं ह्रीं ऐं ।

शान्ति-प्राप्ति के लिए मंत्र

ॐ भ्रौं भ्रौं शांतिकरायै शं नमः ।

परिवार में प्रेम-वृद्धि हेतु मंत्र

ॐ ह्रीं ह्रीं सौः ॐ फट् ।

असफलता के नाश हेतु मंत्र

ॐ ह्रीं क्लीं नित्य अच्युतेश्वराय नमः ।(इस मंत्र का उच्चारण करते समय अपने आज्ञा-चक्र अर्थात त्रिकुटि पर ध्यान करें)।

## सर्वत्र विजय-प्राप्ति हेतु

ॐ ह्रीं क्रौं क्लीं स्वाहा । (अपने घर में त्रिशूल रखें और भगवान शिव का ध्यान करते हुए इस मंत्र का जप करें)।

## विद्या-प्राप्ति हेतु मंत्र

ॐ ह्रीं भवाय विद्यां देहि ऐं ॐ। (इस मंत्र का जप प्रातः और संध्या काल में करें)।

## रक्त-चाप के लिए (For blood pressure)

ॐ बं ह्रीं वज्रहस्तायै नमः । (इस मंत्र का जप करते समय मन और मस्तिष्क को शांत रखें)।

### लक्ष्मी-स्थिरता के लिए मंत्र

लक्ष्मी देवी की स्थायी स्थिरता के लिए यंहा दो मंत्र दिये जा रहे हैं जिनके निरंतर जप से लक्ष्मी का घर में स्थायी निवास बना रहता है और कभी भी धन का अभाव महसूस नहीं होता।

मंत्रः- प्रथमः- ॐ स्थिरायै महायोगदा श्रीं श्रीं क्लीं अष्टलक्ष्म्यै नमः ।

द्वितीयः- ॐ नमः लक्ष्मी किलि-किलि हिलि-हिलि स्वाहा ।

उपरोक्त दोनों मंत्रों में प्रथम मंत्र वैदिक है और द्वितीय मंत्र साबर है। आधुनिक युग में यह प्रमाणित है कि वैदिक मंत्रों की अपेक्षा साबर मंत्र शीघ्र एवं अवश्यमेव फलदायी प्रमाणित हैं।

## लकवा-रोग से मुक्ति हेतु मंत्र (paralysis)

ॐ क्लौं क्लोधिमतां स्वाहा।

-------------

## तारा-साधना

भगवती तारा मां काली का ही स्वरूप है। मां काली को नीलरूपा होने के कारण ही तारा कहा गया है। भगवती काली का यह स्वरूप सर्वदा मोक्ष देने वाला है, जीव को इस संसार सागर से तारने वाला है- इसलिए वह तारा हैं। सहज में ही वे वाक् प्रदान करने वाली हैं इसलिए नीलसरस्वती हैं। भयंकर विपत्तियों से साधक की रक्षा करती हैं, उसे अपनी कृपा प्रदान करती हैं, इसलिए वे उग्रतारा या उग्रतारिणी हैं।

यद्यपि मां तारा और काली में कोई भेद नहीं है, तथापि बृहन्नील तंत्रादि ग्रंथों में उनके विशिष्ट स्वरूप का उल्लेख किया गया है। हयग्रीव दानव का वध करने के लिए देवी को नील-विग्रह प्राप्त हुआ, जिस कारण वे तारा कहलाईं। शव-रूप शिव पर प्रत्यालीढ मुद्रा में भगवती आरूढ हैं, और उनकी नीले रंग की आकृति है तथा नील कमलों के समान तीन नेत्र तथा हाथों में कैंची, कपाल, कमल और खडग धारण किये हैं। व्याघ्र-चर्म से विभूषित इन देवी के कंठ में

मुण्डमाला लहराती है। वे उग्र तारा हैं, लेकिन अपने भक्तों पर कृपा करने के लिए उनकी तत्परता अमोघ है । इस कारण मां तारा महा-करूणामयी हैं।

तारा तंत्र में कहा गया है-

समुद्र मथने देवि कालकूट समुपस्थितम् ।।

समुद्र मंथन के समय जब कालकूट विष निकला तो बिना किसी क्षोभ के उस हलाहल विष को पीने वाले भगवान शिव ही अक्षोभ्य हैं और उनके साथ तारा विराजमान हैं। शिवशक्ति संगम तंत्र में अक्षोभ्य शब्द का अर्थ महादेव कहा गया है। अक्षोभ्य को दृष्टा ऋषि शिव कहा गया है। अक्षोभ्य शिव ऋषि को मस्तक पर धारण करने वाली तारा तारिणी अर्थात् तारण करने वाली हैं। उनके मस्तक पर स्थित पिंगल वर्ण उग्र जटा का भी अद्भूत रहस्य है। ये फैली हुई उग्र पीली जटाएं सूर्य की किरणों की प्रतिरूपा हैं। यह एकजटा है। इस प्रकार अक्षोभ्य एवं पिंगोग्रैक जटा धारिणी उग्र तारा एकजटा के रूप में पूजी जाती हैं। वे ही उग्र तारा शव के हृदय पर चरण रखकर उस शव को शिव बना देने वाली नील सरस्वती हो जाती हैं।

सर्वप्रथम महर्षि वशिष्ट ने भगवती तारा की वैदिक रीति से आराधना की, परंतु वे सफल नहीं हुए। तब उन्हें उनके पिता ब्रह्मा जी से संकेत मिला कि वे तांत्रिक पद्धति से भगवती तारा की उपासना करें तो वे निश्चय ही सफल होंगें। उस समय केवल भगवान बुद्ध ही इस विद्या के आचार्य माने जाते थे। अतः महर्षि वशिष्ठ चीन देश में निवास कर रहे भगवान बुद्ध के पास पंहुचे, जिन्होंने महर्षि को चीनाचार पद्धति का उपदेश दिया। तदोपरान्त ही वशिष्ठ जी को भगवती तारा की सिद्धि प्राप्त हुई।

इसी कारण कहा जाता है कि भगवती तारा की उपासना तांत्रिक पद्धति से ही सफल होती है।

महाकाल-संहिता के कामकला-खण्ड में तारा-रहस्य वर्णित है, जिसमें तारा-रात्रि में भगवती तारा की उपासनाका विशेष महत्व है। चैत्र मास की शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि की रात्रि को तारा-रात्रि कहा जाता है।

बिहार प्रदेश के सहरसा जनपद में प्रसिद्ध 'महिषि' ग्राम में भगवती उग्रतारा की सिद्धपीठ स्थित है। इस पवित्र स्थान में मां तारा, एकजटा एवं नीलसरस्वती की त्रिमूर्तियां एक साथ स्थापित हैं। वंहा मध्य में बड़ी प्रतिमा तथा उसके दोनों ओर छोटी प्रतिमाएं स्थापित है। किवदंति के अनुसार यही वह स्थल

है, जंहा महर्षि वशिष्ठ ने मां तारा की उपासना करके सिद्धि प्राप्त की थी। वास्तव में भगवती तारा का रहस्य अत्यन्त ही चमत्कारपूर्ण है।

मेरी यह मां सर्वमयी, नूतन जलधर स्वरूपा लम्बोदरी हैं। उन्होंने अपने कटि प्रदेश में व्याघ्र चर्म लपेटा हुआ है, उनके स्तन स्थूल एवं समुन्नत कुच वाले हैं, उनके तीनों नेत्र लाल-लाल और वृताकार हैं, उनकी पीठ पर अत्यंत घोर घने काले केश फैले हुए हैं, उनका सिर अक्षोभ्य महादेव के प्रिय नाग के फनों से सुशोभित है, उनकी दोनों बगलों में नील कमलों की मालाएं शोभित हो रही हैं, ऐसी मां तारा का मैं ध्यान करता हूँ।

पंचमुद्रा-स्वरूपिणि, शुभ्र त्रिकोणाकार कगल पंचक को धारण करने वाली, अत्यंत नील जटाजूट वाली, विशाल चंवर मुद्रा रूपी केशों से अलंकृत, श्वेतवर्ण के तक्षक नाग के वलय वाली, रक्त वर्ण सर्प के समान अल्पाहार वाली, विचित्र वर्णों वाले शेषनाग से बने हार को धारण करने वाली, सुनहले पीतवर्ण के छोटे-छोटे सर्पों की मुद्रिकाएं धारण करने वाली, हल्के लाल रंग के नाग की बनी कटिसूत्र वाली, दूर्वादल के समान श्यामवर्ण के नागों के वलय वाली, सूर्य, चन्द्र, अग्निस्वरूप, त्रिनयना, करोड़ो बाल रवि की छवियुक्त दक्षिण नेत्र वाली, कोटि-कोटि बालचन्द्र के समान शीतल नयनों वाली, लाखों अग्निशिखाओं से भी तीक्ष्ण तेजोरूप नयनों वाली, लपलपाती जिह्वा वाली, महाकाल रूपी शव के हृदय पर दायें पद को कुछ मुड़ी हुई मुद्रा में एवं उसके दोनों पैरों पर अपने बायें पैर को फैली हुई अवस्था में उस प्रत्यालीढ़ पद वाली महाकाली का हम ध्यान करते हैं, जो तुरन्त ही कटे हुए रूधिराक्त केशों से गूंथे गये मुण्डमालों से अत्यन्त रमणीय हो गयी हैं। समस्त प्रकार के स्त्री-आभूषणों से विभूषित एवं महामोह को भी मोहने वाली हैं, महामुक्ति दायिनि, विपरीत रतिक्रीड़ा, निरता एवं रति कामावेश के कारण आनन्दमुखी है।

भगवती तारा का ध्यान अपने कर्म या लक्ष्य के अनुसार किया जाता है। सर्व प्रथम मैं उनके सात्विक ध्यान का उल्लेख कर रहा हूँ जिसे सृष्टि ध्यान भी कहा जाता है

## सात्विक ध्यान

श्वेताम्बराढ्यां हंसस्थां मुक्ताभरणभूषिताम्।
चतुर्वक्त्रामष्टभुजैर्दधानां कुण्डिकाम्बुजे ।।

वराभये पाशशक्ती अक्षस्रक्पुष्पमालिके ।
शब्दपाथोनिधौ ध्यायेत् सृष्टिध्यानमुदीरितम् ।।

अर्थात् -

सफेद वस्त्र धारण किये हुए, हंस पर विराजित, मोती के आभूषणों से अलंकृत, चार मुखों वाली तथा अपनी आठ भुजाओं में क्रमशः कमण्डल, कमल, वर, अभय मुद्रा, पाश, शक्ति, अक्षमाला एवं पुष्पमाला धारण किये हुए शब्द समुद्र में स्थित महाविद्या का ध्यान करें ।

भगवती का राजस ध्यान, जिसे स्थिति ध्यान भी कहा जाता है, निम्नवत् हैः-

## राजसी ध्यान

रक्ताम्बरां रक्तसिंहासनस्थां हेमभूषिताम्।
एकवक्त्रां वेदसंख्यैर्भुजैः संबिभ्रतीं क्रमात् ।।
अक्षमालां पानपात्रम-भयं वरमुत्तमम् ।
श्वेतद्वीपस्थितां ध्यायेत् स्थितिध्यानमिदं स्मृतम्।।

अर्थात् -

रक्त वर्ण के वस्त्र धारण किये हुए, रक्त वर्ण के सिंहासन पर विराजित, सुवर्ण से बने आभूषणों से सुशोभित, एक मुख वाली, अपनी चार भुजाओं में अक्षमाला, पानपात्र, अभय एवं वर मुद्रा धारण किये हुए श्वेतद्वीप निवासिनी भगवती का ध्यान करें।

इसके अतिरिक्त भगवती तारा का तामस ध्यान भी है, जिसे संहार ध्यान कहा जाता है, वह निम्नवत् हैः-

## तामस ध्यान

कृष्णाम्बराढ्यां नौसंस्थामस्थ्याभरण-भूषिताम् ।
नववक्त्रां भुजैरष्टादशभिर्दधतीं वरम्।।
अभयं परशुं दर्वीं खड्गं पाशुपतं
हलम् ।
भिण्डिं शूलं च मुसलं कर्त्रीं शक्तिं त्रिशीर्षकम् ।।

अर्थात् -

काले रंग का वस्त्र धारण किये हुए, नौका पर विराजित, हड्डी के आभूषणों से विभूषित, नौ मुखों वाली, अपनी अट्ठारह भुजाओं में वर, अभय, परशु, दर्वी, खड्ग, पाशुपत, हल, भिण्डि, शूल, मूशल, कैंची, शक्ति, त्रिशूल, संहार अस्त्र, पाश, वज्र, खट्वांग और गदा धारण करने वाली रक्त-सागर में स्थित देवी का ध्यान करना चाहिए।

भगवती तारा के साधक को क्रूर कर्मों में संहार ध्यान, उच्चाटन एवं वशीकरण कर्मों में स्थिति ध्यान तथा पौष्टिक एवं शांति आदि कर्मों में सृष्टि ध्यान करना चाहिए।

तारावर्ण के अनुसार ऋषि वशिष्ठ ने लम्बे समय तक भगवती तारा की उपासना की, लेकिन उन्हें सिद्धि नहीं प्राप्त हुई । अन्त में उन्होंने क्रोधित होकर देवी को शाप दे दिया, परिणामतः यह विद्या फल प्रदान करने में असमर्थ हो गयी ।

कुछ समय पश्चात क्रोध शांत होने पर ऋषि ने इसका शापोद्धार प्राप्त किया। शापोद्धार करते समय ताराबीज 'त्रीं ' में स-कार का योग करने से इसका शाप दूर हो जाता है। तभी से यह विद्या वधू के समान यशस्विनि हो गयी और भगवती तारा का यह बीज ' त्रीं ' वधू बीज कहलाने लगा।

भगवती तारा के भिन्न -भिन्न नाम हैं। उन्हें एकजटा तारा, उग्रतारा, नीलसरस्वती तारा के रूप में जाना जाता है। यंहा मैं उनके पंचाक्षर मंत्र का विधान स्पष्ट कर रहा हूँ।

विनियोग :- ॐ अस्य श्री तारा मंत्रस्य अक्षोभ्य ऋषिः, बृहती छन्दः, तारा देवता, ह्रीं बींज, हुं शक्तिः आत्मनोऽभिष्ट सिद्धयर्थं तारामंत्र जपे विनियोगः।

यंहा यह भी स्मरणीय है कि भगवती तारा उग्र विपत्ति से साधक का उद्धार करती हैं, इसीलिए उन्हें उग्रतारा कहा जाता है। अतः इस प्रकार के प्रयोग करते समय जब विनियोग करें तो ' हुं ' बीज तथा 'फट ' शक्ति का प्रयोग करें । उस समय ह्रीं बीज, हुं शक्ति का प्रयोग नहीं करना चाहिए। इससे राजद्वार, राजसभा, राजकार्य, विवाद, संग्राम एवं द्यूत आदि कार्यों में साधक को निश्चय ही विजय प्राप्ति होती है।

ऋष्यादिन्यासः- ॐ अक्षोभ्य ऋषये नमः शिरसि ।

ॐ बृहती छन्दसे नमः मुखे ।

ॐ तारादेवतायै नमः हृदि ।

ॐ ह्रीं ( हूं) बीजाय नमः गुह्ये।

ॐ हूं(फट्) शक्तये नमः पादयोः।

ॐ स्त्रीं कीलकाय नमः सर्वांगे ।

करांगन्यास :-

ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः ।

ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः ।

ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।

ॐ ह्रः करतल-कर-पृष्ठाभ्यां नमः ।

करांगन्यास के समान ही हृदयादि न्यास करें।

मंत्र : ॐ ह्रीं स्त्रीं हुं फट् । (भगवती तारा का यह पंचाक्षरी मंत्र है।)

------------------

## आर्थिक, सामाजिक एंव शासकीय शक्ति प्राप्ति हेतु मंत्रः-

**अनेकों** बार ऐसा देखने में आया है कि हम आर्थिक, सामाजिक एवं राजकीय शक्ति प्राप्त करने हेतु अनेकानेक उपाय करते है, परन्तु हमारा कोई प्रयोग सफल नहीं हो पाता है। इस संदर्भ में श्री दुर्गा सप्तशती के कई ऐसे मंत्र हैं, जिनका प्रयोग विशिष्ट रूप से किया जाता है। लेकिन यदि उन मंत्रों के साथ सम्पुट लगाकर प्रयोग में लाया जाये तो वे त्वरित और निःसंदेह फल प्रदान करते हैं।

इसी संदर्भ में मैं श्री दुर्गा सप्तशती से सम्बन्धित एक सम्पुटित मंत्र का उल्लेख कर रहा हूँ । मेरा आपसे आग्रह है कि यदि आपने अनेकों अनुष्ठान, जप, पूजा आदि कर लिये हैं और आप अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो सके हैं, तो कृपया सच्ची लगन और पूर्ण समर्पण भाव के साथ भगवती दुर्गा जी के इस सम्पुटित मंत्र का दस हजार की संख्या में एक बार अनुष्ठान अवश्य करें । उसके उपरान्त एक हजार की संख्या में शुद्ध घी, तिल, खीर, गुग्गुल से आहुतियां दें। समिधा में पालाश का प्रयोग करें । उसके बाद १०८ बार तर्पण एवं ११ बार मार्जन करके नौ अथवा श्रद्धानुसार कुमारियों को भोजन करायें। अपने बडे-बुजुर्गों एवं गुरूदेव का आशीर्वाद प्राप्त करें। निश्चय ही आपको सफलता प्राप्त होगी ।

संकल्प आदि के उपरान्त सर्वप्रथम विनियोग करें-

विनियोगः- ॐ अस्य श्री सृष्टि-स्थिति-विनाशानां इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य षडाशीति-मन्त्रस्य श्री वह्नि-पुरोगमा ब्रह्मादयो सेन्द्रा सुरा ऋषयः, श्री महा सरस्वती देवता, प्रीं बीजं, श्रीक्षुधा शक्तिः, श्रीतारादि-दश महाविद्याः, सतो गुण प्रधान त्रिगुणा, घ्राण-प्रधान-पंच ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, कर प्रधान पंच कर्मेन्द्रियाणि, स्तवन स्वरः, पंच तत्वानि तत्वं, पंच कलाः ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, स्तवन मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुराराग्याभि-वृद्धयर्थं श्री

जगदम्बा-योगमाया भगवती दुर्गा प्रसाद सिद्धयर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य षडाशीति मन्त्र जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः- श्री वह्नि-पुरोगमा-ब्रह्मादयो-सेन्द्रा-सुरा-ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे-शिरसि, श्री महा सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे-हृदि, प्रीं वीजाय नमः षडारे-लिंगे, श्रीक्षुधा-शक्तयै नमः दशारे नाभौ, श्री तारादि दश महाविद्याभ्यो नमः षोडशारे-कंठे, सतो-गुण-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे मनसि, घ्राण-प्रधान-पंच ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त रसाय नमः चेतसि, कर प्रधानपंच कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, स्तवन स्वराय नमः कंठ मूले, पंच तत्वानि तत्वेभ्यो नमः चतुरारे गुदे पंच कलाभ्यो नमः करतले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, स्तवन मुद्रायै नमः सर्वांगे, मम क्षेम-स्थैर्यायुराराग्याभि-वृद्धयर्थं श्री जगदम्बा-योगमाया भगवती दुर्गा प्रसाद सिद्धयर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य षडाशीति मन्त्र जपे विनियोगाय नमः अंजलौ ।

| | कर न्यासः | षडंग न्यास |
|---|---|---|
| ॐ ऐं प्रीं | अंगुष्ठाभ्यां नमः | हृदयाय नमः |
| नमो नमः | तर्जनीभ्यां नमः | शिरसे स्वाहा |
| सृष्टि स्थिति विनाशानां | मध्यमाभ्यां नमः | शिखायै वषट् |
| शक्ति भूते सनातनि | अनामिकाभ्यां हुम् | कवचाय हुम् |
| गुणाश्रये गुणमये | कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् | नेत्र त्रयाय वौषट् |
| नारायणि नमोऽस्तु ते | करतल कर पृष्ठाभ्यां फट् | अस्त्राय फट् |

### ध्यान

आरूढा काल-चक्रे रचति स्थिति-विनाशाग्र-सम्मोहयित्री ।
हंस-ब्रह्म-स्वरूपिणी जल-धरा शारदाम्बा सदा प्रसन्ना ।।

### मंत्र

ॐ ऐं प्रीं नमः सृष्टि-स्थिति-विनाशानां, शक्ति-भूते सनातनि! गुणाश्रये गुण-मये, नारायणि नमोऽस्तु ते नमो प्रीं ऐं ॐ ।।

*********

## घोर दारिद्रय विनाशक ऋण-हरण गणपति स्तोत्र

प्रिय साधकों ! यंहा मैं स्पष्ट करना चाहूंगा कि दरिद्रता को जीवन में कंही भी आश्रय नहीं मिला है। यदि हम अपने पुरातन ग्रंथों को टटोलकर देखें तो उनमें किसी भी स्थान पर दीनता या दरिद्रता की प्रसंशा नहीं की गयी है। हमारे कोई भी ऋषि, सिद्ध योगी, मुनि या तपस्वी कभी दरिद्र नहीं रहे। धन के महत्व को उन्होंने भी समझा था और स्वीकार किया था कि जीवन की पूर्णता दरिद्रता, दीनता, अथवा गरीबी में कंही नहीं है बल्कि समृद्धि, सुख सौभाग्य में है।

यदि मेहनत से ही समृद्धि प्राप्त होती तो जो मजदूर पत्थर तोड़ने वाले अथवा मेहनतकश मजदूर कारीगर हैं, वे सभी लखपति, करोड़पति अथवा अरबपति होते, क्योंकि वे नित्य घोर परिश्रम करते हैं और आवश्यकता से अधिक शरीर तोड़कर कार्य करते हैं, लेकिन फिर भी उनके जीवन में दरिद्रता बनी रहती है। इसका अर्थ यह है कि केवल परिश्रम मात्र से ही जीवन में धनी नहीं बना जा सकता है।

कुछ लोग भाग्य पर भरोसा करते हैं। लेकिन भाग्य के सहारे आप कब तक बैठ सकते हैं । आप भली प्रकार समझ लें कि केवल भाग्य के भरोसे बैठे रहने से ही जीवन में सुख-समृद्धि प्राप्त नहीं हो सकते है। उनके लिए प्रयास की आवश्यकता होती है। लेकिन यदि प्रयास के साथ-साथ दैवीय शक्ति की प्राप्ति हो जाये तो सफलता निश्चित हो जाती है। इसी निशिचिंतता के लिए यंहा द्रारिद्रय-विनाश,

ऋण-मुक्ति एवं समृद्धि के लिए गणपति महाराज का प्रयोग स्पष्ट किया जा रहा है। इस प्रयोग के माध्यम से कोई अभागा ही होगा, जो कर्जे से छुटकारा ना पाकर दरिद्रता का बाना धारण किये ही रह गया हो।

दपीपस ऋण हर्तृ गणेश देवतायै नमः हृदि।
ग्लौं बीजाय नमः गुह्ये ।
गः शक्तये नमः पादयोः ।

गौ कीलकाय नमः सर्वांगे ।
हृदयादि-न्यास :- कर-न्यास हृदयादि-न्यास

| | कर-न्यास | हृदयादि-न्यास |
|---|---|---|
| ॐ गणेश | अंगुष्ठाभ्यां नमः । | हृदयाय नमः। |
| ऋणं छिन्धि | तर्जनीभ्यां नमः । | शिरसे स्वाहा । |
| वरेण्यं | मध्यमाभ्यां नमः। | शिखायै वषट् । |
| हुं | अनामिकाभ्यां नमः। | कवचाय हुं । |
| नमः | कनिष्ठिकाभ्यां नमः । | नेत्र त्रयाय वौषट् । |
| फट् | करतल-कर-पृष्ठाभ्यां नमः । | अस्त्राय फट्। |

## ध्यान

ॐ सिन्दूरवर्ण द्विभुजं गणेशं लम्बोदरं पद्मदले निविष्टम् ।
ब्रह्मादि देवै परिसेव्यमानं सिद्धैर्युतं तं प्रणमामि देवम् ।।

## जप-मंत्र

ॐ गणेश ऋणं छिन्धि वरेण्यं हुं नमः फट् ।

## स्तोत्र

सृष्ट्यादौ व्रह्मणा सम्यक् पूजिता फल सिद्धये,
सदैव पार्वती पुत्र ऋणनाशं करोतु मे ।।१।।
त्रिपुरस्य वधात्पूर्वं शम्भुना सम्यगर्चितः,
सदैव पार्वती पुत्र ऋणनाशं करोतु मे ।।२।।
हिरण्यकस्यप्वादीनां वधार्थे विष्णुनार्चितः,
सदैव पार्वती पुत्र ऋणनाशं करोतु मे ।।३।।
महिषस्य वधे देव्या गणनाथ प्रपूजितः,
सदैव पार्वती पुत्र ऋणनाशं करोतु मे ।।४।।
तारकस्य बधात्पूर्व कुमारेण प्रपूजितः,
सदैव पार्वती पुत्र ऋणनाशं करोतु मे ।।५।।
भास्करेण गणेशोहि पूजितच्छवि सिद्धये,
सदैव पार्वती पुत्र ऋणनाशं करोतु मे ।।६।।
शशिना कान्तिवृद्धयर्थं पूजितो गणनायकः,
सदैव पार्वती पुत्र ऋणनाशं करोतु मे ।।७।।
पालनाय च तपसां विश्वामित्रेण पूजितः,
सदैव पार्वती पुत्र ऋणनाशं करोतु मे ।।८।।

..................

## जगद्वश्यकरी बगलामुखी मंत्र

मां बगलामुखी को सामान्यतः सभी लोग शत्रुओं का नाश करने वाली, उनकी गति, मति, बुद्धि का स्तम्भन करने वाली, मुकदमे एवं चुनाव आदि में विजय दिलाने वाली शक्ति के रूप में जानते हैं । लेकिन यह बात केवल कुछ ही लोग जानते हैं कि वे जगत का वशीकरण भी करने वाली हैं। यदि उनकी कृपा प्राप्त हो जाये तो साधक की ओर सभी आकर्षित होने लगते हैं, वह जंहा बोलता है, वंही उसे सुनने को जन समूह उमड़ पड़ता है। उसका दायरा बहुत व्यापक हो जाता है। कोई भी स्त्री, पुरूष, बच्चा उसके आकर्षण में ऐसा बंध जाता है कि अपनी सुध-बुध खो बैठता है और वही करने के लिए विवश हो जाता है, जो साधक चाहता है।

इस साधन को करने के लिए अति गोपनीय मंत्र का उल्लेख मैं यंहा साधकों के लिए कर रहा हूॅ । लेकिन साधक सदैव स्मरण रखें कि ऐसी साधनाओं का दुष्प्रयोग कभी नहीं करना चाहिए अन्यथा साधक की साधना क्षीण होने लगती है। मंत्र का प्रयोग सदैव समाज कल्याण के लिए करना चाहिए, न कि समाज-विरोधी गतिविधियों के लिए ।

सर्व प्रथम विनियोगादि करने के उपरान्त भगवती बगलामुखी का ध्यान करें, यथा-

गौरी पीताम्बरधरा पीतस्रगनुलेपना।
रत्नसिंहासनगता रत्नालंकार-भूषिता।।
त्रिनेत्रा चन्द्रशकलविराजित ललाटिका ।
सौन्दर्यसारविजित जगल्लावण्य पुंजिका।।
चतुर्भुजांकुशवरे दक्षिणे बिभ्रति करे ।
तथैव धारयन्ती च वामे दीपाभये करे।।

इसके उपरान्त मंत्र का जप करें -

मंत्रः- ॐ नमो भगवत्यै पीताम्बरायै ह्रीं ह्रीं सुमुखि बगले विश्वमेतं वशं कुरू कुरू स्वाहा ।

सामान्यतः एक लाख की संख्या में जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है, लेकिन यदि प्रयोग सफल न हो तो पुनः एक लाख की संख्या में जप करना चाहिए ।

# त्रिपुर भैरवी-साधना

भगवती त्रिपुर भैरवी मां त्रिपुरसुन्दरी की रथवाहिनी हैं और दश महाविद्याओं में इनका छठा स्थान है। इनके भैरव दक्षिणामूर्ति कालभैरव हैं । ब्रह्माण्ड पुराण के अनुसार इन्हें गुप्त योगिनियों की अधिष्ठात्री देवी के रूप में बताया गया है। इन्हें कोलेश भैरवी, रूद्र भैरवी, चैतन्य भैरवी, नित्या भैरवी, सिद्धि भैरवी, भुवनेश्वरी भैरवी, कमलेश्वरी भैरवी, भुवनेश्वरी भैरवी, कामेश्वरी भैरवी, षट्कूटा भैरवी आदि के रूप में भी जाना जाता है।

त्रिपुर भैरवी का मुख्य उपयोग घोर कर्मों में होता है। अपनी इन्द्रियों पर विजय प्राप्ति और जीवन में सर्वत्र एवं समस्त प्रकार के उत्कर्ष की प्राप्ति के लिए इनकी उपासना की जाती है। सभी प्रकार के संकटों के निवारण हेतु भी इनका अनुष्ठान, उपासना की जाती है।

तंत्र ग्रंथों के अनुसार मां त्रिपुर भैरवी प्रणव स्वरूप हैं । इन्हीं से समस्त लोक प्रकाशित होते हैं और अन्त में इन्हीं में लय हो जाते हैं । इन्हें उमा भी कहा गया है, जिन्होंने भोलेनाथ को पति के रूप में प्राप्त करने के लिए कठोर तपस्या की। उनका दृढ़ निश्चय स्वरूप ही उनका परिचायक है। ये सूक्ष्म वाक् एवं जगत् के मूल कारण की अधिष्ठात्री हैं ।

## -- कुछ गोपनीय तंत्र-साधनाएं --

प्रिय साधकों ! वास्तव में मंत्र और तंत्र के मध्य अटूट सम्बन्ध है। यदि हम कोई भी साधना मात्र मांत्रिक विधि से सम्पन्न करते हैं तो उसमें विलम्ब होता है । लेकिन यदि वही साधना हम तांत्रिक रीति से सम्पन्न करते हैं, तो वह शीघ्र और प्रभाव पूर्ण फलदायी होती है। उसे हम जिस भी कार्य के लिए सम्पन्न करते हैं, उसका त्वरित फल हमें प्राप्त होता है।

तंत्र से अभिप्राय तकनीक से है। किसी भी कार्य को तकनीकी एवं व्यवस्थित ढंग से सम्पादित करना ही तंत्र कहलाता है। तांत्रिक क्रिया सम्पन्न करते समय हम किसी देवी-देवता के समक्ष न तो हाथ जोड़ते हैं, न गिड़गिड़ाते

हैं, ना प्रार्थना करते हैं, वरन् अदम्य उत्साह के साथ सम्बन्धित देवी-देवता की आंखों में आंखे डालकर अपने कार्य की सिद्धि के लिए उसे विवश कर देते हैं।

मेरे पास बहुत से स्त्री-पुरूषों के फोन व ई-मेल आते रहते हैं, जिनकी भिन्न-भिन्न समस्याएं होती हैं । लेकिन इन समस्याओं में सर्वाधिक समस्याएं ऐसी हैं, जिनका सम्बंध केवल पति-पत्नि के मध्य विवाद, मुकदमें और आजिविका में अचानक आने वाली अड़चनों से होता है। कन्या एवं पुत्रों के विवाह में विलम्ब भी एक कठिन समस्या प्रतीत होती है। ऐसी स्थितियों के निराकरण हेतु मैं कुछ प्रयोग यंहा प्रस्तुत कर रहा हूं ।

## पति-वशीकरण-प्रयोग

नई दिल्ली में स्थित एक पाश कालोनी निवासी एक सभ्रांत महिला, जो काफी समय से मेरी अनुयायी हैं, एक दिन मेरे पास आयीं और उन्होंने मुझे बताया कि उन्होंने मुझसे एक बात आज तक छुपा रखी थी कि उनके पति किसी अन्य अविवाहित महिला के पाश में बंधे हुए हैं और वे कई-कई दिन घर आते ही नहीं हैं और यदि आते भी हैं तो मुझसे व बच्चों से अभद्र व्यवहार करते हैं और तुरन्त ही वापस चले जाते हैं । अब उन्हें न तो मेरी चिन्ता है और न ही बच्चों की । घर के खर्च देने के नाम पर भी या तो कन्नी काटने लगते हैं या फिर झगड़ा करके तुरन्त चले जाते हैं ।मैं यदि कुछ कहने का प्रयास करती हूं तो वे मुझसे सम्बन्ध विच्छेद करने की धमकी देते हैं ।

उसकी बातें सुनकर मेरा मन भी विह्वल हो उठा। मैंने खूब मंथन किया और उन्हें एक वशीकरण यंत्र दिया। मैंने उन्हें निर्देश दिया कि इस यंत्र पर प्रतिदिन जल चढ़ाएं और फिर उस जल को पूरे निवास स्थान में छिड़क दें। मैंने उन्हें यह भी बताया कि इस यंत्र को पूजा-स्थल में रखकर तब तक निम्नांकित मंत्र का जप करती रहें, जब तक उनके पति पूर्णतः उनके अनुकूल न हो जायें । जब मंत्र का परिणाम प्राप्त हो जाये तो उस यंत्र को किसी चलती हुई नदी में प्रवाहित कर दें ।

इस घटना के लगभग डेढ़ माह बाद वे महिला मेरे पास आयीं तो उनका मुख प्रसन्नता से अभिभूत था। उन्होंने स्वीकार किया कि वास्तव में तंत्र-मंत्र में अद्भुत शक्ति होती है । पूजा आरम्भ करने के लगभग १५-२० दिन तक कुछ

भी प्रतीत नहीं हुआ लेकिन उसके बाद मेरे पतिदेव और उस पतित महिला के मध्य ऐसा घमासान हुआ कि उस महिला ने मेरे पति को जूते मारे और घर से बाहर निकाल दिया। मेरे पति ने भी उस महिला की चोटी तेज धार वाले चाकू से काट दी । और इस सबका परिणाम यह हुआ कि मेरे पति ने घर आकर मुझसे माफी मांगी और शपथ ली कि आज के बाद वे कभी भी उस स्त्री के घर नहीं जायेगें ।

उस दिन के उपरान्त वे नियमित रूप से घर आ रहे हैं और अपने पति एंव पिता धर्म का अनुपालन कर रहे हैं ।

यह मंत्र और तंत्र किसी के द्वारा भी किसी पर भी किया जा सकता है। भले ही वे प्रेमी-प्रेमिका हों, पति-पत्नी हों, या फिर कोई भी हों । जब कहीं भी वशीकरण सम्बंधी कोई भी समस्या हो तो इस मंत्र एवं तंत्र का प्रयोग वंहा किया जा सकता है।

मंत्रः- ॐ ह्रीं अनंगाय अमुकं वश्यमानाय ह्री ॐ फट् ।।

अमुक शब्द के स्थान पर उस व्यक्ति का नाम लें जिसका वशीकरण आपको करना है। निश्चित रूप से मानिए कि यह मंत्र स्वयं में पूर्ण सिद्धिप्रद एवं अचूक है।

## शीघ्र विवाह हेतु

लम्बे समय से मेरे अनुयायी हेतराम एक दिन मेरे पास आये और बातों ही बातों में उन्होंने मुझे बताया कि उनकी पुत्री की आयु २८ वर्ष की हो चुकी है, लेकिन उसकी शादी नहीं हो पा रही है। उस लड़की की कुण्डली में भी ऐसा दोष था कि वह आजीवन अविवाहित ही रहेगी । मैंने उन्हें निर्देश दिया कि वे अपनी पुत्री को मेरे पास लायें ।

उसी दिन शाम को वे अपनी पुत्री को लेकर मेरे पास आ गये । तब मैंने उस कन्या को 'कामदेव रति यन्त्र' देकर 'कामदेव रति गायत्री मंत्र' भी दिया और कहा कि यदि वह सम्पूर्ण विश्वास के साथ यंत्र को पूजा स्थल में रखकर मंत्र का सवा लाख जप करेगी तो कुछ ही दिनों में उसे श्रेष्ठ वर की प्राप्ति होगी ।

मैंने उसे यह भी बताया कि वह प्रातः काल में उठकर स्नानोपरान्त भगवान सूर्य को सात बार जल का अर्घ्य दे और उसके उपरान्त आसन पर बैठकर हकीक की माला से निम्नांकित मंत्र का सवा लाख का अनुष्ठान नियमपूर्वक चालीस दिन में करे।

उस बालिका ने ऐसा ही किया और मुझे उस समय प्रसन्नता हुई जब हेतराम ने मुझे एक दिन आकर बताया कि उसकी पुत्री का विवाह एक सम्पन्न और सभ्रान्त परिवार में हो गया है। आज विभा तीन बच्चों की माता हैं और सुखी-समृद्ध जीवन बिता रही हैं।

कामदेव रति गायत्री मंत्र निम्नवत् हैः-

मंत्रः-ॐ कामदेवाय विद्महे, रति-प्रियायै धीमहि, तन्नो अनंग प्रचोदयात्।।

----------

## पत्नी की आयु पति को अथवा पति की आयु पत्नी को दी जा सकती है---

यह एक तांत्रिक विधान है, जिसमें यदि कुण्डली के अनुसार पति की आयु कम हो अथवा पत्नी की आयु कम हो तो पति या पत्नी परस्पर अपनी आयु का कुछ भाग देकर दूसरे की आयु में कुछ वर्ष जोड़ सकते हैं। परन्तु यंहा यह आवश्यक है कि आयु के कुछ वर्ष देने वाला व्यक्ति स्वेच्छा से यह कार्य करे। यद्यपि यह एक कठिन क्रिया है लेकिन तंत्र के द्वारा यह सब सम्भव है।

यदि कोई भी व्यक्ति यह क्रिया सम्पन्न करना चाहता है तो वह दम्पति मेरे पास आये।

इस विधान में ५१ तेल के दीपकों की आवश्यकता होती है। सर्वप्रथम ५१ सरसों के तेल के दीपक जलाकर दम्पति के चारों ओर रख दें। तदोपरान्त इस प्रयोग को सम्पन्न करें। इसके बाद जो व्यक्ति अपनी आयु देना चाहता है वह अपने हाथ में जल से भरा लोटा लेकर दूसरे व्यक्ति की केवल चार बार परिक्रमा करे, साथ ही यह भी उच्चारण करे कि ‘ मैं अपनी आयु में से इतने

वर्ष इस व्यक्ति को दे रहा हूँ अथवा दे रही हूँ । इसके बाद आयु देने वाला व्यक्ति लोटे में भरे जल से आयु प्राप्त करने वाले व्यक्ति के पलंग के चारो और चक्र सा बना दे ।

इस क्रिया को सम्पन्न करने से निश्चय ही संकल्पित आयु दूसरे व्यक्ति को मिल जाती है।

ऐसे विशिष्ट प्रयोग को करने से यदि कोई व्यक्ति अकाल मृत्यु को प्राप्त हो रहा हो, जिसके बचने की कोई आशा शेष न रह गयी हो, वह भी जी उठता है।

..................................

## कुछ तांत्रिक टोटके

**राज कार्य सिद्धि हेतुः-** किसी भी शनिवार के दिन सवा किलो गेंहू के आटे का एक रोट बनाकर उस पर घी, शक्कर और शहद लगाकर किसी भी हनुमान मंदिर में जाकर हनुमान जी को उसका भोग लगाएं । ऐसा तीन-चार बार करें तो राजकीय कार्य में सफलता निश्चित रूप से प्राप्त होती है।

**अभिष्ट-सिद्धि हेतु :-** किसी सफेद छोटे कागज पर अपनी इच्छा लिखकर उसकी गोली बनाकर गेंहू के आटे में लपेट लें । इसी प्रकार १०१ गोलियां बनाएं और उन्हें मछलियों को खिलाएं। इस उपाय से शीघ्र ही मनोकामना पूर्ण होती है।

**समस्त बाधाओं के निवारण हेतुः-** शुद्ध काले हकीक की माला धारण करने से व्यक्ति के जीवन में आने वाली बाधाएं समाप्त होने लगती हैं और उसके समस्त कार्य निर्विघ्न होने लगते हैं।

..........................

## अघोर मंत्र

साधारण तो क्या विशेष लोग भी 'अघोर' नाम लेते ही एक अनचाही भाव-भंगिमा व्यक्त करने लगते हैं। लेकिन यदि वास्तव में देखा जाये तो अघोर-साधना तंत्र का श्रेष्ठतम स्वरूप है।

यंहा मैं कुछ अघोर मंत्रों का उल्लेख कर रहा हूँ, जो तीक्ष्ण तलवार के समान प्रभावशाली हैं। यदि इन मंत्रों का प्रयोग विशिष्ट कार्य के लिए कर दिया जाये तो निश्चित ही उनके अचूक परिणाम प्राप्त होते है।

: सम्मोहन मंत्र :

।। ॐ ह्लूं अमुक सम्मोहनाय ह्लूं फट् ।।

साधना-विधिः- अपने पूजा स्थल के सामने बैठकर मंदिर में किसी प्लेट आदि पर अघोर सम्मोहन यंत्र रखें । तदोपरान्त उस यंत्र के पास ही उस व्यक्ति का फोटो रखें, जिसका आप सम्मोहन करना चाहते है। रूद्राक्ष माला से उपरोक्त लिखे मंत्र का १०८० अर्थात् दस माला जप करें । इसके उपरान्त फोटो को यंत्र के साथ बांधकर किसी स्थान पर रख दें। ऐसा करने पर सम्बन्धित व्यक्ति का सम्मोहन शुरू हो जाता है और धीरे-धीरे अनुकूल परिणाम प्राप्त होने लगते है। मंत्र में आये अमुक शब्द के स्थान पर उस व्यक्ति का नाम लें, जिसका सम्मोहन करना हो।

## ।।आप भी अपने पूर्व जन्म को जानिये ना ।।

प्रत्येक व्यक्ति का यह जीवन पूर्व जीवन से जुड़ा हुआ है। अपने पूर्व जन्म के विषय में जानने की इच्छा प्रायः सभी को रहती है कि पूर्व जन्म में आप क्या थे, कौन थे, कंहा थे और आपने क्या-क्या कर्म किये ? इस सम्बन्ध में शोध कर्ताओं ने बहुत से अनुसंधान किये हैं, जिनका परिणाम बहुत ही रूचिकर और आश्चर्यचकित कर देने वाले निकले हैं ।

ऐसे बहुत से उदाहरण हम पत्रिकाओं, अखबारों आदि में पढ़ते रहते हैं, जिनमें पूर्व जन्म की घटनाओं का उल्लेख मिलता है। ईसाई और मुस्लिम मतानुसार पुनर्जन्म को मान्यता नहीं दी जाती है लेकिन भारत से लेकर विश्व के अनेकों स्थानों पर ऐसी घटनाएं घटित हुई हैं, जिनके कारण पूर्व जन्म का सिद्धान्त कसौटी पर खरा उतरता है।

अपने पूर्व जीवन को देखने के लिए, उसे पूर्णतया समझने के लिए यह साधना अत्यावश्यक है। इस साधना को करने से साधक की एकाग्र शक्ति एवं आत्म नियंत्रण शक्ति का विकास होता है उसके पूर्व जीवन के समस्त रहस्य

खुल जाते हैं, वह जान जाता है कि उसकी पत्नी उसके साथ क्यों है अथवा उसकी संतान उसके साथ क्यों है ? पूर्व जीवनों में उनके साथ उसके कैसे सम्बन्ध थे, इत्यादि इत्यादि।

इस उच्च्च कोटि की साधना को संजीवनी साधना कहा जाता है, जिसे कभी भी सम्पन्न किया जा सकता है। इसका विधान मैं यंहा लिख रहा हूॅ। सर्वप्रथम विनियोग करें-

विनियोगः- ॐ अस्य संजीवनी मंत्रस्य मतंग ऋषिः, अनुष्टुप छन्दः, मातंगी देवता सर्व पूर्व जीवन दर्शन सिद्धयर्थं जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः-

ॐ मतंग ऋषये नमः शिरसि ।

अनुष्टुप छंदसे नमः मुखे ।
मातंगी देवतायै नमः हृदये।
ह्रीं नमः नाभौ ।
विनियोगाय नमः सर्वांगे।

करन्यासः-

ॐ ह्रीं ऐं श्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः ।

नमो भगवति तर्जनीभ्यां नमः।
उच्छिष्ट चांडालि मध्यमाभ्यां नमः।
श्री मातंगेश्वरी अनामिकाभ्यां नमः।
पूर्व जीवन दर्शय कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
स्वाहा करतल-कर-पृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासः-

ॐ ह्रीं ऐं श्रीं हृदयाय नमः।

नमो भगवति शिरसे स्वाहा।
उच्छिष्ट चांडालि शिखायै वषट्।

श्री मातंगेश्वरी कवचाय हुं।
पूर्व जीवन दर्शय नेत्रत्रयाय वौषट्।
स्वाहा अस्त्राय फट्।
।। मंत्र।।

ॐ ह्रीं ऐं श्रीं नमो भगवति उच्छिष्ट चांडालि श्री मातंगेश्वरि पूर्व जीवन दर्शय स्वाहा ।।

विधानः- इस मंत्र का पांच लाख जप ३१ दिन में करने का विधान है। अनुष्ठान काल में साधक को ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए भूमि पर शयन करना चाहिए और केवल एक समय भोजन करना चाहिए। पाचं लाख की संख्या में मंत्र जप समाप्त होने पर २१०० गुलाब के फूलों से हवन करके ग्यारह कन्याओं को भोजन और वस्त्रादि से प्रसन्न करना चाहिए । मंत्र जप रूद्राक्ष अथवा संजीवनी माला से करना उचित रहता है।

यंहा यह भी उल्लेखनीय है कि मंत्र जप के लिए तत्पर होने से पूर्व साधक को शांत भाव में बैठकर मस्तिष्क को एकाग्र करना चाहिए, ताकि उसका अवचेतन मष्तिष्क कार्यशील हो सके, क्योंकि अवचेतन मस्तिष्क में ही पूर्व जीवन की घटनाओं का अंकन होता है।

इस साधना को करने के उपरान्त जब भी अपने पूर्व जीवन में झांकना हो तो उपर्युक्त मंत्र का एक माला जप करें और ध्यान लगायें तो पूर्व जीवन चलचित्र के समान आंतरिक चेतना में दिखायी देने लगता है।

..............................

## II शत्रु-विध्वंसिनी प्रयोग II

त्रिशरा देवी का प्रयोग शत्रुओं के नाश के लिए किया जाता है। भगवान शिव की ये शक्ति घोर रक्त अंगों वाली, तीन सिरों वाली, रौद्री, धूम्राक्षी, मेघों के समान रंग वाली तथा नीले अलंकारों से युक्त हैं। अपने हाथों में ये खडग, त्रिशूल, शूल, अभय मुद्रा (अपने भक्तों की रक्षा एवं उनकी निश्चिंतता के लिए) उत्तम एवं सुंदर अंगों वाली, त्रिजटा, भयंकर अग्नि युक्त हैं। ये नग्नावस्था में खुले बालों के साथ विहार करती हैं और अपने भक्तों को अभय दान देते हुए उनके शत्रुओं का विध्वंस करती हैं।

ऐसी भगवती त्रिशरा देवी के मंत्र को लिखने से पूर्व मैं उनके स्तोत्र का उल्लेख करूंगा जिसमें उनके बारह नामों का उल्लेख है। उनके इस स्तोत्र मात्र का पाठ करने से ही भक्त के समस्त संकटों का नाश हो जाता है और उसके शत्रु पराभव को प्राप्त होते हैं। भक्त को विजय की प्राप्ति होती है। यदि इस स्तोत्र का पाठ एक हजार की संख्या में मात्र तीन दिनों तक कर लिया जाये तो समस्त कार्य सिद्ध होते हैं। यदि पाठ के साथ-साथ गुग्गुल, लाल चंदन तथा सरसों को घी के साथ मिलाकर हवन किया जाये तो वाद-विवाद और संग्राम में विजय की प्राप्ति होती है।

## प्रयोग विधि

सर्वप्रथम मंत्र का विनियोग करें। इसके लिए अपने दायें हाथ में जल लेकर विनियोग पढ़ें :- ॐ अस्य श्री शत्रु विध्वंसिनी स्तोत्र मंत्रस्य, ज्वलत् पावकः ऋषिः, अनुष्टुप छंदः, श्री शत्रु विध्वंसिनी देवता, मम शत्रुं शीघ्रं विध्वंसनार्थे जपे विनियोगः।

इसके उपरान्त जल भूमि पर छोडकर ऋष्यादि न्यास करें-

ज्वलत् पावक ऋषये नमः शिरसि।
अनुष्टुप् छन्दसे नमः मुखे।

श्री शत्रु विध्वंसिनी देवतायै नमः हृदि।
श्री शत्रु विध्वंसिनी देवता प्रसादात् मम शत्रुं शीघ्रं विध्वंसनार्थे जपे विनियोगाय नमः सर्वांगे।

तदोपरान्त कर-न्यास सम्पन्न करें -

ॐ शत्रु विध्वंसिन्यै अंगुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ रौद्रायै तर्जनीभ्यां स्वाहा।

ॐ त्रिशिरसे मध्यमाभ्यां वषट्।

ॐरक्त लोचनायै अनामिकाभ्यां हुम्।

ॐ अग्निर्ज्वालायै कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्।

ॐ रौद्रमुख्यै करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्।

कर-न्यास पूर्ण करने के उपरान्त हृदयादिन्यास करें-

ॐ घोर दंष्ट्राय हृदयाय नमः ।

ॐ त्रिशूलिन्यै शिरसे स्वाहा ।

ॐ दिगम्बर्यै शिखायै वषट्।

ॐ मुक्त केश्यै कवचायै हुम् ।

ॐ रक्तपाण्डयै नेत्रत्रयाय वौषट् ।

ॐ महोदर्यै अस्त्राय फट्।

फट् का उच्चारण करते हुए बायें हाथ की हथेली पर दायें हाथ की पहली दोनों उगंलियों से तीन बार ताली बजायें तथा 'ॐ रौद्रमुख्यै नमः' बोलते हुए दशों दिशाओं में चुटकी बजाते हुए दिग्बन्धन करें । दिग्बंधन से सुरक्षा की जाती है।

इसके बाद भगवती का ध्यान करें, यथा-

रक्तांगी शिववाहनां त्रिशिरसां रौद्री महाभैरवीम् ।
धूम्राक्षीं भव नाशिनीं घन निभां नीलालंकार-कृताम्।।
खड्गं शूलं त्रिशूलं वराभययुतां ध्यात्वा कृतांगीं महा ।
सर्वांगी त्रिजटां महानलं निभां, ध्यायेत् पिनाकीं च ताम्।।

ध्यान करने के उपरान्त भगवती त्रिशरा का स्तोत्र पाठ करें-

ॐ शत्रु विध्वंसिनी रौद्री त्रिशिरा रक्तलोचना ।
अग्निर्ज्वाला रौद्रमुखी, घोर दष्ट्रां त्रिशूलिनी ।।
दिगम्बरी मुक्तकेशी, रक्त पाणिर्महोदरी ।
सर्वदा विप्लवे घोरे, शीघ्रं वश्यकरी द्विषाम् ।।

अब मंत्र जप करने से पूर्व उसका शापोद्धार करें । इसके लिए निम्नलिखित मंत्र की एक माला जप करें-

शापोद्धार मंत्रः- ॐश्रीं ह्लीं क्लीं क्रों ऐं लोभाय मोहाय उत्कीलाय स्वाहा।

इसके बाद शत्रुविध्वंसिनी मंत्र की दस माला जप करें -

शत्रुविध्वंसिनी मंत्रः- ॐ नमो भगवति चामुण्डे रक्त वाससे अप्रतिहत रूप पराक्रमे ! अमुकं वधाय विचेतसे स्वाहा ।(अमुकं के स्थान पर शत्रु का नाम लें)

इस मंत्र का तीन दिन तक एक हजार मंत्र जप करने का विधान है। इसके साथ-साथ मंत्र जप से पूर्व अथवा मंत्र जप के उपरान्त उपरोक्त बारह नाम वाले स्तोत्र का भी प्रत्येक दिन एक हजार की संख्या में पाठ किया जाना चाहिए। जब तीन दिनों तक नित्य प्रति एक हजार की संख्या में मंत्र जप एवं एक हजार की संख्या में स्तोत्र पाठ पूर्ण हो जाये तो उसके उपरान्त नीचे लिखे अग्नि मंत्र से एक हजार की संख्या में साधक को आहुतियां देनी चाहिए । अग्नि मंत्र इस प्रकार है-

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं शत्रु भस्मं कुरू कुरू ॐ हूॅ फट् स्वाहा।

हवन के लिए सामग्री - पीली सरसों, सरसों का तेल, नीम के पत्ते तथा गुग्गुल ।

निर्देश :- इस मंत्र का प्रयोग अपने शत्रुओं को अपने पक्ष में करने के लिए, दुरात्मा को सामान्य रूप से दंड देने के लिए, अथवा उसे स्थान छोडने के लिए ही करना चाहिए । ऐसे मंत्रों का प्रयोग मारण हेतु करने से स्वयं का ही नाश होता हैं। यदि कभी मन में मारण की भावना भी आये तो सर्वप्रथम अपने विशिष्ट शत्रुओं का मारण करना चाहिए, जो काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद आदि के रूप में आपके अपने भीतर बैठें है। जिस दिन ये आपके भीतर के शत्रु समाप्त हो जायेगें, उस दिन के बाद बाह्रय जगत में आपका कोई शत्रु होगा ही नहीं।

........................

## श्री नीलकंठ अघोरास्त्र

**भगवान** नीलकंठ के इस अघोरास्त्र का प्रयोग सर्वत्र सफलताओं और अन्त में उनके लोक में निवास करने के लिए किया

जाता है। इस अस्त्र का प्रयोग पापों के क्षय, लक्ष्मी की स्थिरता, आरोग्य, ज्वर निवारण, अपमृत्यु से मुक्ति, क्षय रोग, कुष्ठ रोग, भूत-प्रेतादि,से मुक्ति के लिए भी किया जाता है। प्रचण्ड से प्रचण्ड दुरात्मा का प्रभाव इसके पाठ से देखते ही देखते समाप्त हो जाता है।

इस नीलकण्ठ अघोरास्त्र का प्रतिदिन सात बार पाठ करने से यह शीघ्र ही सिद्ध हो जाता है। प्रेतात्मा से ग्रसित किसी भी व्यक्ति को ७ बार मोर के पंख से झाड़ने मात्र से प्रभावित व्यक्ति ठीक हो जाता है।

**विनियोगः-** ॐ अस्य श्री भगवान नीलकण्ठ सदा-शिव-स्तोत्र मंत्रस्य श्री ब्रह्मा ऋषिः, अनुष्ठुप छन्दः, श्री नीलकण्ठ सदाशिवो देवता, ब्रह्म बीजं, पार्वती शक्तिः, मम समस्त पाप क्षयार्थं क्षेम-स्थै-आर्यु-आरोग्य-अभिवृद्धयर्थं मोक्षादि-चतुर्वर्ग-साधनार्थं च श्री नीलकण्ठ-सदाशिव-प्रसाद-सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

**ऋष्यादि-न्यासः** - श्री ब्रह्मा ऋषये नमः शिरसि।
अनुष्टुप छन्दसे नमः मुखे ।
श्री नीलकण्ठ सदाशिव देवतायै नमः हृदि।
ब्रह्म बीजाय नमः लिंगे।
पार्वती शक्त्यै नमः नाभौ।
मम समस्त पाप क्षयार्थं क्षेम-स्थै-आर्यु-आरोग्य-अभिवृद्धयर्थं मोक्षादि-चतुर्वर्ग-साधनार्थं च श्री नीलकण्ठ-सदाशिव-प्रसाद-सिद्धयर्थे जपे विनियोगाय नमः सर्वांगे ।

## स्तोत्र

ॐ नमो नीलकण्ठाय, श्वेत-शरीराय, सर्पालंकार भूषिताय, भुजंग परिकराय, नागयज्ञोपवीताय, अनेक मृत्यु विनाशाय नमः। युग युगान्त काल प्रलय-प्रचंडाय,

प्रज्वाल-मुखाय नमः। दंष्ट्राकराल घोर रूपाय हूं हूं फट् स्वाहा। ज्वालामुखाय, मंत्र करालाय, प्रचण्डार्क सहस्त्रांशु चण्डाय नमः। कर्पूर मोद परिमलांगाय नमः। ॐ ईं ईं नील महानील वज्र वैलक्ष्य मणि माणिक्य मुकुट भूषणाय हन हन हन दहन दहनाय ह्रीं स्फुर स्फुर प्रस्फुर प्रस्फुर घोर घोर तनुरूप चट चट प्रचट प्रचट कह कह वम वम बंध बंध घातय घातय हुं फट् ॐ ह्रां ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं स्फुर अघोर रूपाय रथ रथ तंत्र तंत्र चट् चट् कह कह मद मद दहन दाहनाय ह्रीं स्फुर स्फुर प्रस्फुर प्रस्फुर घोर घोर तनुरूप चट चट प्रचट प्रचट कह कह वम वम बंध बंध घातय घातय हुं फट् जरा मरण भय हूं हूं फट् स्वाहा।

अनन्ताघोर ज्वर मरण भय क्षय कुष्ठ व्याधि विनाशाय, शाकिनी डाकिनी ब्रह्मराक्षस दैत्य दानव बन्धनाय, अपस्मार भूत बैताल डाकिनी शाकिनी सर्व ग्रह विनाशाय, मंत्र कोटि प्रकटाय पर विद्योच्छेदनाय, हूं हूं फट् स्वाहा। आत्म मंत्र सरंक्षणाय नमः ।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं नमो भूत डामरी ज्वाल वश भूतानां द्वादश भूतानां त्रयोदश षोडश प्रेतानां पंच दश डाकिनी शाकिनीनां हन हन। दहन दारनाथ! एकाहिक द्वयाहिक त्र्याहिक चातुर्थिक पंचाहिक व्याघ्र पादान्त वातादि वात सरिक कफ पित्तक काश श्वास श्लेष्मादिकं दह दह छिन्धि छिन्धि श्रीमहादेव निर्मित स्तंभन मोहन वश्याकर्षणोच्चाटन कीलना द्वेषण इति षट् कर्माणि वृत्य हूं हूं फट् स्वाहा।

वात-ज्वर मरण-भय छिन्न छिन्न नेह नेह भूतज्वर प्रेतज्वर पिशाचज्वर रात्रिज्वर शीतज्वर तापज्वर बालज्वर कुमारज्वर अमितज्वर दहनज्वर ब्रह्मज्वर विष्णुज्वर रूद्रज्वर मारीज्वर प्रवेशज्वर कामादि विषमज्वर मारी ज्वर प्रचण्ड घराय प्रमथेश्वर ! शीघ्रं हूं हूं फट् स्वाहा। ॐ नमो नीलकण्ठाय, दक्षज्वर ध्वंसनाय श्री नीलकण्ठाय नमः।

ॐॐॐॐॐॐॐॐॐ

## Kubera Money Mantra (God of Wealth)

Dedicated to Kakolee for requesting it. It is composed of bija mantras, rough meanings: Shreem for Lakshmi (love, beauty, health, prosperity), Hreem for Great Goddess/Sun (illumination/dispel illusion), kleem for Kama/Krishna (love and fulfiller of desires from material to moksha, where your intention is) and Vitteswaraay (Kubera) Lord Kuber (or Kubera or Kuvera) is believed to be the lord of riches and wealth in Hinduism. Kuber Sadhana is considered a great way of pleasing the lord to bestow one with wealth and fortune. Kuber is many a times called the treasurer of gods. If pleased with you the lord opens avenues of wealth and riches for believers. Lord Kuber is also believes to be the head of the Yakshas (savage beings). The Yakshas are both human and demon and are responsible for the security of the treasures hidden beneath the earth of the great mountain Himalayas. Kubera Yantra is used as a tool to attract the cosmic wealth energy, accumulation of riches, increase cash flow at home, etc. It opens up street for new sources of income. Worship of Kuber Yantra is also suggested for excellent growth in business, career and profession and increase in personal income and abundance. The specially of this Yantra is their No. 72 should come by winning the

Number from any side the joint on of 72 Total 9. For realization of Lord Kubera, massive monetary gain, wealth, fortune and all round success. I recommend at least one mala (108 reps) of this mantra each day. You can also chant his beej (seed/root) mantra "Dhham" (some use "Sam"). Recite it as much as you can till the problem is solved (like ajapa -ceaseless mental repetition throughout the day). http://www.thereligiousproducts.com/mantras.html
For worshiping him you have to sit facing North Director. You can use a Rudraksha mala as he is a follower of Shiva or a White Crystal Mala to chant his nama. Chanted by Kshitiji Tarey
comment
like?

Kubera Money Mantra (God of Wealth)
Dedicated to Kakolee for requesting it. It is composed of bija mantras, rough meanings: Shreem for Lakshmi (love, beauty, health, prosperity), Hreem for Great Goddess/Sun (illumination/dispel illusion), kleem for Kama/Krishna (love and fulfiller of desires from material to moksha, where your intention is) and Vitteswaraay (Kubera) Lord Kuber (or Kubera or Kuvera) is believed to be the lord of riches and wealth in Hinduism. Kuber Sadhana is considered a great way of pleasing the lord to bestow one with wealth and fortune. Kuber is many a times called the

treasurer of gods. If pleased with you the lord opens avenues of wealth and riches for believers. Lord Kuber is also believes to be the head of the Yakshas (savage beings). The Yakshas are both human and demon and are responsible for the security of the treasures hidden beneath the earth of the great mountain Himalayas. Kubera Yantra is used as a tool to attract the cosmic wealth energy, accumulation of riches, increase cash flow at home, etc. It opens up street for new sources of income. Worship of Kuber Yantra is also suggested for excellent growth in business, career and profession and increase in personal income and abundance. The specially of this Yantra is their No. 72 should come by winning the Number from any side the joint on of 72 Total 9. For realization of Lord Kubera, massive monetary gain, wealth, fortune and all round success. I recommend at least one mala (108 reps) of this mantra each day. You can also chant his beej (seed/root) mantra "Dhham" (some use "Sam"). Recite it as much as you can till the problem is solved (like ajapa -ceaseless mental repetition throughout the day). For worshiping him you have to sit facing North Direction. You can use a Rudraksha mala as he is a follower of Shiva or a White Crystal Mala to chant his nama.

$$$$$$$$$$$$$$$$$

# = चाक्षुषोपनिषद् =

इस चाक्षुषी विद्या के श्रद्धा पूर्वक पाठ करने से नेत्रों के समस्त रोग दूर हो जाते हैं। आंखों की ज्योति स्थिर बनी रहती है। जो व्यक्ति इस विद्या का पाठ नित्य प्रति करता है, उसके कुल में कोई अंधा नहीं होता है। पाठ करने के उपरान्त सूर्य देवता को गंध से युक्त जल से अर्घ्य देना चाहिए।

## पाठ

**विनियोगः- दाहिने हाथ में जल लेकर सबसे पहले विनियोग करें----**

**ओम अस्याश्चाक्षुषी-विद्याया अहिर्बुध्न्य ऋषिः, गायत्री छंदः, सूर्यो देवता, चक्षू-रोग-निवृत्तये विनियोगः।**

ओम चक्षुः चक्षुः चक्षुः तेजः स्थिरो भव। मां पाहि पाहि। त्वरितं चक्षू रोगान् शमय शमय। मम जातरूपं तेजो दर्शय-दर्शय। यथा अहं अन्धो न स्यां तथा कल्पय-कल्पय। कल्याणं कुरू-कुरू। यानि मम पूर्व-जन्म-उपार्जितानि चक्षुः प्रतिरोधक दुष्कृतानि सर्वाणि निर्मूलय-निर्मूल्य ।

ओम नमः चक्षुस्तेजोदात्रे दिव्याय भास्कराय। ओम नमः करूणा-कराय-अमृताय। ओम नमः सूर्याय। ओम नमो भगवते सूर्याय-अक्षि-तेजसे नमः। खेचराय नमः।महते नमः। रजसे नमः। तमसे नमः। असतो मा सद् गमय।

तमसो मा ज्योति-र्गमय। मृत्योर्मा अमृतं गमय। उष्णो भगवान्-शुचि-रूपः । हंसो भगवान-शुचिर-प्रतिरूपः।

य इमां चाक्षुष्मति विद्यां ब्राह्मणो नित्यमधीते न तस्याक्षिरोगो भवति। न तस्य कुले अन्धो भवति। अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यग् ग्राहयित्वा विद्या सिद्धिर्भवति।ओम नमो भगवते आदित्याय अहोवाहिनी अहोवाहिनी स्वाहा।

...............

## How To Worship Maa Baglamukhi ?
## (मां बगलामुखी पूजा विधि)

किसी भी साधना को प्रारम्भ करने से पहले गुरू का चयन करना परम आवश्यक है। इसलिए सर्वप्रथम अपने गुरू का चयन करें और उनसे दीक्षा लेकर उनकी आज्ञानुसार ही साधना सम्पन्न करें। बिना गुरू के पुस्तकों से पढ़कर कभी भी साधना एवं मन्त्र-जप नहीं करना चाहिए अन्यथा लाभ के स्थान पर हानि भी हो सकती है। किसी भी व्यक्ति को अपने गुरू, अपने मन्त्र एवं अपने इष्ट-देवता पर पूर्ण विश्वास रखते हुए समर्पण भाव से साधना सम्पन्न करनी चाहिए ।

## भगवती बगलामुखी (पीताम्बरा) साधना-विधि

भगवती की साधना करने का विशिष्ट समय रात्रिकाल माना गया है इसलिए यदि हो सके तो रात्रि ६ बजे से २ बजे के बीच ही अपनी साधना करनी चाहिए । लेकिन यदि ऐसा सम्भव न हो सके तो अपने समय की स्थिति के अनुसार समय निर्धारण कर लेना चाहिए, क्योंकि कुछ ना करने से अच्छा कुछ कर लेना है।

यह साधना घर में रहकर ही सम्पन्न की जा सकती है। साधना का स्थान शान्त एवं मनोरम होना चाहिए । साधना में बैठने से पूर्व स्नान कर लें यदि सम्भव ना हो तो हाथ-पैर धो सकते हैं। इस प्रकार बाह्‌य रूप से अपने आप को पवित्र कर लें। फिर पीले रंग का आसन बिछायें और स्वयं भी पीले वस्त्र धारण करें ।

इसके उपरान्त आसन पर बैठ जायें और मानसिक शुद्धि के लिए निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करें। अपने शरीर पर थोड़ा सा जल छिड़कें-

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ।।
अतिनील घनश्यामं नलिनायतलोचनम् ।
स्मरामि पुण्डरीकाक्षं तेन स्नातो भवाम्यहम् ।।

इसके पश्चात आचमन करें ।

सीधे हाथ में थोड़ा सा जल लें एवं यह मन्त्र पढ़ते हुए पी जायें

ॐ केशवाय नमः ।

पुनः सीधे हाथ में थोड़ा सा जल लें एवं यह मन्त्र पढ़ते हुए पी जायें

ॐ नाराणाय नमः ।

पुनः सीधे हाथ में थोड़ा सा जल लें एवं यह मन्त्र पढ़ते हुए पी जायें
ॐ माधवाय नमः ।
यह मन्त्र पढ़ते हुए हाथ धो लें ।
ॐ हृषीकेशाय नमः ।

इसके पश्चात आसन के नीचे हल्दी से एक त्रिकोण बनायें एवं यह मन्त्र पढ़ते हुए प्रणाम करें-
ॐ कामरूपाय नमः।

इसके पश्चात अपने आसन पर थोड़ा सा जल छिड़कें और निम्नलिखित मन्त्र पढ़ें-
ॐ पृथ्वि ! त्वया धृता लोका देवि ! त्वं विष्णुना धृता ।
त्वं च धारय मां नित्यं ! पवित्रं कुरू चासनम् ।।
यह मन्त्र पढ़ते हुए आसन को प्रणाम करें-
क्लीं आधार शक्त्यै कमलासनाय नमः।

इसके बाद मूल मंत्र से १:८:४ के अनुपात से अनुलोम-विलोम प्राणायाम करें। अर्थात् एक मूल मंत्र से पूरक, आठ मंत्रों से कुम्भक तथा चार मंत्रों से रेचक करें। यह क्रिया जितनी अधिक से अधिक की जा सके, उतना ही अच्छा है।

अब अपने गुरू का ध्यान करते हुए उनकी वन्दना करें-
अखण्ड मण्डलाकारं व्यापतं येन चराचरम् ।
तत पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरूवे नमः ।।
अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानांजन शलाक्या ।
चक्षुरून्मीलितं येन तस्मै श्री गुरूवे नमः ।।
देवतायाः दर्शनं च करूणा वरूणालयं ।
सर्व सिद्धि प्रदातारं श्री गुरूं प्रणमाम्यहम् ।।
वराभय कर नित्यं श्वेत पद्म निवासिनं ।

महाभय निहन्तारं गुरू देवं नमाम्यहम् ।।

इसके उपरांत श्रीनाथ, गणपति, भैरव आदि का ध्यान करके उन्हें नमन करें, क्योंकि इनकी कृपा के अभाव में कोई भी साधना पूर्ण नहीं होती है-

श्री नाथादि गुरू त्रयं गणपतिं पीठ त्रयं भैरवं,
सिद्धौघं बटुक त्रयं पदयुगं दूतिक्रमं मण्डलम्।
वीरान्द्वयष्ट चतुष्कषष्टिनवकं वीरावली पंचकम्,
श्रीमन्मालिनि मंत्रराज सहितं वन्दे गुरोर्मण्डलम्।।
वन्दे गुरूपद-द्वन्द्ववांग-मन-सगोचरम्,
रक्त शुक्ल-प्रभा-मिश्रं-तर्क्यं त्रैपुरं महः !

गुरूदेव का ध्यान करने के उपरान्त निम्नांकित मंत्रों से देवी-देवताओं को नमस्कार करें-

ॐ श्री गुरूवे नमः ।

ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः ।

ॐ वास्तु पुरूषाय नमः ।

ॐ विघ्न राजाय नमः ।

ॐ दुर्गाय नमः ।

ॐ विघ्न राजाय नमः ।

ॐ शम्भु शिवाय नमः ।

ॐ भैरवाय नमः ।

ॐ बटुकायै नमः ।

ॐ ब्रह्मायै नमः ।

ॐ नैर्ऋतियै नमः ।

ॐ चक्रपाणायै नमः ।

ॐ विघ्न नाथायै नमः ।

ॐ ऋष्यै नमः ।

ॐ देवतायै नमः ।

ॐ वेद शास्त्रायै नमः ।

ॐ वेदार्थाय नमः ।

ॐ पुराणायै नमः ।

ॐ ब्राह्मणायै नमः ।

ॐ योगिन्यौ नमः ।

ॐ दिक्पालायै नमः ।

ॐ सिद्धपीठायै नमः ।

ॐ तीर्थायै नमः ।

ॐ मंत्र-तंत्र-यंत्रायै नमः ।

ॐ मातृकायै नमः ।

ॐ पंचभूतायै नमः ।

ॐ महाभूतायै नमः ।

ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः ।

ॐ सर्वाभ्यो देवीभ्यो नमः ।

ॐ सर्वेभ्यो ऋषिभ्यो नमः ।

इसके पश्चात भैरव जी से भगवती की आराधना करने की अनुमति लें

तीक्ष्णदन्त महाकाय कल्पान्तदहनोपम ।
भैरवाय नमस्तुभ्यम् अनुज्ञां दातुमर्हसि ।।

अब दस बार मुखशोधन मंत्र ऐं ह्रीं ऐं का जाप करें
इसके पश्चात बगलामुखी कुल्लुका ॐ ह्रूं क्ष्रौं का दस बार सिर पर जाप करें ।

इसके पश्चात मां का ध्यान करें

ध्यान

वादी मूकति रंकति क्षितिपतिर्वैश्वानरः शीतति।
क्रोधी शान्तति दुर्जनः सुजनति क्षिप्रानुगः खंजति।।
गर्वी खवर्ति सर्व विच्च जडति त्वद्यन्त्राणा यंत्रितः।
श्रीनित्ये बगलामुखि! प्रतिदिनं कल्याणि! तुभ्यं नमः।।

अब उनका आवाहन करें और उन्हे आसन प्रदान करें । इसके पश्चात मां का पंचोपचार अथवा शोडषोपचार पूजन करें। यह पूजन मानसिक रूप से भी किया जा सकता है । अब कवच का पाठ करें

# BAGLAMUKHI KAVACH

ध्यान

सौवर्णासनसंस्थितां त्रिनयनां पीताशुकोल्लासिनीम् ।
हेमाभांगरुचिं शशांकमुकुटां सच्चम्पकस्त्रग्युताम् ॥
हस्तैर्मुदगर पाशवज्ररसनाः संबिभ्रतीं भूषणैः।
व्याप्तागीं बगलामुखीं त्रिजगतां संस्तम्भिनीं चिन्तयेत्॥

विनियोगः

ॐ अस्य श्रीबगलामुखीब्रह्मास्त्रमन्त्रकवचस्य भैरव ऋषिः, विराट् छन्दः श्रीबगलामुखी देवता, क्लीं बीजम्, ऐं शक्तिः, श्रीं कीलकं, मम परस्य च मनोभिलाषितेष्टकार्यसिद्धये विनियोगः ।

न्यास

शिरसि भैरव ऋषये नमः
मुखे विराट छन्दसे नमः
हृदि बगलामुखीदेवतायै नमः
गुह्ये क्लीं बीजाय नमः
पादयो ऐं शक्तये नमः
सर्वांगे श्रीं कीलकाय नमः
ॐ ह्लां अंगुष्ठाभ्यां नमः
ॐ ह्लीं तर्जनीभ्यां नमः
ॐ ह्लूं मध्यमाभ्यां नमः
ॐ ह्लैं अनामिकाभ्यां नमः
ॐ ह्लौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः
ॐ ह्लः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः
ॐ ह्लां हृदयाय नमः
ॐ ह्लीं शिरसे स्वाहा
ॐ ह्लूं शिखायै वषट्

ॐ ह्लैं कवचाय हुम
ॐ ह्लौं नेत्रत्रयाय वौषट्
ॐ ह्लः अस्त्राय  फट्

मन्त्रोद्धारः

ॐ ह्लीं ऐं श्रीं क्लीं श्रीबगलानने मम रिपून् नाशय नाशय मामैश्वर्याणि देहि देहि, शीघ्रं मनोवाञ्छितं कार्यं साधय साधय ह्लीं स्वाहा।

कवच

शिरो मे पातु ॐ  ह्लीं ऐं श्रीं क्लीं पातु ललाटकम् ।
सम्बोधनपदं पातु नेत्रे श्री बगलानने ।।1।।
श्रुतौ मम् रिपुं  पातु नासिकां नाशयद्वयम् ।
पातु गण्डौ सदा मामैश्वर्याण्यन्तं तु मस्तकम् ।।2।।
देहि द्वन्द्वं सदा जिह्वां पातु शीघ्रं वचो मम ।
कण्ठदेशं मनः पातु वाञ्छितं बाहुमूलकम् ।।3।।
कार्यं साधयद्वन्द्वं तु करौ पातु सदा मम ।
मायायुक्ता यथा स्वाहा हृदयं पातु सर्वदा ।।4।।
अष्टाधिकचत्वारिंशदण्डाढया बगलामुखी ।
रक्षां करोतु सर्वत्र गृहेऽरण्ये सदा मम ।।5।।
ब्रह्मास्त्राख्यो मनुः पातु सर्वांगे सर्वसन्धिषु ।
मन्त्रराजः सदा रक्षां करोतु मम सर्वदा ।।6।।
ॐ ह्लीं पातु नाभिदेशं कटिं मे बगलाऽवतु ।
मुखिवर्णद्वयं पातु लिगं मे मुष्कयुग्मकम् ।।7।।
जानुनी सर्वदुष्टानां पातु मे वर्णपञ्चकम् ।
वाचं मुखं तथा पादं षड्वर्णाः परमेश्वरी ।।8।।
जंघायुग्मे सदापातु बगला रिपुमोहिनी ।

स्तम्भयेति पदं पृष्ठं पातु वर्णत्रय मम ।।9।।
जिह्वावर्णद्वयं पातु गुल्फौ मे कीलयेति च ।
पादोर्ध्वं सर्वदा पातु बुद्धिं पादतले मम ।।10।।
विनाशयपदं पातु पादांगुल्योनखानि मे ।
ह्लीं बीजं सर्वदा पातु बुद्धिन्द्रियवचांसि मे ।।11।।
सर्वांगं प्रणवः पातु स्वाहा रोमाणि मेऽवतु ।
ब्राह्मी पूर्वदले पातु चाग्नेय्यां विष्णुवल्लभा ।।12।।
माहेशी दक्षिणे पातु चामुण्डा राक्षसेऽवतु ।
कौमारी पश्चिमे पातु वायव्ये चापराजिता ।।13।।
वाराही च उत्तरे पातु नारसिंही शिवेऽवतु ।
ऊर्ध्वं पातु महालक्ष्मीः पाताले शारदाऽवतु ।।14।।
इत्यष्टौ शक्तयः पान्तु सायुधाश्च सवाहनाः ।
राजद्वारे महादुर्गे पातु मां गणनायकः ।।15।।
श्मशाने जलमध्ये च भैरवश्च सदाऽवतु ।
द्विभुजा रक्तवसनाः सर्वाभरणभूषिताः ।।16।।
योगिन्यः सर्वदा पान्तु महारण्ये सदा मम ।

फलश्रुति

इति ते कथितं देवि कवचं परमाद्भुतम् ।।17।।
श्रीविश्वविजयं नाम कीर्तिश्रीविजयप्रदाम् ।
अपुत्रो लभते पुत्रं धीरं शूरं शतायुषम् ।।18।।
निर्धनो धनमाप्नोति कवचास्यास्य पाठतः ।
जपित्वा मन्त्रराजं तु ध्यात्वा श्री बगलामुखीम् ।।19।।
पठेदिदं हि कवचं निशायां नियमात् तु यः ।
यद् यत् कामयते कामं साध्यासाध्ये महीतले ।।20।।
तत् तत् काममवाप्नोति सप्तरात्रेण शंकरि ।
गुरुं ध्यात्वा सुरां पीत्वा रात्रो शक्तिसमन्वितः ।।21।।

कवचं यः पठेद् देवि तस्यासाध्यं न किञ्चन ।
यं ध्यात्वा प्रजपेन्मन्त्रं सहस्त्रं कवचं पठेत् ।।22।।
त्रिरात्रेण वशं याति मृत्योः तन्नात्र संशयः ।
लिखित्वा प्रतिमां शत्रोः सतालेन हरिद्रया ।।23।।
लिखित्वा हृदि तन्नाम तं ध्यात्वा प्रजपेन् मनुम् ।
एकविंशददिनं यावत् प्रत्यहं च सहस्त्रकम् ।।24।।
जपत्वा पठेत् तु कवचं चतुर्विंशतिवारकम्।
संस्तम्भं जायते शत्रोर्नात्र कार्या विचारणा।।25।।
विवादे विजयं तस्य संग्रामे जयमाप्नुयात् ।
श्मशाने च भयं नास्ति कवचस्य प्रभावतः ।।26।।
नवनीतं चाभिमन्त्रय स्त्रीणां दद्यान्महेश्वरि ।
वन्ध्यायां जायते पुत्रो विद्याबलसमन्वितः ।।27।।
श्मशानांगारमादाय भौमे रात्रौ शनावथ ।
पादोदकेन स्पृष्ट्वा च लिखेत् लोहशलाकया ।।28।।
भूमौ शत्रोः स्वरुपं च हृदि नाम समालिखेत् ।
हस्तं तद्धृदये दत्वा कवचं तिथिवारकम् ।।29।।
ध्यात्वा जपेन् मन्त्रराजं नवरात्रं प्रयत्नतः ।
म्रियते ज्वरदाहेन दशमेंऽहनि न संशयः ।।30।।
भूर्जपत्रेष्विदं स्तोत्रमष्टगन्धेन संलिखेत् ।
धारयेद् दक्षिणे बाहौ नारी वामभुजे तथा ।।31।।
संग्रामे जयमप्नोति नारी पुत्रवती भवेत् ।
सम्पूज्य कवचं नित्यं पूजायाः फलमालभेत् ।।32।।
ब्रह्मास्त्रादीनि शस्त्राणि नैव कृन्तन्ति तं जनम् ।
वृहस्पतिसमो वापि विभवे धनदोपमः ।।33।।
कामतुल्यश्च नारीणां शत्रूणां च यमोपमः ।
कवितालहरी तस्य भवेद् गंगाप्रवाहवत् ।।34।।

गद्यपद्यमयी वाणी भवेद् देवी प्रसादतः ।
एकादशशतं यावत् पुरश्चरणमुच्यते ।।35।।
पुरश्चर्याविहीनं तु न चेदं फलदायकम् ।
न देयं परशिष्येभ्यो दुष्टेभ्यश्च विशेषतः ।।36।।
देयं शिष्याय भक्ताय पञ्चत्वं चान्यथाऽऽप्नुयात् ।
इदं कवचमज्ञात्वा भजेद् यो बगलामुखीम् ।।37।।
शतकोटिं जपित्वा तु तस्य सिद्धिर्न जायते ।
दाराढयो मनुजोऽस्य लक्षजपतः प्राप्नोति सिद्धिं परां ।।38।।
विद्यां श्रीविजयं तथा सुनियतं धीरं च वीरं वरम् ।
ब्रह्मास्त्राख्यमनुं विलिख्य नितरां भूर्जेऽष्टगन्धेन वै ।।39।।
धृत्वा राजपुरं व्रजन्ति खलु ते दासोऽस्ति तेषां नृपः ।
इति श्रीविश्वसारोद्धारतन्त्रे पार्वतीश्वरसंवादे
बगलामुखी कवचम्
सम्पूर्णम्

यहां तक की पूजा भगवती के सभी मंत्रो के लिए समान होती है । इसके पश्चात भिन्न भिन्न मंत्रो की अलग अलग विधियां है ।

## Ma Baglamukhi Beej Mantra Sadhana Vidhi

## **माँ बगलामुखी बीज मंत्र (एकाक्षरी मंत्र) साधना विधि**

**मां बगलामुखी के प्रत्येक साधक को अपनी साधना बीज मन्त्र से ही प्रारम्भ करनी चाहिये । सर्वप्रथम अपने गुरू देव से इस मन्त्र की दीक्षा**

प्राप्त करनी चाहिये। उसके उपरान्त साधना सम्बन्धी सभी नियमो का पालन करते हुए इस मन्त्र का हल्दी की माला से एक लक्ष जाप करना चाहिये । जाप के पश्चात दस हजार मन्त्रो से हवन एक हजार मन्त्रो से तर्पण १०० मन्त्रो से मार्जन तथा अन्त में ग्यारह ब्राहमणो को भोजन कराना चाहिये। इस प्रकार एक लाख का पुरश्चरण पूर्ण हो जाता है। इस प्रकार गुरू आदेशानुसार अपना अनुष्ठान सम्पन्न करना चाहिये। मा पीताम्बरा की साधना में एक बात ध्यान रखनी बहुत ही आवश्यक है कि मां पीताम्बरा की पूजा प्रारम्भ करने से पहले भैरव जी से आज्ञा अवश्य लेनी चाहिये एवं मां पीताम्बरा की कुल्लुका **ॐ हूं क्ष्रौं** का सिर पर दस बार जाप तथा ऐं ह्रीं ऐं का दस बार जाप अवश्य करना चाहिए। पूजा समाप्त करने के बाद मृत्युजंय मन्त्र हौं जूं सः का जाप अवश्य करना चाहिये। प्रत्येक दिन जाप आरम्भ करने से पहले विनियोग करें एवं उसके पश्चात न्यास ध्यान एवं कवच करने के पश्चात ही मन्त्र जाप प्रारम्भ करें ।

मन्त्रः- ह्ल्रीं ;भ्सतममउ्ध

दाहिने हाथ में जल लेकर विनियोग करें।

विनियोग

ॐ अस्य एकाक्षरी बगला मंत्रस्य ब्रह्म ऋषिः, गायत्री छन्दः, बगलामुखी देवताः, लं बीजं, ह्रीं शक्ति, ईं कीलकं, मम सर्वार्थ सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः-

ॐ ब्रह्म ऋषये नमः शिरसि।
गायत्री छंदसे नमः मुखे।
श्री बगलामुखी देवतायै नमः हृदि।
लं बीजाय नमः गुह्ये।
ह्रीं शक्तये नमः पादयोः।
ईं कीलकाय नमः सर्वांगे।
श्री बगलामुखी देवताम्बा प्रीत्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अंजलौ।

षडंगन्यासः-
ॐ ह्लां हृदयाय नमः।
ॐ ह्लीं शिरसे स्वाहा।
ॐ ह्लूं शिखाय वषट्।
ॐ ह्लैं कवचाय हूं।
ॐ ह्लौं नेत्र त्रयाय वौषट्।
ॐ ह्लः अस्त्राय फट्।
करन्यासः-
ॐ ह्लां अंगुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ ह्लीं तर्जनीभ्यां स्वाहा।
ॐ ह्लूं मध्यमाभ्यां वषट्।
ॐ ह्लैं अनामिकाभ्यां हूं।
ॐ ह्लौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्।
ॐ ह्लः करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्।

अब ह्लीं मंत्र का संकल्प के अनुसार जप करना चाहिए ।
जप के पश्चात मृत्युजंय मंत्र हौं जूं सः का जाप करना चाहिए ।

## Ma Baglamukhi Mool Mantra S adhana Vidhi
### मां बगलामुखी मूल मंत्र (३६ अक्षरी मन्त्र) साधना विधि

ॐ मध्ये सुधाब्धि-मणि-मण्डप-रत्न-वेद्यां।
सिंहासनो-परिगतां परिपीत वर्णाम्।।
पीताम्बरा-भरण-माल्य-विभूषितांगीं।
देवीं भजामि धृत मुद्गर वैरि जिह्वाम् ।।
जिह्वाग्रमादाय करेण देवीं ! वामेन् शत्रून् परिपीडयंतीम्
गदाभिघातेन् च दक्षिणेन्, पीताम्बराढ्यां द्विभुजां नमामि ।।

मन्त्रोद्धार
प्रणवं स्थिरमायां च ततश्च बगलामुखीम् ।
तदन्ते सर्व दुष्टानां ततो वाचं मुखं पदं ।।
स्तम्भयेति ततो जिहवां कीलयेति पद्वयम् ।
बुद्धिं नाशय पश्चात्तु स्थिरमायां समालिखेत् ।।
लिखेच्च पुनरोंकार स्वाहेति पदमन्ततः ।
षटत्रिंशदक्षरी विद्या सर्वसम्पतकरी मता ।

विनियोग

सीधे हाथ में जल लेकर मंत्र पढें

ॐ अस्य श्री बगलामुखी मन्त्रस्य नारदऋषि त्रिष्टुप छन्दः बगलामुखी देवता, ह्लीं बीजम् स्वाहा शक्तिः ममाभिष्ट सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास

नारद ऋषये नमः शिरसि। (सिर पर दाहिने हाथ से छुएं )

त्रिष्टुप छन्दसे नमः मुखे। ( मुंह को छुएं )

बगलामुखी देवतायै नमः हृदि। ( हृदय को छुएं )

ह्लीं बीजाय नमः गुह्ये। (गुह्यांग पर स्पर्श करें )

स्वाहा शक्तये नमः पादयो। (पैरो को स्पर्श करें )

करन्यास

ॐ ह्लीं अंगुष्ठाभ्यां नमः । (दोनो हाथो के अंगुठो को मिलायें )

बगलामुखी तर्जनीभ्यां स्वाहा। (दोनो हाथो की प्रथम अंगुली को मिलायें )

सर्व दुष्टानां मध्यमाभ्यां वषट् । (दोनो हाथो की मध्यमा अंगुली को मिलायें )

वाचं मुखं पदं स्तम्भय अनामिकाभ्यां हुम् । (दोनो हाथो की अनामिका अंगुली को मिलायें )

जिहवां कीलय कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् । (दोनो हाथो की कनिष्ठिका अंगुली को मिलायें )

बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा। ( दोनों हथेलियों के आगे व पीछे के भागों का स्पर्श करें )

## हृदयायदि न्यास

ॐ ह्लीं हृदयाय नमः। ( हृदय को दाहिने हाथ से स्पर्श करें )
बगलामुखी शिरसे स्वाहा। ( सिर का स्पर्श करें )
सर्व दुष्टानां शिखायै वषट्। ( शिखा का स्पर्श करें )
वाचं मुखं पदं स्तम्भय कवचाय हुम्। ( दायें हाथ से बायें कन्धें को एवं बायें हाथ से दायें कन्धें को एक साथ स्पर्श करें )
जिहवां कीलय् नेत्र त्रयाय वौषट। ( तीनों नेत्रो का स्पर्श करें )
बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा अस्त्राय फट् ( सिर के पीछे से तीन बार चुटकी बजाते हुये घड़ी की दिशा मे हाथ आगे लेकर आयें उसके बाद तर्जनी व मध्यमा से तीन बार ताली बजायें )

## बगलामुखी मूल मंत्र (Baglamukhi Mool Mantra)

**ॐ ह्ल्रीं बगलामुखि सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुंध्दिं विनाशय ह्ल्रीं ॐ स्वाहा।**

OM HLREEM BAGALAMUKHI SARVA DUSHTANAM VACHAM MUKHAM PADAM STAMBHAYA JIVHAM KEELAYA BUDDHIM VINASHAYA HLREEM OM SWAHA

**For Pronounciation of mantra visit**
**http://www.youtube.com/watch?v=Fwekx1hDarA**

Shri Yogeshwaranand Ji
+919917325788, +919675778193
shaktisadhna@yahoo.com
www.anusthanokarehasya.com
www.baglamukhi.info

**My dear readers! Very soon I am going to start an E-mail based monthly magazine related to tantras, mantras and yantras including practical uses for human welfare. I request you to appreciate me, so that I can change my dreams into reality regarding the service of humanity through blessings of our saints and through the grace of Ma Pitambara. Please make registered to yourself and your friends. For registration email me at shaktisadhna@yahoo.com. Thanks**

**For Purchasing all the books written By Shri Yogeshwaranand Ji Please Contact 9410030994**

Some Of the Books Written By Shri Yogeshwarnand Ji

1. Baglamukhi Sadhna Aur Siddhi

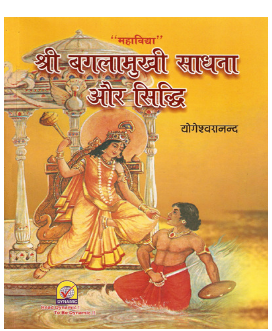

**2.** Mantra Sadhna

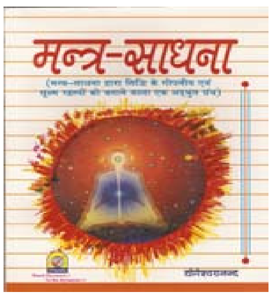


**3.** Shodashi Mahavidya